श्री बृहत् चारित्रशुद्धि विधान

रचयित्री

गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण

प्रकाशक

अंतर्मना धार्मिक एवं पारमार्थिक न्यास (रजि.)

पावन प्रसंग

तपस्वी सम्राट आचार्य श्री 108 सन्मतिसागरजी महाराज के 87 वें जन्म जयंती के अवसर पर

कृति	:	**बृहत् चारित्रशुद्धि विधान**
आशीषानुकम्पा	:	प.पू. मासोपवासी तपस्वी सम्राट **आचार्य श्री सन्मतिसागरजी महाराज** स्थविराचार्य-अन्न एवं षड्रसत्यागी **प. पू. आचार्य श्री संभवसागरजी महाराज** प. पू. पुष्पगिरि तीर्थप्रणेता **आचार्य श्री पुष्पदन्तसागरजी महाराज**
शुभाशीर्वाद	:	साधना महोदधि उभयमासोपवासी उत्कृष्ट मौन सिंहनिष्क्रीडित व्रत साधक **अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागरजी महाराज**
मार्गदर्शन	:	**सौम्यमूर्ति मुनि श्री पीयूषसागरजी महाराज**
रचयित्री	:	**गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण**
संयोजन	:	**बाल ब्र. तरुण भैयाजी**
संस्करण	:	जनवरी, 2026
आवृत्ति	:	3000
प्राप्ति स्थान	:	डॉ. संजय जी, इंदौर - 9425076760 अंतर्मना संघ - 9685661008
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स भोपाल (मध्यप्रदेश)

उपवास के दिन ज्ञान एवं ध्यान की साधना के साथ समय यापन करें तथा निरंतर परिणामों में शुद्धि बनाये रखें। राग-द्वेष का विसर्जन कर आत्मशुद्धि की भावना को समुन्नत करें।

वर्तमान में आचार में शिथिलता के निग्रह में बृहत् चारित्रशुद्धि व्रत की महती भूमिका है। उन्हीं के परिपालन से संस्कारों का बीज वपन होता है तथा यही संस्कार आत्मकल्याण में विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। खान-पान में भक्ष्य-अभक्ष्य का विवेक रखें तथा सदाचरण से अपने जीवन को पतित से पावन बनायें।

आज व्रत एवं उपवास की महत्ता को प्रबुद्ध जन स्वीकार कर रहे हैं। बृहत् चारित्रशुद्धि व्रत विधान के अंत में लिखा है –

त्रयोदशविधस्यैव चारित्रस्य विशुद्धये ।
विधौ चारित्र शुद्धौ स्युरूपवासाः प्रकीर्तिताः ॥

तेरह प्रकार के चारित्र का शुद्धि के लिए उपवासों के परिपालन का विधान निरुपित है। यह विधान प्रत्येक मानव के लिए कल्याण पथ पर अग्रसर होने के लिए विधि का वर्णन करता है। हमें विधिपूर्वक उसका पालन करने हेतु सतत् प्रयत्न करना चाहिए तभी हम अपनी आत्मा को प्रभावित करने की दिशा में प्रस्थान कर सकते हैं। पुरुषार्थसिद्ध्युपाय में लिखा है–

आत्मा प्रभावनीयो रत्नत्रय तेजसा सततमेव।
दानतपो जिनपूजा विद्यातिशयैश्च जिनधर्मः ॥

मूलाचार में लिखा में लिखा है–

जम्मालीणा जीवा तरंति संसारसायरमणंतं।
तं सव्वजीवसरणं णंददु जिणसासणं सुइरं ॥

जिसका आश्रय लेकर जीव अनन्त संसार-समुद्र को पार कर लेते हैं, सभी जीवों का शरणभूत वह जिनशासन चिरकाल तक वृद्धिंगत होवे। सभी का जीवन मंगलमय बने तथा इस विधान की विधि को अपनाकर साधना के पथ पर आरुढ़ हों, यही मंगल भावना है।

॥ णमो सिद्धाणं ॥

अंतर्मना आचार्य प्रसन्नसागर

बृहत् चारित्र शुद्धि विधान चारित्र शुद्धि व्रत की परिपालना

तीर्थङ्कर भगवन्तों की दिव्यध्वनि में श्रमण एवं श्रावक के धर्माचरण का उपदेश मिलता है। चारों अनुयोग दिव्यध्वनि से निःसृत है। जिनके माध्यम से सम्यक् जीवनयात्रा को दिशाबोध मिलता है। इस धर्मयात्रा में संसार, शरीर एवं भोगों से परे संयम एवं तपश्चरण मुख्य आधार होता है। संयम साधना की श्रेष्ठतम सौगात अर्थात् मोक्षमार्ग केवल मानव पर्याय को ही मिली है।

"जिस बिना नहीं जिनराज सीझे, तू रुल्यो जगकीच में"

बिना संयम धारण किए तीर्थङ्कर भगवान् को भी मोक्ष सम्भव नहीं है फिर हमें कैसे मिल सकता है।

आचार्य समन्तभद्र रत्नकरण्डक श्रावकाचार में उल्लेख करते हैं –

मोह - तिमिरापहरणे, दर्शन-लाभादवाप्त - संज्ञानः।
रागद्वेष - निवृत्यै, चरणं प्रतिपद्यते साधुः ॥१॥

मोहान्धकार के दूर होने से सम्यग्दर्शन एवं सम्यग्ज्ञान प्राप्त करके भव्य जीव रागद्वेष की निवृत्ति के लिए चारित्र को धारण करता है। इस प्रकार साधु सम्यक्चारित्र को धारण करते हैं।

व्रतों के माध्यम से संसारी जीवों को सुख का मार्ग प्रशस्त होता है, जीव महाव्रत/देशव्रत धारण कर आत्मकल्याण करते हैं। जो असमर्थ, दीन दुःखी, हीन भाग्य वाले व्यक्ति महाव्रत या देशव्रत धारण नहीं कर सकते, वे सामान्य व्रताचरण द्वारा अपना कल्याण करते हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र तत्त्वार्थसार में लिखते हैं –

अनगारस्तथागारी स द्विधा परिकथ्यते।
महाव्रतोऽनगारः स्यादगारी स्यादणुव्रतः ॥४/७९॥

अनगार और आगारी के भेद से व्रती दो प्रकार के होते हैं। महाव्रती अनगार (मुनि) और अणुव्रत के धारी आगारी (श्रावक) कहलाते हैं।

शक्त्यनुसार श्रावक धर्म तीन प्रकार का है –

पाक्षिक, नैष्ठिक एवं साधक / सामान्य श्रावक अष्ट मूलगुणों का पालन करते हुए गृहस्थ धर्म का पालन करता है। नैष्ठिक श्रावक प्रतिमा-व्रतों का पालन करता है तथा साधक समाधिमरण की भावना से गृह त्याग कर इच्छाओं का निरोध करते हुए व्रत अङ्गीकार करता है।

इस प्रकार श्रावक अपने आत्मकल्याण की भावना से व्रतों का पालन करके मोक्षमार्ग प्रशस्त करता है। सामान्य व्रत अष्टमी, चतुर्दशी, दशलक्षण, सोलहकारण आदि व्रत तो सभी श्रावक शक्त्यनुसार करते ही हैं, परन्तु कुछ विशेष व्रत जो मुख्य रूप से मुनिराज ही करते हैं। श्रावक भी आचार्य परमेष्ठी के निर्देशन में अभ्यास रूप में करके महाव्रत धारण करने हेतु पुण्यवर्धन करते है। चारित्रशुद्धि भी इसी प्रकार का दीर्घकालिक व्रत है जिसकी विधि निम्नानुसार है –

उत्कृष्ट रूप में यह व्रत ६ वर्ष १० माह एवं ८ दिन में सम्पन्न किया जाता है।

मध्यम १० वर्ष, ३ माह, १५ दिन में १२३४ उपवास

एक माह में १० उपवास यथा–२ द्वितीया, २ पंचमी, २ अष्टमी, २ एकादशी एवं २ चतुर्दशी ।

जघन्य में शक्त्यनुसार १२३४ उपवास २५-३० वर्ष में कर सकते हैं। व्रत का संकल्प भाद्रपद शुक्ल प्रतिपदा को गुरु के समक्ष उपवास, जल या एकाशन द्वारा क्षमतानुसार करें।

बारह सौ चौंतीस व्रतों का विवरण इस प्रकार है –

अहिंसा महाव्रत	१२६ उपवास
सत्य महाव्रत	७२ उपवास
अचौर्य महाव्रत	७२ उपवास
ब्रह्मचर्य महाव्रत	१८० उपवास
अपरिग्रह महाव्रत	२१६ उपवास
रात्रिभोजन त्याग अणुव्रत	१० उपवास
मनगुप्ति	९ उपवास

वचनगुप्ति	९ उपवास
कायगुप्ति	९ उपवास
ईर्या समिति	९ उपवास
भाषा समिति	९० उपवास
एषणा समिति	४१४ उपवास
आदान निक्षेपण समिति	९ उपवास
प्रतिष्ठापन समिति	९ उपवास

व्रत के दिन चारित्रशुद्धि व्रत की समुच्चय पूजा करके जाप मन्त्र की तीन माला तथा विशेष मन्त्र की माला करना अनिवार्य है। व्रत के दिन असंयम के कार्य शृङ्गार, टी. व्ही. सीरियल, हिंसक पदार्थों का त्याग के साथ कषाय के आवेग को भी शान्त रखकर स्वाध्याय एवं पाठादि करते हुए बहुमान पूर्वक व्रताचरण करें।

जाप मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।

अनुक्रमणिका

समुच्चय पूजा	१
अहिंसा व्रत पूजा	५
बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक	७
सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक	१०
सूक्ष्म अपर्याप्तक एकेन्द्रिय	११
दो इन्द्रिय पर्याप्तक	१२
दो इन्द्रिय अपर्याप्तक	१३
त्रि इन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक	१४
तीन इन्द्रिय अपर्याप्तक	१६
चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक	१७
चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक	१८
संज्ञी पंचेन्द्रिय	१९
संज्ञी अपर्याप्तक	२१
असंज्ञी पर्याप्तक	२३
असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक	२५
सत्य महाव्रत पूजा	२९
भैक्ष्य दोष निवारण	३१
स्वपक्ष दोष विचार	३२
पर पक्ष दोष विचार	३३
पैशून्य दोष रहित विचार	३४
क्रोध दोष रहित विचार	३५
लोभ दोष रहित विचार	३६
आत्म प्रशंसा दोष रहित वचन	३७
परनिन्दा त्याग विचार	३९
अचौर्य महाव्रत पूजा	४२
ग्रामाश्रित नवभेद	४४
वनाश्रित नवभेद	४५
खलाश्रित नवभेद	४७
एकान्त आश्रित नवभेद	४८
अन्यत्र कृतादि नवभेद	४९
उपधि आश्रित नवभेद	५०
अनुक्त आश्रित दोष	५१
सम्पुष्टा ग्रहण नवभेद	५२
ब्रह्मचर्य महाव्रत पूजा	५६
मनकृत भेद	५८
मन:कारित दोष विचार भेद	६०
मनोनुमोदित दोष विचार	६४
वचनकृत भेदा	६६
वचन कारित दोष विचार	६९
वचनानुमोदित दोष विचार	७१
काय कृत भेदा	७४
काय कारित भेद	७६
कायानुमोदित दोष विचार	७९
आकिंचन्य महाव्रत पूजा	८५
क्रोधाश्रित अभ्यंतर परिग्रह दोष विरति	८७
मानाश्रित अभ्यंतर दोष विचार	८८
माया कषायान्तरंग परिग्रह दोष विचार	८९
लोभ कषायान्तरंग परिग्रह दोष विचार	९०

हास्य कषायान्तर परिग्रह दोष विचार ९१
रति कषायान्तर परिग्रह दोष विचार ९२
अरति कषायाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार ९३
शोक कषायान्तर परिग्रह दोष विचार ९४
भयाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार ९५
जुगुप्सा कषायाश्रिताभ्यंतर दोष विचार ९६
स्त्री वेदाश्रिताभ्यंतर दोष विचार ९७
पुरुष वेदाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार ९८
नपुंसक वेदाश्रिताभ्यंतर दोष विचार ९९
मिथ्यात्वाश्रिताभ्यंतर दोष विचार १०१
क्षेत्राश्रित परिग्रह दोष विचार १०२
वास्तु-आश्रित, बाह्य परिग्रह दोष विचार १०४
धनाश्रित बाह्यपरिग्रह दोष विचार १०६
धान्याश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार १०७
द्विपद नाम बाह्य परिग्रह दोष विचार १०८
चतुष्पद बाह्य परिग्रह दोष विचार १०९
आसनाश्रित परिग्रह दोष विचार १११
शयनाश्रित परिग्रह दोष विचार ११२
कुप्य (वस्त्र) आश्रित परिग्रह दोष विचार ११३
भाण्डाति बाह्य परिग्रह दोष विचार ११५
रात्रि भुक्ति त्याग व्रत पूजा ११९
रात्रिभुक्ति दोष त्याग १२१
मनोगुप्ति पूजा १२५
वचन गुप्ति पूजा १२९
काय गुप्ति पूजा १३४

ईर्या समिति पूजा १३९
भाषा समिति पूजा १४४
सम्मत सत्य १४७
स्थापना सत्य विचार १४८
नाम सत्य विचार १५०
उपमा सत्य विचार १५१
रूप सत्य विचार १५२
प्रतीति सत्य विचार १५४
संभावना सत्य विचार १५५
व्यवहार सत्य विचार १५७
भाव सत्य विचार १५९
एषणा समिति पूजा १६२
औद्देशिक दोष परिहार १६४
अध्यधि दोष परिहार १६५
पूत दोष विचार १६६
मिश्र दोष विचार १६७
स्थापित दोष १६८
बलि दोष विचार १६९
प्रावर्तित (प्राभ्रत) दोष विचार १७०
प्राविष्कर दोष विचार १७१
क्रीत दोष विचार १७२
प्रामिच्छ (ऋण दोष) दोष विचार १७३
परिवर्तक (परावर्त) दोष विचार १७४
अभि घट दोष विचार १७५

उद्भिन्न दोष विचार १७६
मालारोहण दोष विचार १७७
आच्छेद्य विचार १७९
अनीशार्थ दोष विचार १८१
पात्र आश्रित उत्पादन के १६ दोष १८२
धात्री दोष निरूपण १८२
दूत दोष स्वरूप विचार १८४
निमित्त दोष परिहार १८५
आजीवन दोष विचार १८६
वनीपक दोष विचार १८७
चिकित्सा दोष विचार १८८
क्रोध दोष विचार १८९
मान दोष विचार १९०
माया दोष विचार १९१
लोभ दोष विचार १९२
एषणा समिति पूर्व संस्तुति दोष विचार १९३
एषणा समिति मध्य पश्चात् संस्तुति दोष विचार १९४
समिति मध्य विद्या दोष विचार १९५
एषणा समिति मध्य मंत्र दोष विचार १९६
एषणा समिति मध्य चूर्ण दोष विचार १९७
एषणा समिति मध्य मूलकर्म दोष विचार १९८
एषणा समिति के १० अशन दोष १९९
शंकित दोष १९९
मृषित दोष २००
निक्षिप्त दोष २०१
पिहित दोष २०२
व्यवहार दोष २०३
दायक दोष स्वरूप २०४
दायक दोष निवारक २०६
उन्मिश्रित दोष २०७
अपरिणत दोष २०८
लिप्त दोष स्वरूप २०९
परित्यजन दोष २११
संयोजन दोष २१२
अप्रमाण (अतिमात्र) दोष २१३
अंगार दोष २१४
धूम्र दोष २१६
आदान निक्षेपण समिति पूजा २२१
आदान निक्षेपण समिति अर्घ्यावली २२३
व्युत्सर्ग समिति प्रतिपालक मुनि पूजा २२६
व्युत्सर्ग समिति अर्घ्यावली २२८
समुच्चय जयमाला २३१
चारित्र शुद्धि महिमा २३३
चारित्र शुद्धि चालीसा २३४
चारित्र शुद्धि आरती २३६

श्री चारित्र शुद्धि विधान

मंगलाचरण

चौपाई

पंच परम परमेष्ठी ध्याऊँ, उन चरणों में शीश झुकाऊँ।
तप नय संयम चारित सिद्ध, हुए जगत् में आप प्रसिद्ध।
आप हमारे आराधक हैं, दर्श आपके शुभ साधक हैं।
जब से प्रभुवर तुमको जाना, तब से प्रभुवर तुमको माना।
कैसे बने थे तुम भगवान, पूछने आया हूँ यह ज्ञान।
राजगृही विपुलाचल पर्वत, समवसरण में वीर है दृढ़व्रत।
राजा श्रेणिक की जिज्ञासा, भगवन बनने की है आशा।
तीर्थंकर पद कैसे पायें, वीर ने चारित शुद्धि बताये।
हेम वर्ण राजा ने कीना, तीर्थंकर पद का सुख लीना।
जो भी इस व्रत को है धरता, स्वर्ग अपवर्ग की मंजिल पाता।
यह जग है भोगों का मेला, भोग के साथ हजार झमेला।
जग का हर सुख, दुख लाता है, अंत में दुर्गति ले जाता है।
काल अनंता से भटके हैं, लाख चौरासी में अटके हैं।
पुण्य योग से नरतन पाया, मिल गई जैनधर्म की छाया।
सच्चे सुख की राह यही है, गुरुवर की हर बात सही है।
चारित शुद्धि व्रत गुरु करते, ले आशीष भक्त भी तरते।
चारित शुद्धि व्रत को करना, श्रद्धा से शुभ भाव को धरना।
महान व्रत को महान करते, व्रत करते जो महान बनते।
जीवन को यदि सार्थक करना, इस व्रत को है धारण करना।
उत्तम मध्यम जघन्य रूप में, जैसी शक्ति उसी रूप में।
व्रत करके उद्यापन करना, चारित शुद्धि विधान को करना।
कर्मों के बादल को हरना, दुखमय इस संसार से तरना।

दोहा

तप का सूरज जब तपे, करम सभी नश जाय।
सर्व सिद्ध भगवान को, शत - शत शीश नवाय॥

समुच्चय पूजा

स्थापना

शम्भू छन्द

अरिहंत प्रभु शुभ समवसरण में, ध्यान लीन हो विराज रहे।
निज आतम उद्धार हेतु हम, भक्त भक्ति में साज रहे॥
आत्म शुद्धि चारित्र शुद्धि, के व्रत करने के भाव हुये।
मन वचन काया से मैं पुकारूँ, आओ प्रभो अब आओ हिये॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद् गुणसहित अर्हत् परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद् गुणसहित अर्हत् परमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद् गुणसहित अर्हत् परमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा

चारित्र शुद्धि हुये बिना, मिले न मुक्ति धाम।
इसीलिये, भक्ति करूँ, बारंबार प्रणाम॥

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन)

संसार सिन्धु है गहरा, उसका जल भी है खारा।
मैं शुद्ध भाव जल लाऊँ, प्रभु पूजन कर हर्षाऊँ॥
चारित्र शुद्धि व्रत करना, आतम संताप को हरना।
जिन मुद्रा हृदय बसाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करूँ तीन लोक की चिन्ता, ना पाया मुक्ति पंथा।
निज चिन्तन में रम जाऊँ, प्रभु चित्र को चित्त बसाऊँ॥
चारित्र शुद्धि व्रत सुन्दर, देते है सौख्य समन्दर।
इस बिना न मुक्ति द्वारा, पायें न सौख्य अपारा॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुश्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय धन है निज आतम, आतम मेरा परमातम।
जिनवर को देख के जाना, निज आतम शुद्ध कराना॥
चारित्र शुद्धि व्रत प्यारा, हो जायेंगे भव पारा।
अक्षयपुर वासी जिनवर, करूँ भक्ति मैं भी मनहर॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण - सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत- मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों का हूँ दीवाना, अपना स्वरूप न जाना।
भोगों ने हमें भ्रमाया, तेरा स्वरूप अब भाया॥
चारित्र शुद्धि व्रत पाया, भोगों से पिंड छुड़ाया।
निज ज्ञान ध्यान मैं पाऊँ, चरणों में पुष्प चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत- मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिनः कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है भूख एक बीमारी, जिससे दुनिया है हारी।
चारित शुद्धि है दवाई, इससे ही होगी विदाई॥
भोजन में संयम आये, सुख अपने पास बुलाये।
अरिहंत देव की पूजा, अब काम नहीं है दूजा॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण - सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत- मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिनः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब अहंकार है आया, निज आतम में तम छाया।
केवलज्ञानी की शरणा, निज आतम जगमग करना॥
चारित्र शुद्धि व्रत धारूँ, कर्मों को शीघ्र पछाड़ूँ।
इसलिये करूँ मैं पूजा, मुझ को कुछ और ना सूझा॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

बंदी कर्मों ने बनाया, कर्मों को हमने बुलाया।
कर्मों को कैसे भगाऊँ, तो प्रभू शरण में आऊँ॥
चारित्र शुद्धि व्रत सार, देता आतम आधार।
इसका फल निश्चित मुक्ति, आतमसुख की यह युक्ति॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कड़वे मीठे फल जग में, होते हैं तन के हित में।
मुक्ति फल आतम पाये, जो सुख अनंत दिलवाये॥
चारित्र शुद्धि व्रत सार, देता आतम आधार।
इसका फल निश्चित मुक्ति, आतम सुख की यह युक्ति॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

प्रभु जी है गुण के सागर, भरते हैं गुण की गागर।
प्रभु महिमा तेरी गाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ॥
चारित्र शुद्धि व्रत ध्याऊँ, इसे जन्म जन्म में पाऊँ।
जिन भक्ति हृदय बढ़ाऊँ, चरणों में शीश झुकाऊँ॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट् चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत-मंडिताय अर्हत् परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

तप सिद्धि व्रत से बढ़े, बढ़े आत्म का ध्यान।
जयमाला गुण गाऊँ मैं, बारंबार प्रणाम॥

शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी)

अरिहंत देव के चरण में, नमस्कार है।
अरि का किया हनन, प्रभु को नमस्कार है॥१॥
पाया अनंतज्ञान सौख्य, नमस्कार है।
तप संयम सिद्ध जी को, नमस्कार है॥२॥
छ्यालीस मूलगुण के धारी जी को, नमस्कार है।
सौ इन्द्र से पूजित प्रभु को नमस्कार है॥३॥
बैठे समवसरण में प्रभु, नमस्कार है।
भक्तों को दे वरदान, प्रभु को नमस्कार है॥४॥
है राग नहीं वीतराग, धारा आपने।
हम राग द्वेषी भक्त को भी, तारा आपने॥५॥
शरणा में जो भी आ गया, कल्याण किया है।
जिस पथ में चले आप प्रभु, हमको भी चलना है॥६॥

छाया में तेरी पाऊँ, प्रभु उसमें पलना है।
पैने करम बढ़ाया, प्रभु शक्ति दीजिये ॥७॥
चरणों में मन टिका रहे, जी भक्ति दीजिये।
कैसे बढ़ूँ मैं मुक्तिपथ पे, मुक्ति दीजिये।
कर्मों को करूँ नाश मुझे शक्ति दीजिये॥

दोहा

चारित्र शुद्धि व्रत करूँ, करूँ, करूँ आपका ध्यान।
तीन लोक के नाथ को 'स्वस्ति' का प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहित षट्चत्वारिंशद गुण-सहित एकसहस्त्रद्विशतचतुस्त्रिंश चारित्र शुद्धि व्रत मंडिताय अर्हंत् परमेष्ठिने अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मध्यान में वृद्धि हो, बढ़े भक्ति का भाव।
श्री अरिहंत की भक्ति से पार होयगी नाव॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

अहिंसा व्रत पूजा

शंभू छंद

जिओ और जीने दो संस्कृति, यही वीर ने बतलाई।
धर्म अहिंसा मुख्य जगत में, होता है ये सुखदाई॥
वृक्ष बीज के बिना ना होता, धर्म अहिंसा बिना नहीं।
धारा प्रभु ने हम भी धारें, जिनवर का उपदेश यही॥

दोहा

धर्म अहिंसा की पूजा, व्रत को करना साथ।
धर्म अहिंसा भी पालो, यही मुक्ति का राज॥

ॐ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभू छंद

अंतर मन द्वेष ग्लानि ईर्ष्या, हे प्रभु सदा भरा रहता।
देख आपकी शांति मुद्रा, तुम सम बनने को कहता॥
धर्म अहिंसा की पूजा से, मन को साफ कराना है।
भक्ति जल स्नान हेतु मम, जल चरणों में चढ़ाना है॥

ॐ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

राग आग बन आतम को, संताप सदा ही देती है।
राग द्वेष इस रूप में आकर, सुख शांति हर लेती है॥
धर्म अहिंसा के पूजा से, मन संताप को हरना है।
चंदन सी शीतलता हो, चंदन से पूजा करना है॥

ॐ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

नश्वर माया नश्वर काया, नश्वर जग के भोग सभी।
नश्वर के पीछे मैं भागूँ, शांति नहीं मिल पायी तभी॥
धर्म अहिंसा की पूजा कर, अक्षय पद को पाना है।
धर्म में अक्षय भाव रहें, शुभ अक्षत चरण चढ़ाना है॥

ॐ ह्रीं अहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

पाँचों इन्द्रिय इच्छा करती, मन पूरा कर खुश होता है।
पर इसका फल तो कष्ट मिले, यह बात समझ न पाता है॥
अब धर्म अहिंसा पुष्प बना, भोगों से दूर ही रहना है।
यह पुष्प चढ़ा अर्जी करता, अब धर्म भाव में बहना है॥

ॐ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं...।

जिह्वा छोटी सी पर सबको, चखने सबको मजबूर करें।
दिनभर ही नाच नचाती है, संयम ही तो सत्कार्य करें॥
अब धर्म अहिंसा की पूजा, कर संयम इस पर करना है।
नैवेद्य चढ़ा के भक्ति करूँ, सच्चे सुख को ही वरना है॥

ॐ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

दीपक जग जगमग करता, पर हवा चले तो बुझ जायें।
यदि ज्ञानदीप जल जायें तो, आतम को प्रकाशित कर जायें॥
ले धर्म अहिंसा का दीपक, मुक्ति पथ को अब लखना है ।
मैं दीप से पूजूँ प्रभु तुम्हें, आतम इतिहास को लिखना है॥

ॐ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

ये कर्म सतायें बहुत हमें, पर जग को दोष मैं देता हूँ।
कर्मों की बात समझ जायें, तो धर्म सहारा लेता हूँ॥
ले धर्म अहिंसा शस्त्र हाथ, कर्मों को मार भगाना है।
अब धूप से पूजूँ तुम्हें प्रभु, बस तुमसा ही बन जाना है॥

ॐ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं...।

है आर्त रौद्र ये अशुभ ध्यान, जग जंगल में भटकाते हैं।
शुभ धर्मध्यान औ शुक्ल ध्यान, कर धर्म अहिंसा पाते हैं॥
संपूर्ण धर्म का फल यह है, यह धर्म अहिंसा पा जाऊँ।
यह फल ही मुक्ति देता है, फल चढ़ा यही मैं फल पाऊँ॥

ॐ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

चारों गतियों में घूम लिया, सब जगह तो हिंसा हिंसा है।
हिंसा में कष्ट औ दुख पाया, शांति तो धर्म अहिंसा है॥
है पद अनर्घ्य की चाह मुझे, जो धर्म अहिंसा देता है।
भावों में अहिंसा को लाऊँ, जो नाव हमारी खेता है॥

ॐ ह्रीं परमअहिंसाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक

चाल छंद

(तर्ज ए मेरे वतन के...)

एकेन्द्री है जो बादर, पर्याप्तक का भी आदर।
मनकृत हिंसा न करना, जिनवाणी वचन को धरना॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर॥१॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकस्थूलैकेन्द्रिय-जीवमनःकृतहिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बादर पर्याप्त जो जीवा, उनकी रक्षा हो अतीवा।
न करते और कराते, रक्षा का भाव बनाते॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर॥२॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय-जीवमनःकारितहिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदन भी न करते, रक्षा कर कर्म को हरते।
एकेन्द्री है जो बादर, पर्याप्तक ज्ञान का आदर॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर॥३॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय-जीवमनसानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जीवों की रक्षा प्यारी, वचनों में संयम धारी।
वचनों से हिंसा न करतें, वचनों में धर्म है भरते॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर॥४॥

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तकजीववचनकृत-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से कहे ना करायें, उससे भी जीव बचायें।
कह के हिंसा न कराते, वे धर्म अहिंसा पाते॥

मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर ॥५॥

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तकजीववचनकारित-**हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

करते ना वे अनुमोदन, हिंसा में किया है शोधन।
रक्षा का भाव बनाया, शुभ भाव अहिंसा पाया॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर ॥६॥

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तकवचनुमोदित-**हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

काया में संयम आया, रक्षा का भाव बनाया।
कर धर्म अहिंसा ज्ञानी, पालन करते जिनवाणी॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर ॥७॥

ॐ ह्रीं बादरैकेन्द्रियपर्याप्तकजीव कायकृत-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से ना करवाया, शुभभाव अहिंसा भाया।
काया ने धर्म किया है, आतम भी शुद्ध हुआ है॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर ॥८॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकबादरैकेन्द्रियजीव कायकारित-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

काया अनुमोद न करती, जीवों की रक्षा होती।
सब प्राणी को सुख देते, शुभ धर्म अहिंसा लेते॥
मुनि महाव्रती ही पाले, टूटे कर्मों के जाले।
है दया के सागर मुनिवर, मैं माथ झुकाऊँ गुरुवर ॥९॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकबादरैकेन्द्रियजीव कायानुमोदित-हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

अपर्याप्तक बादर भये, इकेन्द्रीय सुजान।
मन से गुरु करुणा करें, धर्म अहिंसा मान ॥१०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीवमनकृतहिंसादोषनिवारक **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

जीव न छोटा मानते, सभी बराबर जान।
मन से करायें हिंसा ना, बारंबार प्रणाम ॥११॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीवमनः कारित हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

एकेन्द्रिय अपर्याप्त जो, बरसे दया अपार।
मन अनुमोदना न करें, दया के हैं भंडार ॥१२॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीवमनोमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन से हिंसा करने का, देते ना आदेश।
एकेन्द्रिय बादर की रक्षा करी विशेष ॥१३॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा कार्य कराने का देते ना उपदेश।
रक्षा जीवों की करी, धर्म अहिंसा वेश ॥१४॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से संयम रखें, करते ना अनुमोद।
वचनों से रक्षा करें, करें आत्म का शोध ॥१५॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीव-वचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एकेन्द्रिय अपर्याप्त की, रक्षा करती काय।
धर्म अहिंसा पालते, शत-शत शीश झुकायें ॥१६॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से ना करावते, हुआ है रक्षा भाव।
वचनों में सिद्धि करी, होते सरल स्वभाव ॥१७॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से अनुमोदना, नहीं करें गुरुदेव।
धर्म अहिंसा पालकर, करें आत्म की सेव ॥१८॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकबादरैकेन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-

पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव जो, पर्याप्तक है जान।
मन में हिंसा भाव ना, धर के करके ध्यान ॥१९॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर्याप्तक एकेन्द्रिय की, रक्षा करें महान।
भाव कराने के नहीं, धर के करते ध्यान ॥२०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सूक्ष्म जीव एकेन्द्रिय की, रक्षा भाव बनायें।
मन से ना अनुमोदना, धर्म अहिंसा पायें ॥२१॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सूक्ष्म जीव की वचन ते, रक्षा करते नाथ।
धर्म अहिंसा पालकर, सबके बने है नाथ ॥२२॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववच-कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन से कह ना कराते हैं, पूर्ण अहिंसा पाल।
जीव रक्षा शुभ धर्म है, छूटे जग जंजाल ॥२३॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वच अनुमोदना ना करें, संयम वचन पे धार।
धर्म अहिंसा के लिये, रक्षा ही आधार ॥२४॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचअनुमोदना हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काय भी रक्षा करती हैं, सूक्ष्म एकेन्द्रिय की जान।
इससे जड़ को छोड़ते, आतम को पहचान ॥२५॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नहीं कराते काया से, हिंसा जीव की जान।
काया की शुद्धि भई, धर्म अहिंसा जान ॥२६॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्ण लोक में व्यापते, लघु सूक्ष्म ये जीव।
अनुमोदन तन ना करें, यही धर्म की नींव ॥२७॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीव कायनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सूक्ष्म अपर्याप्तक एकेन्द्रिय

अर्घ्यावली

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के...)

अपर्याप्तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय, होती है एक ही इन्द्रिय।
मन से रक्षा हैं करते, इससे निज भाव सुधरते ॥२८॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनः कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर्याप्ति पूर्ण हुई ना, फिर भी रक्षा है करना।
मन इससे शुद्ध हुआ है, जिसने निज आत्म छुआ है ॥२९॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमनः कारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भावों में संयम आया, अनुमोदन ना कर पाया।
गुरु धर्म अहिंसा धारी, निज धर्म से प्रीति भारी ॥३०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीवमननामुदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया ना व्यर्थ रुलायें, एकेन्द्रिय को न सतायें।
प्रथम ये धर्म अहिंसा, ना करता सूक्ष्म की हिंसा ॥३१॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उपदेश भी ऐसा देवे, रक्षा जीवों की होवें।
न करते और कराते, रक्षा का भाव बनाते ॥३२॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदन काय न करता, इससे भी पाप है हरता।
काया से धर्म कराया, हमनें आ अर्घ्य चढ़ाया ॥३३॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीववचोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-

प्राप्तये अर्घ्यं...।

वच शुभ - शुभ ही वे बोलें, मुक्ति का द्वार हैं खोले।
वच से हिंसा न कीनी, रक्षा जीवों की कीनी ॥३४॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीव काय कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

वच से हिंसा न करावें, रक्षा जीवों की सिखावें।
वे सूक्ष्म जीव भी बचावें, हम चरणों अर्घ्यं चढ़ावें ॥३५॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया को वश में राखें, संयम के स्वाद को चाखें।
तन से हिंसा न करावें, चरणों में शीश झुकावें ॥३६॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसूक्ष्मैकेन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दो इन्द्रिय पर्याप्तक

चाल छन्द

लट इल्ली केंचुआ आदि होते हैं ये दो इन्द्रिय।
मन भाव से रक्षा करते, अपने कर्मों को हरते ॥३७॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमन कृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दो इन्द्रिय जो पर्याप्तक, उनके हैं गुरुवर रक्षक।
मन हिंसा भाव न भावें, रक्षा करके हर्षावें ॥३८॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनः कारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदन नाहीं किया है, रक्षा से कल्प लिया है।
इससे मन शुद्धि करते, मन में विशुद्धि वे धरते ॥३९॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्पर्शन रसना धारी, पर्याप्तक नाहिं विदारी।
वचनों में अहिंसा धारी, उनको है आतम प्यारी ॥४०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा आदेश न देते, वचनों में धर्म निभाते।
वे वचन अहिंसा धारी, उनको है आतम प्यारी ॥४१॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनानुमोद न कीना, न पाप जरा भी लीना।
धर ध्यान धरम के धारी, संयम रखते अनगारी ॥४२॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

काया संभाल के रक्खी, जीवों की रक्षा पक्की।
हिंसा अधर्म न करते, बस धर्म अहिंसा धरते ॥४३॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रियजीव कायकृत हिंसादोषनिवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर काया से ना कराते, काले पापों को नशाते।
काया में संयम आया, रक्षा का भाव बनाया ॥४४॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया न इशारे करते, न अनुमोदन ही धरते।
ऐसी विशुद्धि के धारी, गुरु रक्षा करें हमारी ॥४५॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दो इन्द्रिय अपर्याप्तक

चाल

पर्याप्ति पूर्ण न होवे, दो इन्द्रिय जीव बतावें।
मन से भी हिंसा न कीनी, संयम में दृष्टि दीनी ॥४६॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन कारित हिंसा न करते, मन को संभाल के रखते।
गुरु करुणा के भंडारी, शुभ भाव अहिंसा धारी ॥४७॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दो इन्द्रिय अपर्याप्तक, रक्षा की अंतिम क्षण तक।
अनुमोदना भी ना करते, रक्षा कर भाव सुधरते ॥४८॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीवमनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-

प्राप्तये अर्घ्यं...।

वचकृत हिंसा के त्यागी, गुरुवर जी है वैरागी।
वे तो है दया के सागर, भरे धर्म अहिंसा गागर ॥४९॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कह के हिंसा न करावें, दो इन्द्रिय जीव बचावें।
व्रत धार के पालन करते, इससे कर्मों को हरते ॥५०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वच से अनुमोद न कीना, मन धर्म अहिंसा लीना।
करुणा सागर कहलाते, रक्षा के भाव बनाते ॥५१॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया में संयम आया, शुभ धर्म अहिंसा पाया।
काया कृत हिंसा त्यागी, गुरुवर जी हैं वैरागी ॥५२॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया भी धर्म करायें, जब जीवों को ये बचायें।
काया हिंसा न करावें, हम चरणों अर्घ्यं चढ़ावे ॥५३॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपूर्ण जीव दो इन्द्रिय, मन धर्म अहिंसा केन्द्रीय।
अनुमोदन काय न करती, जीवों की रक्षा करती ॥५४॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकद्वीन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

त्रि इन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक

चौपाई

ते इन्द्रिय पर्याप्तक जानो, रक्षा का संकल्प है मानो।
मनकृत हिंसा के हैं त्यागी, उत्तमव्रती की आतम जागी ॥५५॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ते इन्द्रिय हैं चींटी आदिक, रक्षा भाव बनाया साधक।
मन कारित हिंसा को त्यागा, उत्तम व्रती का आतम जागा ॥५६॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा की अनुमोद न करते, मन में रक्षा भाव है धरते।
अच्छा किया न ऐसा कहते, वे तो धर्म अहिंसा कहते ॥५७॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमननोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ते इन्द्रिय तो चलते फिरते, वे भी मरना नहीं चाहते।
वचनों से न दोष लगायें, रक्षा कर आतम हर्षायें ॥५८॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों पर संयम है आया, हिंसा कर्म नहीं करवाया।
वच कारित हिंसा को छोड़ा, निजआतम से नाता जोड़ा ॥५९॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वच अनुमोदना भी न करते, क्योंकि उससे कर्म है बँधते।
इसीलिये अनुमोदना त्यागी, ले महाव्रत बनते बड़भागी ॥६०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया संभल संभल कृत करती, क्योंकि हिंसा जरा में होती।
काया कृत संभल है आया, काया से भी धर्म कराया ॥६१॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया हिंसा नहीं कराये, बस संयम की कृति को पायें।
काया ने भी धर्म कराया, हमनें आकर अर्घ्य चढ़ाया ॥६२॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नहीं इशारा काया करती, जिससे जीव की हिंसा होती।
देते इशारा मुक्ति पथ का, चले मार्ग वे मुक्ति पथ का ॥६३॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तीन इन्द्रिय अपर्याप्तक

अपर्याप्तक पूर्ण नहीं है, ते इन्द्रिय की बात कही है।
फिर मन रक्षा है करता, मन कृत हिंसा कर्म न करता ॥६४॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन से भी रक्षा करवायें, धर्म अहिंसा भाव बनाये।
मन कारित हिंसा न करते, दया दान दे झोली भरते ॥६५॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनकारित हिंसाकारितदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भाव अनुमोदन नहीं है करते, धर्म धार संयम में रहते।
हिंसा अनुमोदन के त्यागी, आत्म अहिंसा धर्म में लागी ॥६६॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दुष्ट वचन कह दोष न धरते, हिंसा वचन कभी न कहते।
वचनों ने भी धर्म कराया, क्योंकि वचन में संयम आया ॥६७॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

इक दो नहि वे जीव अनंता, रक्षा कर हो धर्म अहिंसा।
दे उपदेश वे रक्षा करायें, हिंसा धर्म से दूर हटायें ॥६८॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा कार्य अनुमोदन करते, इसी तरह ही भाव सुधरते।
सद्कार्यों की अनुमोदन, भागे कर्म वहाँ पे दनादन ॥६९॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया कायावान की रक्षा, भाव है उनके जीव की रक्षा।
आत्म सुरक्षा यदि है करना, बस जीवों की रक्षा करना ॥७०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया जतन से रखें उठाये, इससे भी वे जीव बचायें।
काया हिंसा नाहीं करायें, ऐसे गुरु को शीश झुकायें ॥७१॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

करुणा हृदय ही रक्षा करता, वो अनुमोदना भी ना करता।
कैसे धर्म अहिंसा फैले, सर्व जीव जन सुख से रहले ॥७२॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकत्रीन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चतुरिन्द्रिय पर्याप्तक

चौपाई

रस स्पर्श गंध और वर्ण, है चतुइन्द्रिय नहिं है कर्ण।
पर्याप्तक बन जन्म लिया है, गुरु मन हिंसा छोड़ दिया है ॥७३॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भू पर चलें औ उड़े गगन में, चौ इन्द्रिय की हिंसा जग में।
महाव्रती न करवाते हैं, धर्म को ध्या दुख हरवाते हैं ॥७४॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन पर ऐसा संयम आया, हिंसा भाव न मन में आया।
हिंसा की अनुमोद न करते, वे तो आत्म ध्यान विचरते ॥७५॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन की शक्ति है उपजाई, भाषा समिति वच में आई।
हिंसा हो युँ वच न बोले, धर्म अहिंसा द्वार को खोले ॥७६॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वच से हिंसा नहीं कराते, चौं इन्द्रिय की रक्षा कराते।
सभी जीव चाहते है जीना, इससे धर्म अहिंसा लीना ॥७७॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा अनुमोदन में पाप है, धर्म अहिंसा का प्रताप है।
वचन ध्यान से बोलो भाई, बिना ध्यान के पाप उपाई ॥७८॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन वच वश काया वश कीना, धर्म अहिंसा का पथ लीना।
काया सावधानी से चाले, जीव रक्षा का भाव बनाले ॥७९॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीव कायकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

ना ही करते नहिं कराते, जीव रक्षा से धर्म को ध्याते।
भाव की शुद्धि आत्म की शुद्धि, करते आत्मध्यान की वृद्धि ॥८०॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीव कायकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा का ना करें इशारा, हिंसा से वे करें किनारा।
यही धर्म शुभ ध्यान करायें, दया भाव हृदय में जगायें ॥८१॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चतुरिन्द्रिय अपर्याप्तक

चौपाई

नहीं इन्द्रियाँ पूर्ण हुई हैं, जन्म के कारण पूर्ण नहीं है।
फिर भी मन से ही वो करते, नंत जीव के कष्ट को हरते ॥८२॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रथम स्वयं ही रक्षा करते, रक्षा का उपदेश भी देते।
धर्म तो आत्म विशुद्धि लायें, दुख संकट को दूर भगायें ॥८३॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दया धर्म के पालन हारे, मन में ना अनुमोद विचारे।
धर्म अहिंसा श्रेष्ठ बनायें, हम चरणों में अर्घ्य चढ़ायें ॥८४॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनशुद्धि वच को शुद्ध कीना, प्रतिक्षण शुभ-शुभ भावन कीना।
वचन से भी हिंसा ना करते, अन्य जीव के कष्ट समझते ॥८५॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनकृत-हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कह के हिंसा को ना करायें, इससे पाप बंध हो जाये।
पाप ताप संताप के हारी, गुरुवर रक्षा करें हमारी ॥८६॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वच को इतना वश में कीना, अनुमोदन हिंसा न लीना।
तब ही धर्म अहिंसा आये, भाषा समिति इसे बताये ॥८७॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपर्याप्तक चतुइन्द्रिय की, रक्षा करते उन जीवों की।
काया को भी वश में कीना, जरा असंयम नहीं है कीना ॥८८॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नाहीं करते नहिं कराये, शिक्षा दे रचना करवायें।
करुणा सागर आप कहाये, हम पर करुणा भी दिखलाये ॥८९॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मौन लेके नहिं करें इशारा, धर्म अहिंसा आत्म सँवारा।
ज्ञान ध्यान में चित्त लगाया, तब ही धर्म अहिंसा आया ॥९०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकचतुरिन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संज्ञी पंचेन्द्रिय

भुजंगप्रयात (तर्ज नरेन्द्र-फणीन्द्र)

मन वाले संज्ञी, जो पंचेन्द्रिय प्राणी।
रक्षा करो उनकी, कहती जिनवाणी ॥
पर्याप्ति पूरी कर, जीवन को पाते।
ज्ञानी करे रक्षा, मन से हर्षाते ॥९१॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा ही सबसे बड़ा पाप पाया।
इसी से अहिंसा का भाव बनाया ॥
गुणधर जी गणधर जी, इसको है पाले।
हम भी अहिंसा का भाव बना ले ॥९२॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भावों से ना, वो अनुमोदन करते।
अहिंसा धर्म को है, भावों में धरते॥
जीवों की रक्षा, जो प्राणी करेगा।
मिले लंबी आयु औ, सुख से रहेगा॥९३॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

हित मित हो प्रिय वाणी को है बताया।
इसी में अहिंसा, धरम है समाया॥
वचनों से हिंसा, नहीं आप करते।
पंचेन्द्रिय रक्षा से, आत्म संवरते॥९४॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा न करते, औ नाहीं कराते।
वचनों से रक्षा का भाव बनाते॥
ऐसे मुनिवर को, मन से मैं ध्याऊँ।
करूँ उनकी भक्ति, और अर्घ्य चढ़ाऊँ॥९५॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी ने करी हिंसा, न अनुमोद कीना।
दया धर्म का भाव, हर क्षण नवीना॥
नव कोटि मुनिवर, त्रि कम ही हुये हैं।
भक्ति के भावों, से चरणा हुये हैं॥९६॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयम से काया को, वश में किया है।
अहिंसा धरम इससे, पालन किया है॥
काया की छाया भी, ना कष्ट देती।
जीवों की रक्षा का, संकल्प लेती॥९७॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा कराने का, त्याग किया है।
अहिंसा धरम को, काया से किया है॥
ऐसे महामुनि के चरणों को ध्याऊँ।
धरके अहिंसा धर्म, मैं भी आऊँ ॥९८॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया इशारा, ना हिंसा का करती।
काया में ममता, हिंसा ही धरती॥
अहिंसा से जीवों की रक्षा करी है।
तभी आत्मा की, धर्म गगरी भरी है॥९९॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संज्ञी अपर्याप्तक

छंद-भुजंगप्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

पाई पंचेन्द्रिय, जन्म ना हुआ है।
महाव्रत के धारी ने, दुख ना दिया है॥
अहिंसा धर्म को जो, मन से है पाले।
टूटेंगे उसके, करम के ही जाले॥१००॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन की विशुद्धि, ज्यों आगे बढ़ी है।
अहिंसा धर्म पे ही, नींव खड़ी है॥
हिंसा कराने का, भाव न आया।
वात्सल्य धारी ने, प्रेम लुटाया ॥१०१॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वीर की वाणी ये, हमको बताये।
अनुमोद हिंसा, भी पाप बढ़ायें॥
इसी से करो ना, अनुमोद हिंसा।
तभी धर्म होगा औ, होगी अहिंसा॥१०२॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य

पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों की शक्ति, जो पहचान लेता।
वचनों से धर्म, अहिंसा को करता॥
वचनों से कह के, न हिंसा करायें।
वचनों की शक्ति, धरम में लगाये ॥१०३॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय **जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचनों के कारण, तो युद्ध हुये हैं।
युद्ध निवारण भी, वच से हुये हैं॥
भाषा समिति, रख वचनों को बोले।
तो मुक्ति का द्वारा, भी वचनों से खोले॥१०४॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रशंसा करो जो भी कार्य हैं अच्छे।
करें कार्य अनुमोद, पापों के गुच्छे॥
हिंसा का फल, तीव्र पाप बताया।
पापों के फल ने ही, हमको रुलाया ॥१०५॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की गाड़ी, मिली मोक्ष जाने।
अहिंसा धरम राह, मुक्ति को माने॥
हिंसा तो हिंसा, नहीं है मिटाती।
अहिंसा धरम ही, करम को नशाती॥१०६॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

काया को देखों, बड़ी सीधी सादी।
अहिंसा धरम राह, मुक्ति दिलाती॥
हिंसा तो हिंसा, नहीं है मिटाती।
अहिंसा धरम ही, करम को नशाती॥१०७॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवर ने काया, को खूब तपाया।
अहिंसा धरम से, करम को झराया॥
मुक्ति में जाने को, काया सहाई।
काया की महिमा, प्रभो ने बताई ॥१०८॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकसंज्ञीपंचेन्द्रिय **जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

असंज्ञी पर्याप्तक

भुजंग प्रयात

मिली पाँच इन्द्रिय, पर मन नहीं पाया।
बिना मन के जीवन, न पूरा बताया॥
असंज्ञी जो प्राणी, करें उनकी रक्षा।
करें आत्म ध्यान, हो आत्म सुरक्षा॥१०९॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय **जीवमनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

मन से अहिंसा धर्म को कराओ।
बचो पाप से और, पुण्य कमाओ॥
प्रत्येक जीव, जो जीना ही चाहे।
अहिंसा धरम से मिले, मुक्ति राहे ॥११०॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा ना करते, और ना ही कराते।
पर मन से अनुमोद, पाप कमाते॥
किन्तु महाव्रत के, धारी न करते।
मन से अहिंसा, धरम मन में धरते॥१११॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मानव महा पुण्य वचनों को पाया।
वचनों से धर्म अहिंसा को ध्याया॥
पुण्य महापुण्य, आगे बढ़ाये।
जो वचनों का धर्म, अहिंसा निभायें॥११२॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय **जीववचनकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-**

पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय वे यूँ ही विचरते।
किन्तु गुरु कहे, वचनों से बचते॥
वचनों ने जीवों की रक्षा करी है।
अहिंसा धरम नींव, तुमने धरी है ॥११३॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा प्रशंसा, वचन जो करेगा।
पापों का मटका, तो वो ही भरेगा॥
प्रशंसा करो पर, जो कार्य हों अच्छे।
करना सभी बूढ़े युवा औ बच्चे॥११४॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीववचनानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया को आतम जो, मिष्ट बनाये।
अहिंसा धरम का, जो पालन कराये॥
आतम को जाग्रत, तो रहना पड़ेगा।
काया से तप तब ही, आतम करेगा॥११५॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीव कायकृत हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी जीव को वो तो, छोटा ना माने।
जिओ और जीने दो, को ही वे माने॥
काया तो इससे, अहिंसा करायें।
नमूँ तेरे चरणों में, अर्घ्य चढ़ाये॥११६॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीव कायकारित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया रह स्थिर, जो हिंसा ना करती।
नाहीं अनुमोद, व्यर्थ न करती॥
व्यर्थ में इत उत ना जाये ना डोले।
करें साधना काया, सुख द्वार खोले॥११७॥

ॐ ह्रीं असंज्ञीपर्याप्तकपंचेन्द्रिय जीव कायानुमोदित हिंसादोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक

भुजंगप्रयात

असंज्ञी पंचेन्द्रिय, मन नाहीं है पाया।
पर्याप्त भी नाहीं, ना जीवन है आया॥
उनकी भी रक्षा करो, वीर कहते।
मन को करो वश, धरम में है रहते॥११८॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन पर जो संयम का भाव है आये।
मन भी ना जीवों की, हिंसा कराये॥
मन की विशुद्धि, अहिंसा से होती।
विशुद्धि अशुद्धि को, मल-मल के धोती॥११९॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रखा ध्यान मन का, न अनुमोद कीना।
अहिंसा धरम पूर्ण, आतम में लीना॥
निर्मल हुआ मन, सुख सिन्धू पायें ।
सुख मांगने वे, कहीं भी ना जाये ॥१२०॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीवमनोनुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

करुणा का धारी, दया वच को बोलें।
हिंसा करें ना, बस मौन ले ले ॥
करुणा ने जीवों की जान बचायी।
परम करुणा धारी, जीवों के सहायी॥१२१॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्वयं तो बचाते औ प्रेरणा करते।
सभी जीव के दुख, धरम से ही हरते॥
वचनों की भाषा, हमारी हो ऐसी।
जैसी कही जिन ने, बिल्कुल हो वैसी॥१२२॥

ॐ ह्रीं अपर्याप्तकअसंज्ञीपंचेन्द्रिय जीववचनकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय

अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से पूर्ण, अहिंसा निभायी।
वचनों से हिंसा की, भाषा न आयी॥
बड़े ध्यान से ही, वचन को वे बोले।
प्रथम मन को साधे, फिर वचनों को तौले॥१२३॥

ॐ ह्रीं [illegible] वचनानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की माया, जगत में है छायी।
काया के पीछे, है आतम भुलाई॥
काया को वश कर, अहिंसा को पालो।
काया के द्वारा, धरम को निभालो॥१२४॥

ॐ ह्रीं [illegible] जीव कायकृत हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया में संयम तो, रखना पड़ेगा।
काया असंयम, पापों को धरेगा॥
काया से धर्म अहिंसा कराओ।
धर के अहिंसा, विशुद्धि बढ़ाओ॥१२५॥

ॐ ह्रीं [illegible] जीव कायकारित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तप करके काया से मुक्ति में जायें।
यदि भोग भोगें, तो नरक में भी जायें॥
काया से चाहो जो, वो ही करोगे।
रहे आत्म जाग्रत, तो मुक्ति वरोगे॥१२६॥

ॐ ह्रीं [illegible] जीव कायानुमोदित हिंसाकृतदोष निवारक श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

शंभु छंद

मन वच काया तीनों भक्ति, जिस जीव को पुण्य से मिल जाती।
रक्षा करता यदि जीवों की, तो भक्ति और भी बढ़ जाती॥
मन वच काया की भक्ति तो, यह धर्म अहिंसा देता है।
पालन जो इसका कर लेता, वह सुख अनंत को लेता है॥१२७॥

ॐ ह्रीं नवकोटिविशुद्ध हिंसाकृतपापनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं अहिंसाव्रत चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।(१०८ बार)

जयमाला

जीव अहिंसा धर्म है, इसमें पूर्ण समाये।
धर्म अहिंसा धारके, जयमाला को गायें॥

तर्ज चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

शुभ धर्म अहिंसा धारी, तुम्हें नमस्कार है।
रक्षा करी है जीवों की जो, नमस्कार है॥
देते हो अभयदान, तुम्हें नमस्कार है।
करते हो भय से रहित, प्रभो नमस्कार है॥१॥

वे सूक्ष्म से भी सूक्ष्म जीवों को हैं बचाते।
देते जरा न कष्ट, सब सब पे प्रेम लुटाते॥
मृत्युंजयी बनना है तो, अभय दान दो।
रक्षा करो जीवों की, सदा दयादान दो॥२॥

मारें नहीं सतायें नहीं, जीवों को सदा।
मृत्यु पे विजय वो ही पाये, दुख न हो कदा॥
जो दुख न दे किसी को, उसे दुख भी ना मिले।
करते जो आत्म ध्यान, उसे सुख ही सुख मिले॥३॥

जो बोया है वो काटेंगे, ये नियम मानना।
धारो अहिंसा धर्म, ये ही सच्चा जानना॥
जीवों का करें घात द्रव्य हिंसा है कही।
करता है जो कषाय, भाव हिंसा है कही॥४॥

उद्योगी औ आरंभी है, विरोधी भी कही।
मुनिराज इनका त्याग करें, गृहस्थ में रही॥
संकल्पी हिंसा छोड़ता, वो श्रावक कहाये।
संपूर्ण हिंसा त्याग मुक्ति मार्ग दिखाये॥५॥

करुणा का सिन्धु हो हृदय तब धर्म अहिंसा।
अपने समान सबको माने, माने, धर्म अहिंसा॥

इससे बड़ा न धर्म जगत में है बताया।
इससे ही आके हमने, प्रभु को शीश झुकाया ॥६॥

भोजन में हो व्यापार में भी आये अहिंसा।
शृंगार में भी ध्यान रहे, होवें अहिंसा॥
हर कार्य सावधानी से हो, होय अहिंसा।
वो सच्चा सुख ही पाता, जो कि धारे अहिंसा ॥७॥

दोहा

महावीर भगवान ने दिया उपदेश महान।
चारित शुद्धि के लिये, प्रथम अहिंसा ज्ञान॥

ॐ ह्रीं परम अहिंसा विशुद्ध चारित्रधराय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

व्रत के ही प्रारंभ में, धर्म अहिंसा बताय।
चारित शुद्धि हो तभी, धर्म अहिंसा पाय॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

सत्य महाव्रत पूजा

तर्ज-चौबीसी पूजा

सत्य महाव्रत धार, प्रभु, भगवन बने।
मन वच काय से पाल, हुये सुख है घने॥
सत्य सूर्य की पूजा करने, आये हैं।
जीवन में हो सत्य, भावना भाये हैं॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारक श्री जिनेन्द्र देव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इत्यास्थापनम्।
ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारक श्री जिनेन्द्रदेव! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा

सत्य राह पर जो चले, मुक्ति मंजिल पाये।
सत्य विना सुख ना मिले, प्रभु जी यही बतायें॥

अष्टक

(शंभू छंद)

हम देह से प्यार करे लेकिन, देही से प्यार नहीं करते।
इससे ही जन्म मरण होता, औ बार-बार तन को धरते॥
अब सत्य बात तो ये ही है, सच्चा सुख तो आतम में है।
यह सत्य महाव्रत सत्य कहे, अपनी आतम परमातम है॥१॥

ॐ ह्रींसत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चिन्ता ईर्ष्या औ द्वेष संग, आतम संतापित रहता है।
आतम परमातम का चिन्तन, चंदन सम ठंडक देता है ॥
यह सत्य महाव्रत शीतल है, आतम से परिचय करवाये।
चंदन से पूजूँ नाथ तुम्हें, जो सत्यराह को दिखलाये॥२॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर सुख झूठा यदि दे दे, पर बाद में कष्ट ही देता है।
पर सत्य महाव्रत शाश्वत सुख देकर के मुक्ति देता है ॥
यह सत्य धर्म तो अक्षय है, अक्षयपुर में पहुँचाता है।
अक्षत में पूजूँ नाथ तुम्हें, अक्षय सुख भाव को भाता है॥३॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

बाहर की गंध सुगंधी को, पाने जग मन को भरमाता।
पर सद्गुण गंध तो ऐसी है, जिससे आतम उस को पाता॥
पर सत्य धर्म की खुशबू को, पाने महाव्रत को धारा था।
पुष्पों से पूजूँ नाथ तुम्हें, तुमने निजरूप निहारा था॥४॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।

हम निशदिन भोजन करके भी बीमार दुखी क्यों रहते हैं।
आतम का भोजन ज्ञान-ध्यान, करने से सुखी ही होते हैं॥
तन का ध्यान तो खूब रखा, पर चेतन का ना रख पाया।
अंजाना सत्य रहा मुझमें, इसलिए जगत के दुख पाया॥५॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

बाहर में उजाला हुआ बहुत, आतम उसमें न दिख पाया।
जब ज्ञान उजाला अंदर हो, तब ही आतम का सुख पाया॥
जब सत्य महाव्रत पालन हो, तो सत्य सूर्य तब प्रगट होये।
दीपक ले पूजूँ नाथ तुम्हें, अपने अज्ञान को हम खोये॥६॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

दिन रात करम ही करते हैं, पर बात धरम की ना भायी।
कर्मों ने दीना झटका तो, तब बात समझ में ये आयी॥
जहाँ सत्य सूर्य जब प्रगट होय, कर्मों का तम न टिकता है।
मैं धूप से पूजूँ नाथ तुम्हें, पूजा से कर्म भी भगता है॥७॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

कर्मों का फल इन्द्रिय सुख-दुख, इससे ऊपर भी सोचो जरा।
जहाँ सत्य महाव्रत पालन हो, आतम के संग खुश होय धरा॥
मंगलमय मंगलकारी है, यह सत्य प्रभु ने बतलाया।
फल से पूजूँ हे नाथ तुम्हें, यह सत् पथ तुमने दिखलाया॥८॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

आमंत्रित व्यक्ति को करते, परछाईं साथ में आती है।
धन तो है धरम की परछाईं, बस धर्म ही सुख का मोती है॥
धीरज औ धैर्य को धारण कर, निज आतम धर्म को पा लेना।
मैं अर्घ्य से पूजूँ नाथ तुम्हें, चंचलता दूर करा देना॥९॥

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतधारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भैक्ष्य दोष निवारण

चौपाई

लें आहार न मन में विचारे, भाव शुद्धि से लेत आहारे।
मनकृत दोष को दूर किया है, भिक्षा दोष को दूर किया है॥१॥

ॐ ह्रीं मनःकृत भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

राग त्याग के आहार कीना, इसी से मन में शुद्धि लीना।
मन कारित यह दोष निवारा, दोष दूर कर लिया आहारा॥२॥

ॐ ह्रीं मनकारितभिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन में भी अनुमोदन करते, शुद्ध वस्तु ले जैसी मिलते।
मन अनुमोदना के भी त्यागी, तभी बनेंगे राग के त्यागी॥३॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन से भी ना चर्चा करते, वे तो आतम अर्चा करते।
वचकृत दोष भी नहीं लगाया, सत्य महाव्रत है अपनाया॥४॥

ॐ ह्रीं वचनकृत भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोजन चर्चा नहीं कराते, नाहीं कह कर के बनवाते।
वच कारित यह दोष हटाया, इसी से आतम का सुख पाया॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकारित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोज प्रशंसा भी न करते, बस आतम का ध्यान हैं धरते।
आत्म ज्ञान का भोज बनाया, आतम ध्या आतम को पाया॥६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आत्म परिग्रह आपने छोड़ा, घर गृहस्थी से नाता तोड़ा।
काया कृत न दोष लगाया, काया को संयम दिलवाया॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृत भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कार्य असत्य न काय कराये, काया संयम धर सुख पाये।
काया कारित दोष मिटाया, हमने आकर अर्घ्य चढ़ाया॥८॥

ॐ ह्रीं कायकारित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

असत्य का अनुमोद न करते, अनुमोदन के पाप से बचते।
यही त्याग सत् दर्श करायें, पाप ताप संताप मिटाये॥९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित भिक्षादोषरहितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्वपक्ष दोष विचार

अपने पक्ष में हो यह भाव, असत्य भाव का करें अभाव।
मनकृत दोष निवार तुमने, शीश झुकाया आकर हमने॥१०॥

ॐ ह्रीं मनःकृतस्वपक्षदोषवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सत्य धर्म का पक्ष बनावें, नहिं असत्य के भाव करावें।
मन कारित यह दोष हटावें, चरणों आ हम अर्घ्य चढ़ावें॥११॥

ॐ ह्रीं मनःकारितस्वपक्षदोषवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सत्य धर्म की, की अनुमोद, आया उसमें सत्य का बोध।
मन अनुमोदन दोष मिटावें, भक्त चरण में शीश झुकावें॥१२॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपने पक्ष केवल विचार, सत्य धर्म का किया प्रचार।
वचकृत सत्य का साधक [illegible], आप-आप आया भाव नवीन॥१३॥

ॐ ह्रीं वचनकृतस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नहिं असत्य के दोष विचार, सत्य वचन ही नित बुलवावें।
वच कारित का दोष हटावें, भक्त चरण में शीश झुकावें॥१४॥

ॐ ह्रीं [illegible] श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

झूठी बात अनुमोद न करते, [illegible] का पालन करते।
[illegible]॥१५॥

ॐ ह्रीं [illegible] श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

[illegible]
[illegible]॥१६॥

ॐ ह्रीं [illegible] श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

[illegible]
[illegible]॥१७॥

ॐ ह्रीं [illegible] श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया अनुमोदन के त्यागी, सत्य से निज आत्म है जागी।
काया अनुमोदन न करें, सत्य धर्म पर ही दृढ़ रहें॥१८॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितस्वपक्षदोष-विवर्जितसत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर पक्ष दोष विचार

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के...)

पर पक्ष में दोष है जाना, मन उसमें नाहीं लगाना।
मनकृत दोषों को धोया, शुभ कर्म बीज को बोया॥१९॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपरपक्षदोषवर्जित सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर पक्ष दोष न दिखावें, नाहीं अपने मन लावें।
मन कारित दोष को धोया, शुभ कर्म बीज को बोया॥२०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपरपक्षदोषवर्जित सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोद न दोष का करते, दोषों से दूर ही रहते।
मन शुद्धि पूर्ण कराई, कराई, हमने प्रभु भक्ति बढ़ाई॥२१॥

ॐ ह्रीं मनोनुमतपरपक्षदोषवर्जित सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर पक्ष दोष है जाना, वचनों से नाहीं बखाना।
वचकृत दोषों को धोया, पापों का ढेर खोया॥२२॥

ॐ ह्रीं वचोकृत-विदित-परपक्ष-दोषवर्जित-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर पक्ष के दोष न करावें, पर वचन से नाहीं गिनावें।
वच कारित दोष मिटाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया॥२३॥

ॐ ह्रीं वचनकारित-परपक्ष-विवर्जित-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर दोषों का अनुमोदन, वचनों से किया है मोचन।
वचनों में संयम लाया, सत्धर्म का नीर बहाया॥२४॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदित-परपक्ष-विवर्जित-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पर पक्ष पक्ष न लेते, काया भी संयम करते।
काया कृत दोष निवारे, सत्धर्म से आत्म सँवारे॥२५॥

ॐ ह्रीं कायकृत-परपक्ष-विवर्जिताय-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ना करती ना करवाती, दोषों को दूर भगाती।
बाधा काया ना डाले, सद्धर्म के हैं रखवाले ॥२६॥

ॐ ह्रीं कायकारित-परपक्ष-विवर्जिताय-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदन नाहीं किया है, काया ने धर्म जिया है।
काया के दोष निवारे, निज आतम नित्य निहारे ॥२७॥

ॐ ह्रीं कायानुमत-परपक्ष-विवर्जिताय-सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पैशून्य दोष रहित विचार

चाल छंद

पैशून्य का मतलब चुगली, बातें यहाँ की वहाँ कर ली।
मन भाव से इसे हटाओ, वरना कलेश दुख पाओ ॥२८॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पैशून्य बनेगा संकट, न होता धर्म से निकट।
यह बड़ी बुराई कहाये, जिनवर जी ही बतलाये ॥२९॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चुगली की करे अनुमोदन, बनता है पाप का भाजन।
महाव्रत में दोष है लगता, पापों का रेला लगता ॥३०॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतपैशून्यदोषरहिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से से चुगली गाई, महाव्रत में दोष लगाई।
भावों को विमल बनाना, चुगली का त्याग है करना ॥३१॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ना करता नाहीं कराये, आतम का रूप सुहाये।
आतम का हित यदि चाहो, जिनवर के गुण को गाओ ॥३२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वर सत्य धर्म को ध्याना, अनुमोदन भी ना करना।
यह अशुभ भाव बतलाया, तजने को शीश झुकाया ॥३३॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चुगली दे बाद में चिन्ता, यह दुख का कारण बनता।
काया का इशारा छोड़ा, निज आतम से मन जोड़ा ॥३४॥

ॐ ह्रीं कायकृतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चुगली कभी युद्ध कराये, भारी हिंसा करवाये।
चुगली को त्यागों भाई, जिनधर्म समझ में आई ॥३५॥

ॐ ह्रीं कायकारितपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शुभ सत्य महाव्रत उत्तम, देता है है पद परमातम।
इससे पैशून्य को छोड़ो, और सत्य से नाता जोड़ो ॥३६॥

ॐ ह्रीं कायानुमतपैशून्यदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रोध दोष रहित विचार

चाल छंद

मन में यदि क्रोध जो आया, आतम अशुद्ध करवाया।
मनकृत इस क्रोध को तजना, जिनदेव गुणों को भजना ॥३७॥

ॐ ह्रीं मनः कृतक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी और को क्रोध कराये, मन में यूँ भाव बनाये।
तब सत्य में दोष लगाये, इसे तजो तो मुक्ति पाये ॥३८॥

ॐ ह्रीं मनकारितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी क्रोध का यदि अनुमोदन, मन दूषित पाप का भाजन।
अनुमोदना भी दुखदाई, तजके आतम हर्षाई ॥३९॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है वचन क्रोध जहरीला, जो क्रोध करें हो नीला।
वचनों को संभाल के राखो, फिर शांति का सुख चाखों ॥४०॥

ॐ ह्रीं क्रोधवचनकृतरहिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सत्व्रत का दूषण क्रोध, होने देता न बोध।
यह होता सत्य में बाधक, शुभ क्षमा धर्म है साधक ॥४१॥

ॐ ह्रीं वचनकारितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

चारित में दोष बताया, यदि अनुमोदन भी भी पाया।
चारित को शुद्ध बनाना, इस क्रोध को दूर भगाना ॥४२॥

ॐ ह्रीं वचनोनुमोदितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जब क्रोध प्रगट होता है, तन पर भी यह दिखता है।
काया कृत क्रोध हटाया, कर्मों का बंध छुड़ाना ॥४३॥

ॐ ह्रीं कायकृतक्रोधभावदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्रत को यह दूर भगावे, काया जब क्रोध दिखावे।
तन कारित क्रोध ना करना, पापों का रेला हरना ॥४४॥

ॐ ह्रीं कायकारितक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सम्यग्दर्शन यदि पाना, तो क्रोध भाव को हरना।
सच्चा सुख तब ही आवे, जीवन में शांति छावे ॥४५॥

ॐ ह्रीं कायानुमतक्रोधवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

लोभ दोष रहित विचार

चाल छंद

मन में जब लोभ है आये, कुछ पाने भाव बनाये।
मन चिंतन चिंता करता, पर धर्म से इसको हरता ॥४६॥

ॐ ह्रीं मनःकृतलोभवचनदोषविवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तृष्णा करता करवाये, इसमें ही पाप कमाये।
मन कारित लोभ भगाना, यदि आतम शुद्ध बनाना ॥४७॥

ॐ ह्रीं मनकारितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

कोई लोभी सामने आये, उसकी अनुमोद न गाये।
मन अनुमोदन को त्यागा, क्योंकि आतम में है जागा ॥४८॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमतियुक्तिलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से वस्तु माँगे, जब लोभ ज्यादा है जागे।
वचकृत इस लोभ को त्यागो, निज आतम में चित पागो ॥४९॥

ॐ ह्रीं वचनकृतलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

तृष्णा के वचन निराले, मीठे बन जाले डाले।
यह लोभ दुखों का जाला, लोभी ही पहने माला ॥५०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

कोई देखे देखे अच्छी वस्तु, करते हैं प्रशंसा अस्तु।
अनुमोदन पाप कराये, इससे बचने को आये ॥५१॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमतिसंयुक्तलोभवचनदोष-रहिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन में जब लोभ है आये, काया ये वस्तु उठाये।
करके इकट्ठी वो राखे, और पाप पुण्य ना देखें ॥५२॥

ॐ ह्रीं कायकृतलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

मन लोभ जो मन में छावे, औरों से इकट्ठी करावें।
तन कारित लोभ को छोड़ो, नाता आतम से जोड़ो ॥५३॥

ॐ ह्रीं कायाकारितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

काया अनुमोदना तजना, और लोभ पाप से बचना।
यह लोभ जगत भरमावें, इसे तजने भाव बनावें ॥५४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितलोभवचनदोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आत्म प्रशंसा दोष रहित वचन

भुजंग प्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

निज की प्रशंसा, तो अच्छी ना होती, आता अभिमान, पुण्यों की खोती।
इसे मन से त्यागो, तो सत्य मिलेगा, सत्य धरम फूल, मन में खिलेगा ॥५५॥

ॐ ह्रीं मनःकृतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निज की प्रशंसा, कषाय है जागें, न मन से करें, और ना ही कराये।
सत्य की घातक है, निज की प्रशंसा, प्रभुने कहा है, इसको ना करना ॥५६॥

ॐ ह्रीं मनःकारितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रशंसा जो निज की, अशुभ बंध होता, पर गुण प्रशंसा से, शुभ बंध होता।
अनुमोदन मन से, जो नाहीं है करता, सत्य व्रत ही, पालन वो करता ॥५७॥

ॐ ह्रीं मनोनुमतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से निज की, प्रशंसा ना गाये, न कहके किसी से, वो फूला समाये।
अनुमोद मन से, जो नाहीं है करता, सत्य व्रत ही, पालन वो करता ॥५८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

निज की प्रशंसा, न गाने को कहता, रहे शांतमन में, वचन शांत रखता।
वचनों में, संयम धरम से किया है, तभी सत्य भाव को, उर में लिया है ॥५९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रशंसा करे कोई, ना अनुमोद करता, प्रशंसा के भाव को, मन से हटाता।
प्रशंसा करे पुण्य, कमही है होता, व्यर्थ में पुण्य का, धन क्यों है खोता ॥६०॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रशंसा जो होगी, तो कार्य है करता, करे कार्य ऐसा, तो दोष है लगता।
जो कुछ किया है, स्वयं के लिए है, प्रशंसा के भावों को, छोड़ दिए है ॥६१॥

ॐ ह्रीं कायकृतात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपनी प्रशंसा सुनने को छोड़ा, क्योंकि आतम से नाता है जोड़ा।
दोषों को छोड़ा, बने आप भगवन्, करूँ पूजा तेरी रहूँ तेरे चरणन् ॥६२॥

ॐ ह्रीं कारितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रशंसा कराने को, कार्य कराये, सुन के प्रशंसा, फूला ना समाये।
जिनवर ने इसको भी, दोष बताया, तजने प्रभुवर की, शरणा में आया ॥६३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितात्मप्रशंसादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

परनिन्दा त्याग विचार

अनुमोदना में जन, सिर को हिलाते, पर काया को जिनवर जी वश में ही रखते।
करम दौड़ के आत्मा में चिपकता, फल देके पूरा मुश्किल से निकलता ॥६३॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पाप की जड़, अभिमान बताया, पापों की सेना को लेकर के आया।
पर की निन्दा वो, भाव बिगाड़े, सत्य महाव्रत ही, निज को सुधारे ॥६४॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पर की हो निन्दा, अनुमोद करता, इससे भी पापों का, है रेला है आता।
आतम से प्रीति, करो धर्म प्रेमी, करो कर्म खंडन, ले सत्य की छैनी ॥६५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से पर की, जो निन्दा करोगे, स्वयं से स्वयं का, मुँह गंदा करोगे।
जिस मुख से प्रभुजी का, नाम है लीना, उस मुख को सत्य से, साफ है रखना ॥६६॥

ॐ ह्रीं वचनकृत परनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निन्दा करे खुद औरो से कराये, समझे न सत्य, असत्य बुलायें।
जिनवर ने हम पर, उपकार है कीना, तभी सत्य ज्ञान, भगत को है दीना ॥६७॥

ॐ ह्रीं वचनकारित परनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

करे और निन्दा तो अनुमोद करते, निन्दा कथा में, शामिल हैं होते।
करें कान गंदा औ, मन को करावें, करें पाप बंध, ये जिनवर बतावे ॥६८॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमतपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

करके इशारा भी, निन्दा करी है, पापों की जड़, इससे होती हरी है।
काया संभार के, सत्य संभारों, तजो गर्व जिनरूप, आतम निहारो ॥६९॥

ॐ ह्रीं कायकृतपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्ञान हमें, सत्य राह दिखाये, मोह से इसको, समझ ही न पाये।
इससे ही निन्दा, बुराई है करते, उम्र बड़ी है, पर गलती है करते ॥७०॥

ॐ ह्रीं कायकारितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-

प्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से संयम, जरूर है लेना, पर निंदा अनुमोद, नहीं है करना।
निंदा का फल, नीच गोत्र बताया, करम ने सभी, जीवों को है सताया ॥७१॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपरनिन्दादोष-विवर्जिताय सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

पर की निंदा पाप है, निंदा से रहो दूर।
प्रभु शरण में बैठ जा, होवे सुख भरपूर ॥७२॥

ॐ ह्रीं द्विसप्ततिमलातीत-सत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

दोहा

सत्य सूर्य को पाना है, सत्य महाव्रत धार।
आतम सत्य मिल जायेगा, है जीवन का सार॥

गीत चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

हे सत्य धर्म धारी, तुम्हें नमस्कार है।
हे सत्य ज्ञानधारी, तुम्हें नमस्कार है॥
दें सत्य का उपदेश, तुम्हें नमस्कार है।
हो सत्य मयी आत्म मेरा नमस्कार है॥१॥

सर्वप्रथम मन में, सत्य भाव आयेगा।
जो आत्मा को अंतरंग, से जगायेगा॥
सत्य को पाने का मार्ग, खुद से मिलेगा।
कुछ भी करो, जागना आतम को पड़ेगा॥२॥

मन्दिर में बैठी सत्य की, मूरत को निहारो।
पाया है परम सत्य, पाने तुम भी विचारो॥
दर्शन करोगे ध्यान से तो, सत्य दिखेगा।
बस सत्य नयन खोलो, द्वार सुख का मिलेगा॥३॥

सत्य ने जीवों को है, भगवान बनाया।
भगवान ने अनंत सौख्य, सत्य का पाया॥
जो सुख की कामना, तुम्हारे मन में है आई।
तो सत्य साथ रखो, करो न पर की बुराई॥४॥

क्रम-क्रम से सत्य साधना का मार्ग बताया।
प्रथम है सत्य अणुव्रत, अनुपम बताया॥
इसको साधना से करो, फिर महाव्रत धरो।
औ सत्य महाव्रत से ही, मुक्ति को वरो॥५॥

कठोर और कटु सत्य, सत्य न होता।
प्रियवाणी औ हितकारी, वह सत्य बताता॥
क्रोध मान माया लोभ, को असत् कहा।
हिंसा झूठ के वचन भी असत् है कहा॥६॥

जिस कार्य औ वचन में, अहिंसा बताती है।
उसमें ही सत्य साथ रहें, होगी भलाई है॥
सत्य शिव है आत्मा, सुन्दर भी है कहा।
वह सत्य आँख से दिखे, ये बात है सही॥७॥

त्रिभंगी

हमें सत्य है पाना, सत्य को ध्याना, सत्य धर्म है सुखकारी।
बिन सत्य जगत में, भ्रमे जगत में, है असत्य ही दुखकारी॥
पूजा जिन पाया, ध्यान लगाया सत्य सूर्य प्रगटाया है।
करें जो विधान को, है महान वो, चरणों अर्घ्य चढ़ाया है॥

ॐ ह्रीं द्विसप्ततिमलातीत सम्पूर्णसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...। स्वाहा।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अचौर्य महाव्रत पूजा

गीता छंद (तर्ज-प्रभु पतित पावन...)

स्थापना

पावन करें आतम को यह व्रत, साधना इसकी करें।
बस ज्ञान को ही धन समझते, आत्मा निर्मल करें॥
भावों की शुद्धि हेतु व्रत को, धारना है हृदय में।
संयम नियम व्रत के बिना, बेकार जीना जगत में॥

दोहा

व्रत अचौर्य को पालकर, भगवन बने थे आप।
इसीलिये पूजा करूँ, औ करते हैं जाप॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिन अत्र अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिन अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद (तर्ज-प्रभु पतित पावन...)

साथ कुछ भी लाया ना, कुछ लेके ना मैं जाऊँगा।
यह भ्रम हुआ इसे तोड़ने, शरणा मैं तेरी आऊँगा॥
मेरा नहीं जो, उसको मेरा कहना चोरी भाव है।
हम व्रत अचौर्य की पूजा करते, यह आत्म का स्वभाव है॥१॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

आतम को जाने, पर को समझे, तो समझ में आयेगा।
मैं आत्मा हूँ, जड़ नहीं, तो मन न पर में जायेगा॥
हम जाने अनजाने में चोरी, करके कर्म बुलाते हैं।
अब व्रत अचौर्य को पूजकर, चंदन चढ़ाने आते हैं॥२॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं...।

पर से अपेक्षा खूब करते, दुख ही दुख तब पाया है।
आत्म में झाँको जरा, सुख सिन्धु ही लहराया है॥
अक्षयपुरी के नाथ की, पूजा करूँ अक्षत चढ़ा।
अक्षय सुखी भगवान मेरे, सारा जग कहता बड़ा॥३॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

सौंदर्यता माधुर्यता, जग जीव को है लुभावती।
सुन्दर नहीं आतम से ज्यादा, बात क्यों ना समझती॥
आतम की खुशबू ज्ञान से, भक्तों को पास बुलावती।
पुष्पों से पूजा मैं करूँ, जिन मूर्ति मन को भावती॥४॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं...।

पेट ने भोजन किया, पर मन तो ज्यादा खाता है।
व्यंजन से पेट दुखी हुआ, स्वादों को मन ही माँगता है॥
संयम नियम प्रभु जी बताते, पालना ही चाहिये।
जिनराज की आराधना का भाव मन में भाइये॥५॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

बाहर उजाला है मगर, खुली आँख भी तो चाहिये।
आतम का दर्शन पाना है तो, ज्ञान चक्षु चाहिये॥
यह ज्ञान तो दो काम करता, रोशनी चक्षु बने।
दीपक से पूजूँ नाथ तुमको, सौख्य पायेंगे घने॥६॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

मृत्यु दिशा में बढ़ रहे कर्मों का फल है भोगते।
नश्वर जगत की माया है, पर मोह नींद में सोचते॥
चारित्र शुद्धि विधान से, कर्मों को दूर ही करना है।
मैं धूप से पूजूँ प्रभो, भव पार हमको जाना है॥७॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

इन्द्रिय सुखों की प्राप्ति हेतु, पूजा का फल चाहते।
निज आत्मा की शांति हेतु, भाव न हम भावते॥
जब हो विचारों में विशुद्धि, मन अशुद्धि दूर हो।
फल से पूजूँ नाथ तुमको, सौख्य मम भरपूर हो॥८॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

दुख के जालों में घिरा, इससे निकलना चाहता।
कुछ तो प्रभो रास्ता दिखाओ, शांति मैं भी चाहता॥
चारित्र शुद्धि विधान से, हमें भक्ति का रास्ता मिले।
मैं अर्घ्य से पूजो प्रभो, मन भाव की कलियाँ खिले॥९॥

ॐ ह्रीं चौर्यपरित्यागयुक्त श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ग्रामाश्रित नवभेद

तर्ज-चौबीसी पूजा (जल फल आठें...)

गाँवों में वस्तु जो होय, बिन दिये ना लेते।
बिन दिये यदि ले ले, चोरी दोष ही होते॥
मन से करते उसे त्याग, चारित्र शुद्ध है।
पापों का रेला दूर, धर्म में वृद्धि है ॥१॥

ॐ ह्रीं मनकृतः ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

औरों से ही उठवायें, ऐसे भाव ना हो।
मन में संयम धर शुद्ध, धर्म प्रभावना हो॥
चोरी करवाने का त्याग, मन से दूर किया।
चारित्र शुद्धि व्रत धार, धर्म को धार लिया॥२॥

ॐ ह्रीं मनकारित ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चोरी करता कोई और ना ही प्रशंसा की।
अनुमोदन में है पाप, नाहीं शंका की॥
चारित्र शुद्धि व्रत धार, भाव को शुद्ध किया।
जीवन का लक्ष्य है धर्म, इससे प्रबुद्ध किया॥३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हैं वचन चोरी के पाप, ऐसा ना जाना।
चारित्र शुद्धि व्रत धार, तुमको है माना॥
वचकृत चोरी का त्याग करने आया हूँ।
शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ॥४॥

ॐ ह्रीं वचनकृत ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उपदेश चोरी का देय, खुद न करते हैं।
दोषों के भागी होय, भव न तरते हैं॥
वच कारित चोरी त्याग, करने आया हूँ।
शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकारित ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों को रखे सम्हाल, न अनुमोद किया।
इसमें भी है शुभ धर्म, पाप से बचे जिया॥

अनुमोदन चोरी का त्याग, करने आया हूँ।
शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ॥६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बिन पूछे वस्तु ना ले, जिस भी गाँव रहे।
भले गाँव साथ में होय, ये जिनराज कहे॥
कायाकृत चोरी का त्याग करने आया हूँ।
शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृत ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी और से ना उठवायें, कोई इशारा कर।
मालिक से पूछे बिना, रहते स्वयं नगर॥
काया कारित चोरी, त्यागने आया हूँ।
शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ॥८॥

ॐ ह्रीं कायकारित ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया अनुमोदे ना, चोरी अच्छी की।
काया पर संयम धार, धर्म में वृद्धि की॥
अनुमोद चोरी का त्याग, करने आया हूँ।
शक्ति दो मुझको नाथ, शीश झुकाया हूँ॥९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित ग्रामचौर्यविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वनाश्रित नवभेद

जग में सुन्दर वस्तु, मन ना डिगता है।
लेने के भाव न हो, धर्म को धरता है॥
मनकृत चोरी का भाव, पाप को बुलवायें।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आयें॥१०॥

ॐ ह्रीं मनःकृत वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जंगल है बहुत घना, कोई नहीं देखें।
वस्तु लेने के भाव फिर भी नहीं होते॥
मन कारित चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये॥११॥

ॐ ह्रीं मनःकारित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्तु कोई और जो ले, मन ना अनुमोदे।
मन में है लगाया ध्यान, आतम को शोधे॥
मन अनुमोदन चोरी, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने को आये॥१२॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चोरी के वचन न बोल, दोष हटाते हैं।
वचनों में संयम धार, दोष मिटाते हैं॥
वचकृत चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये॥१३॥

ॐ ह्रीं वचनकृत वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्तु से ममता छोड़ आतम ध्याते हैं।
वन में रहकर के नाथ, धर्म निभाते हैं॥
वच कारित चोरी भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये॥१४॥

ॐ ह्रीं वचनकारित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अंदर बैठा है मोह, अनुमोदन करता।
अच्छे से चोरी की, वचनों से कहता॥
अनुमोदन चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये॥१५॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वन के मालिक को पूछ, वस्तु लेते हैं।
बिन पूछे नाही उठाये, परिषह सहते है ॥
काया कृत चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये॥१६॥

ॐ ह्रीं कायकृत वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की माया अपार, इच्छायें करती।
काया पर संयम आये, पुण्यों को भरती॥
तन कारित चोरी का भाव, पाप को बुलवायें।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये॥१७॥

ॐ ह्रीं कायकारित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यह बहुत बड़ी है बात, ना अनुमोद करे।
चारित्र हृदय में धार, धर्म को नित्य करे॥
अनुमोद चोरी का भाव, पाप को बुलवाये।
कर त्याग बने गुणवान, गुण पाने आये॥१८॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित वनचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

खलाश्रित नवभेद

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के लोगो...)

मनकृत खल वस्तु त्यागी, वे आतम के अनुरागी।
मनकृत यह दोष हटाया, जिन आतम गुण को ध्याया॥१९॥

ॐ ह्रीं मनःकृतखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मनकारित दोष को धोया, औ त्याग बीज को बोया।
कर व्रत अचौर्य का पालन, बन गये मुक्ति के लालन॥२०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोद भाव तज दीना, बस आतम ध्यान को कीना।
मन पावन शुद्ध बनाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया॥२१॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे ग्रहण वचन न बोले, मुक्ति के द्वार को खोले।
वचकृत दोषों के त्यागी, आतम ध्यानी बड़भागी॥२२॥

ॐ ह्रीं वचनकृतखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

खल से छोड़ी है ममता, और त्याग से आयी समता।
वचकारित समता धारी, नहिं आये भाव विकारी॥२३॥

ॐ ह्रीं वचनकारितखलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों में संयम आया, वचनों को शुद्ध बनाया।
अनुमोद वचन न बोले, वे निज आतम में डोले॥२४॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

खल तो है वस्तु पराई, इन्हें आतम की सुधि आई।
कायाकृत दोष को छोड़ा, आतम से नाता जोड़ा॥२५॥

ॐ ह्रीं कायकृत खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया पर संयम छाया, नहि परिग्रह ने भरमाया।
न लेते और न देते, वे व्रत अचौर्य को धरते॥२६॥

ॐ ह्रीं कायकारित खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे भूल से भूल न करते, हृदय से परिग्रह तजते।
खल दोष भाव को त्यागा, हम चरणों झुकाये माथा ॥२७॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित खलाचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एकान्त आश्रित नवभेद

अडिल्ल छंद (मीठे-मीठे बोल...)

वे एकान्त जगह पर, जब भी जाते हैं।
मन को करके शुद्ध, आत्म को ध्याते हैं ॥
वहाँ वस्तु जो होय, ध्यान न दीना है।
मनकृत दोष निवार, धर्म को लीना है॥२८॥

ॐ ह्रीं मनःकृतैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शून्य जगह भी रहे, आत्म न भूलते।
इसीलिये गुणवान, कष्ट न कूलते॥
वहाँ वस्तु जो होय, ध्यान न दीना है।
मनकृत दोष निवार, धर्म को लीना है॥२९॥

ॐ ह्रीं मनःकारितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सूना है स्थान, आत्म को वश किया।
चोरी का ना भाव, जरा आने दिया॥
वहाँ वस्तु जो होय, ध्यान ना दीना है।
अनुमोदन दोष निवार, धर्म को लीना है॥३०॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सूना है स्थान, कोई न देखे है।
वचनों से न कहे, चोरी न लेखे है ॥
वचकृत चोरी त्याग, आत्म पावन करें।
चारित्र शुद्धि हेतु, नियम को आचरें॥३१॥

ॐ ह्रीं वचनकृतैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्ञान माला को लेय, आत्म को ध्याया है।
वचनों में है मंत्र, वचन सुध पाया है ॥
वच कारित चोरी तज, निज पावन करें।
चारित्र शुद्धि हेतु, नियम को आचरें॥३२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ना करते हैं स्वयं करें ना अनुमोदना।
ऐसे पावन भाव, करें हम अर्चना॥
ऐसे भाव बना के, ही भगवान बने।
पाया सौख्य अपार, ध्यान में हैं सने॥३३॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रहते हैं एकान्त, ध्यान के कारणें।
आत्म विजयी बन, स्वयं जगत से तारने॥
काया से किया ध्यान, पाप से दूर है।
हित औ अहित विचार, ज्ञान भरपूर है॥३४॥

ॐ ह्रीं कायकृतैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्तु उठने तन, प्रयोग न करते हैं।
तन पर संयम रख, कर्म को हरते हैं॥
तन से किया है ध्यान, पाप से दूर है।
हित औ अहित विचार ज्ञान भरपूर है॥३५॥

ॐ ह्रीं कायकारितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुक्ति पथ का, काय इशारा करती है।
चोरी इशारा त्याग, कर्म को हरती है॥
तन से किया है ध्यान, पाप से दूर हैं।
हित औ अहित विचार, ज्ञान भरपूर हैं॥३६॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितैकान्तचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अन्यत्र कृतादि नवभेद

चाल छंद

पर्वत गुफा श्मशान, कोटर औ अन्य स्थान।
ना भाव चोरी का बनाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया॥३७॥

ॐ ह्रीं मनःकृतान्यत्रजातचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्तु हो कोई पराई, अपने मन में ना लाई।
यह व्रत अचौर्य कहलाया, चरणों अर्घ्य चढ़ाया॥३८॥

ॐ ह्रीं मनःकारितन्यत्रजातचौर्यदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्थान चाहे कोई हो, वस्तु चाहे खोई हो।
अनुमति बिना ना लेते, चोरी का त्याग वे करते ॥३९॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचनों को शुद्ध बनाया, चोरी का वचन न गाया।
वच कृत चोरी के त्यागी, क्योंकि निज आतम जागी ॥४०॥

ॐ ह्रीं वचनकृतान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

मन का कालापन धोया, चोरी का भाव न आया।
वच कारित चोरी के त्यागी, क्योंकि निज आतम जागी ॥४१॥

ॐ ह्रीं वचनकारितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

कोई वस्तु मे ना आशा, इससे ना होय निराशा।
अनुमोदन चोरी की त्यागी, क्योंकि निज आतम जागी ॥४२॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

आतम ही है बस मेरा, पर वस्तु से दुःख घनेरा।
बिन पूछे न वस्तु उठाते, वे व्रत अचौर्य अपनाते ॥४३॥

ॐ ह्रीं कायकृतान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

पर वस्तु से मोह हटाने, वे निज आतम पहचाने।
काया वस्तु न उठाये, वे व्रत अचौर्य में आये ॥४४॥

ॐ ह्रीं कायकारितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अपनी आतम जब भायी, पर वस्तु से प्रीत हटायी।
अनुमोदना भी ना कीनी, दृष्टि अचौर्य में दीनी ॥४५॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितान्यत्रचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

उपधि आश्रित नवभेद

चाल छंद

उपाधि परिग्रह को कहते, मन भ्रमित हो पाप को करते।
मन से है वस्तु त्यागी, जब अपनी आतम जागी ॥४६॥

ॐ ह्रीं मनःकृतोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

कर घर दुकान की चोरी, पापों की सेना घनेरी।
सब छोड़ यही पर जाना, फिर मन को क्यों भरमाना ॥४७॥

ॐ ह्रीं मनःकारितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सोने में मोह फँसा है, आभूषण पाके हँसा है।
सोने का मोह भी छोड़ो, निज आत्म से नाता जोड़ो ॥४८॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

चाँदी को कीमती माना, वचनों से उसे चुराना।
ऐसा कह पाप कमाया, ना सत्य समझ में आया ॥४९॥

ॐ ह्रीं वचनः कृतोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

करते अनाज की चोरी, भरते पापों की झोली।
अब पुण्य कहाँ से आये, ना व्रत अचौर्य अपनाये ॥५०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

जो सम्पति का दीवाना, निज आतम न पहचाना।
इससे ही भाव बिगाड़े, अब धर्म से भाव सुधारे ॥५१॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

बाह्यान्तर चोरी त्यागी, जिन देव तो हैं वीतरागी।
अनुमोदन भी न करते, निज ध्यान लीन ही रहते ॥५२॥

ॐ ह्रीं कायाकृतोपधिणनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

परिग्रह जग में भटकाये, भव - भव में हमें रूलाये।
जब तक ना मोह तजेंगे, नहिं आतम राम भजेंगे ॥५३॥

ॐ ह्रीं कायकारितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

बर्तन की चोरी त्यागो, क्यों पाप पंथ में लागो।
मन में धरना संतोष, मिल जाये सुखों का कोष ॥५४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितोपधिजनितचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अनुक्त आश्रित दोष

चाल छंद

जिस वस्तु को न कह पायें, चोरी के भाव बनायें।
यह अनुक्त दोष भी त्यागा, निज आतम में मन पागा ॥५५॥

ॐ ह्रीं मनःकृतानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

मन बिना पांव के भागे, वस्तु चोरी कर लावें।
संग पाप साथ में लावें, आतम को दुःख दिखावें ॥५६॥

ॐ ह्रीं मनःकारितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अनुमोदन मन के द्वारा, पापों का लिया सहारा।
इसलिये कष्ट को पायें, दुख दूर हो पूजा गायें ॥५७॥

ॐ ह्रीं मनोऽमोदितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

बिन सूचना वस्तु न लेवें, वे व्रत अचौर्य धर लेवें।
वचनों का दोष हटाया, मैं शरण आपकी आया ॥५८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वे भूल से भूल न करते, चोरी के वचन न कहते।
वचनों का दोष हटाया, वचनों में धरम निभाया ॥५९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अधिकृत वस्तु को जाना, उसको अपना न माना।
वे वचन शुद्ध ही बोले, वचनों में अमृत घोलें ॥६०॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

बिन अनुमति वस्तु न लेते, नाहीं अधिकार जताते।
आतम में तन्मय होकर, तन चोरी भाव को खोकर ॥६१॥

ॐ ह्रीं कायकृतानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तुम ले लो कोई कहे ना, वस्तु लेते तब तक ना।
इस अनुक्त दोष के त्यागी, श्री जिनवर है बड़भागी ॥६२॥

ॐ ह्रीं कायकारितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तन को संस्कारित कीना, तन अनुमोदना ना कीना।
काया भी धर्म करावे, पापों से दूर भगावे ॥६३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितानुक्तपरिग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सम्पुष्टा ग्रहण नवभेद

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के...)

शक्ति को दिखा के पूछा, पर वस्तु पथ कूचा।
मन से इस चोरी को त्यागो, आतम स्वभाव में जागो ॥६४॥

ॐ ह्रीं मनःकृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

बलपूर्वक वस्तु छीने, चोरी में हुआ प्रवीन।
मन कारित दोष हटाने, भावों को शुद्ध बनाने ॥६५॥

ॐ ह्रीं मनःकारितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सूचना पहले ही दे दी, फिर बाद में वस्तु ले ली।
भावों में दोष लगाया, प्रभु दूर करन को आया ॥६६॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितः कृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

बल पूर्वक वचन जो बोले, फिर वस्तु को हर लेवें।
वचनों से चोरी करता, मन पाप भाव से भरता ॥६७॥

ॐ ह्रीं वचनकृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचनों से उसे डराया, फिर द्रव्य है उसका हराया।
वे वचन हिंसा कहलाये, वच का दुरुपयोग कहायें ॥६८॥

ॐ ह्रीं वचनकारितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सम्पुष्ट द्रव्य हर लीना, उसमें अनुमोदना कीना।
हिंसा अनुमोदन भाई, ये बड़ा महा दुख दाई ॥६९॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

पर वस्तु को हर लीना, फिर उसको धमका दीना।
ताकत से उसे सताया, तजने का भाव बनाया ॥७०॥

ॐ ह्रीं कायकृतसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अपहरण किया वस्तु का, और भार लिया पापों का।
पापों ने है उलझाया, त्यागूँ ये भाव बनाया ॥७१॥

ॐ ह्रीं कायकारितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अनुमोदना चोरी की कीनी, ताकत की बड़ाई कीनी।
इसमें ही भाव बिगाड़े, प्रभु पूजा इसे सुधारे ॥७२॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितसम्पुष्टग्रहचौर्यदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

महार्घ्य

शंभू छंद

पर वस्तु में जब मोह बढ़े, आतम में मूर्च्छा छा जाये।
मन चोरी जैसा पाप करें, काया भी संग में हो जाये॥
प्रभु ने अचौर्य व्रत धारण कर, कर्मों का नाश कराया है।
इससे जिनदेव की पूजा की, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया है॥

ॐ ह्रीं **पूर्ण अचौर्यव्रत परिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

त्रिभंगी छन्द

चोरी ना करना, पाप को तजना, भाव शुद्ध हो जायेंगे।
जितना है पास में, जीने आस में, उतना बहुत बतायेंगे ॥
पुण्यो की छया, धन बरसाया, धर्म ध्यान को रोज करो।
प्रभुवर की भक्ति, कर अभिव्यक्ति, पाप कर्म को शीघ्र हरो॥

शेर चाल

(तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

संपूर्ण संग त्यागी, तुम्हें नमस्कार है।
आतम है वीतरागी, तुम्हें नमस्कार है॥
आठों करम के नाशी, तुम्हें नमस्कार है।
भक्तों के हो विश्वासी, तुम्हें नमस्कार है ॥१॥

मोह से मोहित है प्राणी, पर ना मानता।
संग्रह करें जग वस्तु, अपनी बात तानता॥
लालच बढ़े तो चोरी, और डाका भी डाले।
हिंसा भी करें मारे पीटें, जान निकाले॥२॥

दूजे की वस्तु बिना दिये, लेना है बुरा।
घर की हो नगर गाँव की, मानुष बने बुरा॥
चोरी करके कोई भी, राजा नहीं बना।
और न बना वो सेठ, छिपता फिरे घना॥३॥

तृष्णा करायें चोरी, या गरीबी कराती।
होता अचौर्य व्रत नहीं, पापी है बनाती॥
निज भाव को संभालना, ये वरना बिगाड़ें।
तुम धर्म पंथ में लगो, आतम को सुधारे॥४॥

मन की वचन की काय की, चोरी को है त्यागा।
तब ही करम को नाश, मुक्ति में किया वासा॥
गुणवान औ भगवान है, आतम विशुद्ध है।
संसारी में चोरी के भाव, आत्म अशुद्ध है॥५॥

मंगल करें कल्याण भी, भगवान हमारे।
जिनमूर्ति भी उपदेश दें, भव्यों को है तारे॥
संसार की सब वस्तुओं से, राग को त्यागा।
आतम का ध्यान तब ही, अचौर्य में लागा॥६॥

प्रभु आपके शरण में आके, भाव सुधारे।
निर्मल हुआ ज्ञान, और निज को निहारे॥
दाता पवित्र ज्ञान के, उपदेश दीजिये।
भटकूँ न मैं संसार में, शरणा में लीजिये॥७॥

दोहा

चोरी त्याग की भावना, हुई मेरी जिनदेव।
'स्वस्ति' भक्ति कर रही, करी चरण की सेव॥८॥

ॐ ह्रीं परमपूर्णाया चौर्यव्रतपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सावधान जीवन जिऊँ, ऐसा कोई उपाय।
जिनवर मुझको दीजिये, चरणों शीश झुकायें॥९॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

ब्रह्मचर्य महाव्रत पूजा

स्थापना

गीता छंद (तर्ज-प्रभु पतित पावन...)

ब्रह्म पाने के लिये शुभ ब्रह्मचर्य को धारते।
निज आत्मा से प्रीति करते, बाह्य प्रीति निवारते॥
ब्रह्म को पावन बनाना, तो ब्रह्मचर्य को धारना।
मन शुद्ध हो तन शुद्ध हो, इसमें कभी भी न हारना॥

दोहा

पूर्ण ब्रह्मचर्य को धरा, आतम ध्यान लगाय।
इसी को पा मुक्ति गये, पाने शीश झुकायें ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्त श्रीजिन अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्त श्रीजिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्त श्रीजिन अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

नाराच छंद (तर्ज-नीर गंध अक्षतान.....)

मन कषायों से भरा, अशुद्ध आत्म हो रही।
पूजा प्रभु की करके ही, वो धर्म बीज बो रही॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, करने का ही भाव ये।
जल से पूजा मैं करूँ, प्रभु शांत हो स्वभाव ये ॥१॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

संताप है परिताप, पर पश्चाताप है नहीं।
इसी से कष्ट है बढ़े, निज धर्म भान है नहीं॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, ब्रह्म पाने के लिये।
शांत हो प्रशांत हो, मुक्ति जाने के लिये॥२॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

शाश्वत नहीं जगत के भोग, बाद कष्ट देते हैं।
करते कष्ट को सहन भी छोड़ नहीं पाते हैं॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, ब्रह्म पाने के लिये।
अक्षतों से पूजता हूँ, सौख्य पाने के लिये॥३॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

रूप जाल में फँसे, हम पर की तरफ खिंच रहे।
आत्मा को देखा न कौड़ी मोल बिक रहे॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, आत्मा से प्रीति हो।
पुष्पचरण में चढ़ा, आत्मा की नीति हो॥४॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।

पेट के लिये है जीते, जिह्वा स्वाद माँगती।
मन वचन काया से ही, सारे जग में घूमती॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, मन की भूख शांत हो।
भूख मेटो हे प्रभो ये, आत्मा प्राशांत हो॥५॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ऐसा हो प्रकाश, जो आत्मा दिखायेगा।
आपने वो पाया है, भक्त भी वो पायेगा॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, आत्म का उजाला हो।
दीप चढ़ा पूजूँ तुम्हें, आत्म गुण निराला हो॥६॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्म जहाँ ले के जायें, हम वहीं पे जाते हैं।
न किया पुरुषार्थ धर्म, इससे दुःख पाते हैं॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, मुक्ति फल को पाना है।
फल से पूजूँ नाथ को, शरण तेरी आना है॥७॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

जग के सारे कार्य हम, फल ही पाने को करे।
पर मुक्ति फल याद नहीं, ज्ञान ध्यान न करे॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, मुक्ति फल को पाना है।
फल से पूजूँ नाथ को, शीश ये झुकाना है॥८॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य गुणयुक्त श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

मन से भक्ति, मन से ध्यान, आत्मा ये शुद्ध हो।
भाव से धरम करो तो, आत्मा प्रबुद्ध हो॥
ब्रह्मचर्य व्रत की पूजा, भाव भा के मैं करूँ।
अर्घ्य से पूजूँ तुम्हें तो, आत्मा को मैं वरूँ॥९॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यगुणयुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्घ्यावली

मनकृत भेद

चौपाई छंद

मानुष स्त्री से सुख वांछा, स्पर्श करें करते आकांक्षा।
मन में भी ना भाव बनाये, मनकृत दोष को दूर हटाये ॥१॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

रसनेन्द्रिय सुख नाहीं चाहे, मानुष स्त्री दूर हैं राहें।
मन से दूर विभाव किया है, ब्रह्मचर्य व्रत धार लिया है ॥२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

घ्राणेन्द्रिय कृत भाव को त्यागा, मन में किंचित नहीं है रागा।
शील दोष को दूर हटाये, ऐसे जिन को शीश झुकायें ॥३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

स्त्री रूप को नाहीं निहारा, ज्ञान नयन निज रूप संभारा।
पावन नयन के दर्शन पाऊँ, अपने नयन शुद्ध कर आऊँ ॥४॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीचक्षुरिन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

स्त्री राग वचन ना सुनते, आतम की ही बात को सुनते।
ब्रह्मचर्य यूँ पालन होता, वरना अपने शील को खोता ॥५॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीश्रोत्रेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

मिले देवियों का स्पर्श, भाव नहीं नाहीं संसर्ग।
मनकृत दोष को दूर किया है, निज आतम का ध्यान किया है ॥६॥

ॐ ह्रीं देवस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना का रस नाहीं लेते, आतम स्वाद को ही बस चखते।
मन से भी ना करें विचारा, आत्म ध्यान करते मन द्वारा ॥७॥

ॐ ह्रीं देवस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देव नारी सु घ्राण से राग, नाहीं करते वे अनुराग।
शुद्ध भाव है, शुद्ध विचार, शुद्ध-शुद्ध उनका आचार ॥८॥

ॐ ह्रीं देवस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लगे देवियां सुन्दर-सुन्दर, नहीं देखते देव जिनेन्दर।
ब्रह्मचर्य नेत्रों से धारा, नहिं अब्रह्म का करें इशारा ॥९॥

ॐ ह्रीं देवांगनारूपनेत्रेन्द्रियसुख मनःकृत दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मनहर वाणी बोले देवियाँ, पर उनसे न डोलता जिया ।
राग वचन को छोड़ा तुमने, अर्घ्य चढ़ाया आकर हमनें ॥१०॥

ॐ ह्रीं देवांगनार्णेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चित्र अचित्र नारी स्पर्श, व्रत तो करती है अपकर्ष।
नारी चित्र को नाहीं छूते, वे तो निज आतम में रहते ॥११॥

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसनेन्द्रिय का रस भी त्यागा, वीतरागी जिन आतम जागा।
मनकृत दोष हटाया प्रभु ने, शीश झुकाया आकर हमने ॥१२॥

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

घ्राणेन्द्रिय को वश में करते, ब्रह्मचर्य के दोष को हरते।
उत्तम संयम भाव बनाया, उत्तम ब्रह्मचर्य को पाया ॥१३॥

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीघ्राणेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नारी चित्र को ना ही निहारें, ना ही वे परिणाम बिगाड़े।
शुद्ध भाव की सरिता बहती, जो कि वह निज आतम रहती ॥१४॥

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीरूपनेत्रेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अचित्त नारी के वचन न सुनते, वे तो बस जिनवाणी सुनते।
जिनवाणी जिनदेव बनाये, चरणों में हम शीश झुकायें ॥१५॥

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीश्रोत्रेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नार तिर्यंची को न छूते, पूर्ण ब्रह्म का पालन करते।
ब्रह्मचर्य से शांति आई, जिसमें आतम रहे दिखाई ॥१६॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीस्पर्शनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन विकार विषयों में रमते, पर जिनवर रस नाही लेते।
रसना इन्द्रिय को वश कीना, ब्रह्मचर्य मन से धर लीना ॥१७॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीरसनेन्द्रियसुखमनः कृतदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यदि तिर्यंची घ्राण विकार, स्वप्न में भी न करें विचार।
पर नयनों से आतम देखें, वे पर्याय को ना ही लेखें ॥१८॥

ॐ ह्रीं कृतितिर्यंचीनासिकासुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं

करें तिर्यंच की नहीं प्रशंसा, सुन्दर तन हो ना ही शंका।
पर नयनों से आतम देखें, वे पर्याय को ना ही लेखें ॥१९॥

ॐ ह्रीं मनः कृतितिर्यंचीनेत्र-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं

यदि तिर्यंच की वाणी प्यारी, पर जिनवर ना हुये विकारी ।
मन से ही अनुराग को त्यागा, शुद्धातम में है मन पागा ॥२०॥

ॐ ह्रीं मनः कृतितिर्यंक्स्त्रीकर्ण-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं

मनःकारित दोष विचार भेद

भुजंगप्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

करी साधना, ब्रह्मचर्य की स्वामी।
मन से न चिन्ते, जरा अंतर्यामी ॥
मानुष की स्त्री, न भाव बिगाड़ा।
दिया दिव्य उपदेश, भाव सुधारा ॥२१॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-स्पर्शनेन्द्रियदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

रसना ने तुमको, न पथ से डिगाया।
संयम ने तुमको, सुपथ पे चलाया ॥
धरा ब्रह्मचर्य, निजातम को ध्याते ।
किसी और में अपना मन ना लगाते ॥२२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-रसनेन्द्रियसुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

किया घ्राण वश में, तिय गंध न लेते।
वे आतम सुगंध को, हर पल हैं लेते ॥
बाहर की खुशबू से, नाता है तोड़ा।
क्योंकि निजातम से, नाता है जोड़ा ॥२३॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-घ्राणेन्द्रियसुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

स्त्री के रूप को, ना हीं निहारें।
जो रूप को देखे, वो भाव बिगाड़े ॥

भावों से नयनों को, पावन किया है।
तभी ब्रह्मचर्य का पालन किया है ॥२४॥

ॐ ह्रीं मनः कारितमनुष्यस्त्री-रूपनेत्रेन्द्रियसुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

स्त्री की वाणी से, राग न करते।
न सुनते कथा राग, ममता है धरते ॥
सुनने पे संयम, जो करता है आतम।
ये शक्ति ही उसको, बनाये परमातम ॥२५॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमनुष्यस्त्री-श्रोत्रेन्द्रियसुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

स्वर्गों की देवी, जो सुन्दर है होती।
सामान्य जीवों के, मन को है हरती ॥
स्पर्श उनका, मन से ना करते।
मन से वे ब्रह्म का, पालन है करते ॥२६॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

रसना सदा स्वाद चाहे सभी में।
ये स्वाद ही नर को, भ्रमाय जगत में ॥
धरे ब्रह्मचर्य, इसे वश में करते।
बने वीतरागी, स्वयं में विचरते ॥२७॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदेवांगनारसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

इन्द्रिय विषय पूर्ति, संसारी करते।
पश्चात दुख इसमें, कष्टों को पाते ॥
किन्तु प्रभो इन्द्रिय, राग न करते।
बने वीतरागी, स्वयं में विचरते ॥२८॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदेवांगनाघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

मिले देवी लखने, मन वश में है रखना।
शुद्ध स्वरूपी निजातम को लखना ॥
अंदर से ज्ञान के, नयना जो खोले।
तभी शुद्ध आतम, कहानी को बोले ॥२९॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदेवांगनाचक्षुरिन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं...।

सुनो न किसी की, बस आतम की सुनना।
कर्णेन्द्रिय भटकाये, तुम वश में है करना॥
तभी ब्रह्मचर्य का, पालन ही होगा।
किया है प्रभो ने, चलो तुम भी करना॥३०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदेवांगनाकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चित्र विचित्र, भावों को बनाते।
लगता है छू लो, ये पास बुलाते॥
कठपुतली नारी भी, भाव बिगाड़े।
जिन ने स्वरूप भाव, अपने सुधारे॥३१॥

ॐ ह्रीं अचितस्त्रीस्पर्शनेन्द्रिय-सुखमनःकारितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जहाँ राग होगा, वहाँ कामना है।
जहाँ कामना है, वहाँ वासना है॥
इन्द्रिय को वश में, प्रभो आप कीनी।
तभी आत्म निधियों ने, शरणा है लीनी॥३२॥

ॐ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्त्री के चित्र भी, मन को भ्रमाते।
करे मन को मैला, जगत में घुमाते॥
करें इन्द्रिय वश में, नहीं आप घूमे।
करें शील पालन, हम भक्ति में झूमें॥३३॥

ॐ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चित्र ने चित्त विकारी बनाया।
न चित्र को देखे, तो सुख शील पाया॥
फँसें वासना में, वे ना धर्म करते।
प्रभु आप अपनी ही, आतम विचरते॥३४॥

ॐ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

राग के मीठे, संगीत सुहायें।
सुनते ही वे, वासना को जगायें॥
प्रभो आपने, राग का त्याग कीना।
सुने ना वचन ऐसे, निजातम को लीना॥३५॥

ॐ ह्रीं मनःकारित अचितस्त्रीश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तिर्यंच है स्त्री, नर छूना जो चाहे।
हुआ कर्म बंध, गलत है निगाहें॥
प्रभो पूर्ण शील का, पालन हैं करते।
तभी दुष्ट कर्मों को, निश्चित वे हरते॥३६॥

ॐ ह्रीं मनःकारित तिर्यंच स्त्रीरूपस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जीव ने राग का, रस ही पिया है।
काल अनंता से, राग ही जिया है॥
मानुष गति, ज्ञान सच्चा जो आया।
धरा वीतराग, निजातम को पाया॥३७॥

ॐ ह्रीं मनः कारित तिर्यंच स्त्रीरूपरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संसार में हमको, राग ही खीचे।
हम जाते हैं दौड़े, ज्ञान आँखों को मीचे॥
प्रभो कैसे छोड़ा, हमें भी सिखाओ।
दरश आत्मा का, हमें भी कराओ॥३८॥

ॐ ह्रीं मनःकारित तिर्यंच स्त्रीघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हम सौख्य को चाहे, मिले किन्तु कैसे।
हम राग निहारे, चकवा के जैसे॥
प्रभो कैसे छोड़ा, हमें भी सिखाओ।
दरश आत्मा का, हमें भी कराओ॥३९॥

ॐ ह्रीं मनःकारित तिर्यंच स्त्रीनेत्रे-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लखो वीतरागी को, मन शुद्ध होगा।
आनंद झरना, तभी ही बहेगा॥
प्रभो कैसे छोड़ा, हमें भी सिखाओ।
दरश आत्मा का, हमें भी कराओ॥४०॥

ॐ ह्रीं मनःकारित तिर्यंच स्त्रीश्रोतेनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मनोनुमोदित दोष विचार

दोहा

स्त्री का स्पर्श कर, मन में मोद धराये।
शील धर्म में दोष है, जिनवर इसे हटाये॥४१॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीमनोऽनुमोदितस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जूठ राग बनाता है, राग ही दोष लगाये।
शील धर्म को पालकर, जिनवर शुद्ध बनाये॥४२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीमनोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ब्रह्मचर्य को पालने, घ्राण पर संयम लाय।
प्रभु की पूजा हम करें, चरणों अर्घ्य चढ़ाये॥४३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीमनोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूपवती को ना लखें, मन को नाही डिगाये।
ना ही करें अनुमोदना, शील भाव को पाय॥४४॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनुष्यस्त्रीनयनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मधुर राग को न सुने, राग तो राग बढ़ाये।
ना ही करें अनुमोदना, शील भाव को पाय॥४५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनुष्यस्त्रीश्रोतेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देवी के स्पर्श की, नहिं भावना लायें।
ना ही करें अनुमोदना, शील भाव को पाय॥४६॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनास्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना का रस छोड़ कर, आतम रस को पाये।
ना हीं करें अनुमोदना, शील भाव को पायें॥४७॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनारसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देवी गंध को न चहे, ना ही करें अनुराग।
ना ही करें अनुमोदना, कीना राग का त्याग॥४८॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनाघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देवी को न निहारते, ना आकर्षित होय।
ना हीं करें अनुमोदना, बीज धर्म का बोय॥४९॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनानयनेन्द्रिय सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मिष्ट वचन जो राग के, जिससे मन डिग जायें।
सुनते ना हीं कर्ण से, ना अनुमोदन गाये॥५०॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदेवांगनावाचककर्णेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मूर्ति या कि चित्र हो, न स्पर्श करेय।
नाहीं करें अनुमोदना, नौका अपनी खेय॥५१॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना का रस ना पिया, लिया आतम का स्वाद।
आनंद ऐसा मिल गया, आया तब वैराग॥५२॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीरसना-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्राण गंध को लेयकर, करती है उन्मत्त।
ब्रह्मचर्य को धारकर, रखते निज में चित्त॥५३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आँख बढ़ावे राग को, देखे गंदे चित्र।
आँखों पर संयम रखे, स्वच्छ करें वे चित्त॥५४॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताचित्तस्त्रीनेत्र सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कर्णों प्रिय जो वचन है, मन आजावें राग।

ऐसे सुर संगीत का करें प्रभु जी त्याग॥५५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिततिर्यंचस्त्रीकर्णेन्द्रिय सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तिर्यंच नारी की वासना, संभावित आजाय।

नहिं स्पर्श प्रभु करें, शील धर्म को पाय॥५६॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिततिर्यंच स्त्रीस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

इन्द्रिय रस फीका हुआ, जब आया निज स्वाद।

आतम में ही सुख भरा, कहीं क्यों जाये भाग॥५७॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीमनोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गंध सुगंध का राग तो, सब जग में भटकाय।

गुण खुशबू को ले जरा, निज आतम में आय॥५८॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीमनोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूप देख तिर्यंचनी, रागों में फँस जाये।

नयना संयम धारकर, भाव को शुद्ध बनाये॥५९॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीमनोऽनुमोदितनयनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मधुर वचन तिर्यंच के, राग भाव जग जायें।

जिनवर राग को न करें, ना अनुमोदन गायें॥६०॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीमनोऽनुमोदितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनकृत भेद

पद्धरि छंद (तर्ज-ये धर्म है आतम...)

वचन रागमय ना बोले, बस वीतराग द्वारा खोले।

वचकृत दोषों को नाशा है, बस मुक्ति की ही आशा है॥६१॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्त्री आकर्षण नहीं रहा, वैराग्य का झरना वहाँ बहा।

वचकृत दोषों को नाशा है, बस मुक्ति की ही आशा है॥६२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे प्राण को वश में रखते है, वे भोगों को न चखते है।

वे शील महाव्रत धारी हैं, उन्हें मुक्ति सुन्दरी प्यारी है॥६३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्त्री का रूप सुहाना हो, देखे ना वे निज ध्याना हो।

नयनों की शक्ति पहचानी, पावन पवित्र वे है ज्ञानी॥६४॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नारी वाणी में आकर्षण, न सुने नहीं करते दर्शन।

कर्णों से पावन वचन सुने, पावन होने भगवान बनें॥६५॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकृतश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देवी को न स्पर्श करें, ना हीं ऐसे वे वचन कहें।

वे शील दोष को टाले हैं, वे शील धर्म रखवाले हैं॥६६॥

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना का रस नीरस हुआ, जिसको भी सच्चा ज्ञान हुआ।

वे धर्म ज्ञान रस पीते हैं, वे ज्ञानमय जीवन जीते हैं॥६७॥

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शासन घ्राणेन्द्रिय पर कीना, वे काय गंध को न लीना।

वचकृत न दोष लगाते हैं, वे निज आतम को ध्याते हैं॥६८॥

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देवी के नयन है मृगनी सम, न देखे प्रभु लिया है नियम।

हम भी नयना को पावन कर, प्रभु दर्श करें शुभ सावन कर॥६९॥

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देवी की वाणी मधुर बड़ी, होवे यदि वो सामने खड़ी।

पर तपसी नाही सुनते हैं, वे धर्म चुनरिया बुनते हैं॥७०॥

ॐ ह्रीं देवागंनावचनकृतकर्णेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे चित्र नारी से दूर रहे, वचनों से भी न राग कहे।
वचनों को शुद्ध बनाया, वचनों से धर्म निभाया ॥७१॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतस्पर्शेन्द्रिय-**सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

रसना रस में ना ललचाते, शुभवाणी में वे मन लातें ।
वचनों की शुद्धि कीनी है, निज आत्म में दृष्टि दीनी है ॥७२॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रिय-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वे घ्राण प्राण से श्वास लेय, इससे ज्यादा न कुछ कम।
शुभ वचनों से शुभ गाया है, शुभ वचनों की ही माया है ॥७३॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रिय-**सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सुन्दर मूर्ति अचेतन हो, देखें न राग से नरतन वो।
वे ज्ञानदीप प्रजलाते हैं, आतम प्रकाश को पाते हैं ॥७४॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतनेत्रेन्द्रिय-**सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

जग राग रागिनी गाते हैं, वे व्यर्थ के भाव जगाते हैं।
तपसी न सुने, न राग करें, इससे कर्म को शीघ्र हरें ॥७५॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकृतकर्णेन्द्रिय-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तिर्यंचनी स्पर्श को छोड़ा है, निज आत्म से नाता जोड़ा है।
वचनों में शुद्धि आई है, क्योंकि निज ज्योति जगाई है ॥७६॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकृतस्पर्शेन्द्रिय-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

रसना तो शील से भटकावे, रसना पापों में अटकावें।
वे आगम का रस पीते हैं, वे आत्म सहारे जीते हैं ॥७७॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकृतरसनेन्द्रिय-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

उन्हें घ्राण प्राण न देता है, इन्द्रिय के आप विजेता है।
निज तन पर विजय जो पाई है, आतम शक्ति प्रगटाई है ॥७८॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकृतघ्राणेन्द्रिय-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वे रूप तिर्यंची का ना देखें, वे तो बस आतम को लेखे।
आतम का रूप सुहाया है, उसका ही ध्यान लगाया है ॥७९॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकृतनयनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तिर्यंची की वाणी नाहीं सुने, वे कर्णेन्द्रिय को वश में करें।
संयम में शक्ति आई है, जीवन होता सुखदाई है ॥८०॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकृतकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचन कारित दोष विचार

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के...)

वे नहीं मानुषी को छूते, वे सबका त्याग हैं करते।
स्पर्श सुखद न लेते, वे धर्म सुखों को देते ॥८१॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-**सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

विषयों का जो अनुरागी, वो बन जाये संसारी।
संसार तो पाप कराये, दुर्गतियों में भिजवाये ॥८२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ये विषय भोग भटकाये, घर को है नर्क बनाये।
तुमने विषयों को छोड़ा, निज आत्म से नाता जोड़ा ॥८३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोगों में आत्म की हानि, ये भोग करें मनमानी।
संयम से वश में करलो, निज आतम माहि सँवर लो ॥८४॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गंगा सम वचन तुम्हारे, भोगों को करें किनारें।
सच्ची शांति तब आई, भोगों की करी सफाई ॥८५॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचनकारितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषरहिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तुम ब्रह्मचर्य को पाया, ना उसमें दोष लगाया।
स्वर्गों की देवी हो चाहे, भटकें न धर्म की राहें ॥८६॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

वे राग की अग्नि बुझाये, संयम का जल बरसाये।
ते राग आग के त्यागी, औ सभी कामना भागी ॥८७॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

है ब्रह्मचर्य ब्रह्मास्त्र, करमों का करते घात।
इन्द्रियों को वश में कीना, इच्छाओं को हर दीना ॥८८॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्त अर्घ्यं...।

स्वर्गों में शील नहीं है, पाने मानुष्य सही है।
अपसरा डिगा न पाये, चाहे सुन्दर रूप बनाये ॥८९॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितनेत्र-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...

देवी मीठे स्वर गाये, चाहे राग की आग लगाये।
पर आप नहीं सुनते हैं, निज आतम में रहते हैं ॥९०॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचनकारितकर्णेन्द्रियविषय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

मन की हीं है ये मुक्ति, आतम की करते भक्ति।
जड़ स्त्री ना ही लुभायें, दृढ़ता निज धर्म की पाये ॥९१॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भावों में तन्मय रहते, जिन ध्यान का अमृत पीते।
नहीं करें कामना सुख की, परवाह है आतम सुख की ॥९२॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

इन्द्रिय सुख में मन पत्थर, आतम के सुख में तत्पर।
अनुशासन खुद पर कीना, मन इच्छा को तज दीना ॥९३॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे व्यर्थ नयन न चलायें, संयम रख ज्ञान करायें।
सच्चाई जग की जानें, इन्द्रिय की बात न माने ॥९४॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नारी से राग जो करता, उसकी बातें भी सुनता।
पर आपने राग को छोड़ा, मन को आतम से जोड़ा ॥९५॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनकारितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन में विकार है भारी, तिर्यंची भारी, तिर्यंची निमित्त प्रहारी।
स्पर्श आप ना करते, मन शील व्रतों को धरते ॥९६॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकारितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ये भोग रोग उपजाये, भव-भव में रोग बढ़ायें।
बैरी सम हमें सतायें, हम छोड़ क्यों नहीं पाये ॥९७॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकारितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अमृत की वापि में रहते, फिर भी दुखों को सहते।
क्योंकि संयम न धारा, निज आतम नाहीं सहारा ॥९८॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकारितरसघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

करें क्रोध भोग के कारण, करते पापों को धारण।
धरें ब्रह्म भाव जो मन में, शांति आवे आतम में ॥९९॥

ॐ ह्रीं तिर्यंच स्त्रीवचनकारितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोगों ने हमें निचोड़ा, नहीं कही का भी है छोड़ा।
हो धन्य आप जिन स्वामी, हो धन्य जी अंतर्यामी ॥१००॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीवचनकारितश्रोतेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनानुमोदित दोष विचार

चाल छंद

नर शील व्रतों को पाले, खुद देव भी हो रखवाले।
स्त्री स्पर्श न करते, निज शक्ति संचित करते ॥१०१॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितस्पर्शेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

कोई और कुशील करे है, अनुमोदन नाहीं करे है।
धर मौन वे मन को हटाते, दोषों को दूर भगाते ॥१०२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोगों की चर्चा न करते, भोगों की बात न सुनते।
नाहीं अनुमोदन है कीना, बस शुद्ध विचार में जीना ॥१०३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोगों का नशा जो छाया, उसे आतम याद न आया।
पर बाद में वो पछताया, जिनवर को शीश झुकाया ॥१०४॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हित अहित का करें विचारा, पढ़ के जिन ज्ञान को सारा।
देखा दुखमय जग सारा, भोगों को किया किनारा ॥१०५॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीवचोऽनुमोदितश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

अप्सरा नहीं लुभा सकी, दृढ़ता शील की धार।
वचन गुप्ति को धारकर, अनुमोदन को टार ॥१०६॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचोनुमोदितस्पर्श-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिन्ता नहीं चिन्तन करें, शील से हुये शुभ भाव।
निराकार निश्चिंत्य हो, रहते आत्म स्वभाव ॥१०७॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दुराचरण को को दूरकर, शील के दोष हटाये।
अंतर्मन शुद्धि करी, चरणों अर्घ्य चढ़ाये ॥१०८॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नहीं निगाहें घूरती, स्वर्ग स्वर्ग देवी आ जाये।
पावन नयना को धरे, चरणों शीश झुकायें ॥१०९॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जन्म-जन्म के दुखों को, दूर करें शुभ भाव।
प्रथम ब्रह्म की शक्ति है, पावें शुद्ध स्वभाव ॥११०॥

ॐ ह्रीं देवांगनावचोऽनुमोदितश्रोतेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोग भावना को लिये, करते धर्म के काम।
आत्म धर्म निःस्वार्थ है, आत्म धर्म निष्काम ॥१११॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितस्पर्श-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लम्पट जिह्वा लोलुपी, सहता है अपमान।
ब्रह्मचर्य को धर प्रभो, पाते है सम्मान ॥११२॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भले अचेतन स्त्री हो, मन न पायें विकार।
झटका भोगों को दिया, आतम रूप सम्हार ॥११३॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दीप पतंगा देख कर, उस पे जा मंडराये।
देकर अपने प्राण भी, समझ नहीं वो पाये ॥११४॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बुद्धिमान ज्ञानी वही, छोड़े इन्द्रिय भोग।
वरना सब अज्ञानी हैं, लगा भोग का रोग ॥११५॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीवचनानुमोदितश्रोत्रेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तिर्यंची अच्छी लगे, पाप उदय जब होय।
शुद्ध स्वभावी जिनप्रभु, दुष्ट पाप को खोय ॥११६॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितस्पर्श-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जो सुख खुजली में मिले, वही भोग में होय।
मन विकार मय होय न, सच्चा सुख तब होय ॥११७॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितरसनेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चरित्र चित्रण जीव का, जग सम्मान बढ़ायें।
तजना इसको तप कहा, धर्म भी ये कहलाये ॥११८॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितघ्राणेन्द्रिय-सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समता मन में आ बसी, होते ना उन्मत्त।
चित्र नहीं चारित्र रख, निज में रहे प्रवृत्त ॥११९॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

जग में सबसे वो बड़ा, ब्रह्मचर्य को पाये।
ब्रह्म शक्ति मुक्ति को दे, आनंद रस बरसाये ॥१२०॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचवचनानुमोदितकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

काय कृत भेद

चौपाई

पुण्य उदय में हो व्रत पालन, आतम आराधन का लालन।
काया भी संग साथ निभायें, ब्रह्मचर्य पालन करवायें ॥१२१॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतस्पर्शजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुशासित मन व्रत को पाले, अपनी रक्षा स्वयं कराले।
और को रक्षा भी करता है, काया संयम मय रखता है ॥१२२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे तो स्वयं पर करें अनुग्रह, त्याग किया है काम परिग्रह।
ना संकल्प विकल्प ही करते, इन्द्रिय वश कर संयम धरते ॥१२३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पावन नयन न आफ्त करता, पावन नयन पुण्य को भरता।
शील नयन से भी है पालें, वे तो है आतम रखवाले ॥१२४॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सुस्वर सुन ना विचलित होते, दृढ़ता से है पालन करते।
शील साधना अवलम्बन ले, ज्ञान साधना करते है वे ॥१२५॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकृतकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सत्य परायण होकर पाले, तोड़े कठिन कर्म के जाले।
इन्द्रिय सुख की नहीं चाहना, मुक्ति की बस रहे भावना ॥१२६॥

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतस्पर्शजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना मन को दुर्बल करती, भोग भोगने में खुश रहती।
किन्तु भोग बड़े दुखदाई, तजा प्रभु ने है सुखदाई ॥१२७॥

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सुमन सुगंध तो मदमाती है, कर बेहोश पाप लाती है।
घ्राण इसी से वश में रखते, न फूलों की खुशबू लेते ॥१२८॥

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नयन शास्त्र पढ़ आनंद लेते, प्रभु दर्श से सार्थक करते।
रूप रंग ना नयन से देखें, वे तो बस निज आतम लेखें ॥१२९॥

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कर्णेन्द्रिय को वश में रखना, राग वचन को नहीं है सुनना।
वरना जग में भटकायेगी, दुख संकट संग में लायेगी ॥१३०॥

ॐ ह्रीं देवांगनाकायकृतकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नारी चित्र को भी ना छूते, नारी मित्र भी नहीं बनाते।
चित्र विचित्र है भाव बनावें, वे इन्द्रिय पर विजय पावें ॥१३१॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना रस लेने जग घूमें, लेकर हर्षित होवें मन में।
ऐसा तो संसारी करता, इन्द्रिय विजयी तो संयम धरता ॥१३२॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काजल के सम भोग है काले, छोड़ बने प्रभु आप निराले।
इसी से सच्चा सुख पाया है, इसीलिए आतम ध्याया है ॥१३३॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काल अनादि से भोग है भोगे, इसीलिये मन रमता इसमें।
सच्चे सुख का स्वाद न जाने, इसीलिए न आतम माने ॥१३४॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन को जैसा चाहो बनाना, उस पर तो संयम है लाना।
संयम आतम में सुख देवे, तन के भोग आतम दुख देवे ॥१३५॥
ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकृतकर्णेन्द्रियजनित-**सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

व्रत पालन से शक्ति आवें, मन दृढ़ हो प्रभु गीत को गावे।
पापों से भी दूर हटावे, पाला जिन ने नमन करावे ॥१३६॥
ॐ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतस्पर्शजनित-**सुखदोषविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

चारित्र पालन भाव की शुद्धि, संग आती है ऋद्धि सिद्धि।
भाव शुद्धि है पुण्य बढ़ावे, सम्यदर्शन प्राप्त करावे ॥१३७॥
ॐ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

काम नहीं होते निष्काम, उसको मिलता आतम राम।
काम संग सौ काम बढ़ावे, पूरा ही संसार बसावें ॥१३८॥
ॐ ह्रीं **तिर्यंचीकायकृतघ्राणेंद्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

पुण्य उदय में नयना पायें, नयना पावन कर हर्षायें।
रूप देखने मिले न नयना, इससे तो आतम रस चखना ॥१३९॥
ॐ ह्रीं **तिर्यंचीकायकृतनेत्रेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

पुण्य उदय कर्णेन्द्रिय पाई, आतम भजन सुनो सब भाई।
वरना दुबारा नहीं मिलेंगे, नाहीं सुख के फूल खिलेंगे ॥१४०॥
ॐ ह्रीं तिर्यंचीकायकृतकर्णेन्द्रिय-सुखदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

काय कारित भेद

चौपाई

शील पाल बनते पुरुषोत्तम, नर में होते वही नरोत्तम।
कहलाते हैं वे सर्वोत्तम, अंतिम भाव होवे चरमोत्तम ॥१४१॥
ॐ ह्रीं **मनुष्यस्त्रीकायकारितस्पर्शनेन्द्रिय-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

शील का रथ तो शिवपथ जावें, मुक्ति में जा सिद्ध बनावें।
चारित्र शुद्धि छोटा न जानो, श्रद्धा रख लो शक्ति प्रमानो ॥१४२॥
ॐ ह्रीं **मनुष्यस्त्रीकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

आतम जब जाग्रत हो जावें, तब ही शील के भाव बनावें।
शील करम की कील निकाले, शील करम के काटे जाले ॥१४३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

शील भाव तो निर्विकार है, बालक सम ना हीं विकार है।
शील भाव के हम आराधक, प्रभु बनाना हमको साधक ॥१४४॥
ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

शील जगत में पूज्य बनावे, देव भी पूजा करने आवे।
शील की शक्ति है अचिंत्य, होते जग में वही अनिंद्य ॥१४५॥
ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायकारितकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

हाव भाव देवी प्रगटाय, जरा न आपका मन ये डिगाय।
नहिं प्रशंसा उसकी करते, मन को ना ही विचलित करते ॥१४६॥
ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

आत्म समर्पण आत्म के कारण, इससे होगा कष्ट निवारण।
आत्म-आत्म की भावना भावे, अंदर आतम में रम जावें ॥१४७॥
ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

भोगी भँवरे के सम होता, नश्वर सुख के पीछे भागता।
संयम धर मन को वश कीना, पाया आपने सौख्य नवीना ॥१४८॥
ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

देख रोशनी प्राण गँवावे, जीव पतंगा समझ न पावें।
रूप देख उस पर ना फिसलो, नयना अपने वश में कर लो ॥१४९॥
ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

भक्ति के मैं गीत सुनूँगा, आत्म ध्यानी भगवान बनूँगा।
प्रभु बनने की शक्ति मुझमें, मुक्ति देने की शक्ति तुममें ॥१५०॥
ॐ ह्रीं देवांगनाकायकारितकर्णेन्द्रियजनित-**सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अचित्त चित्र लखने में आवे, वह नारी भी मन भरमावे।
नहिं स्पर्श आपने कीना, अब तेरी भक्ति में जीना ॥१५१॥
ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय अनर्घ्य-**

पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अघ कुशील व्याकुलता देते, शीलवान शांति से रहते।
रक्षा कवच इसे बतलाया, इसीलिये आ शीश झुकाया ॥१५२॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रेम स्वयं से जो भी करता, शीलवान बन सुख से रहता।
निज क्षमता होती है जाग्रत, उसे मिले मुक्ति का मारग ॥१५३॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अघ कुशील के नयन मटकते, यहाँ वहाँ जाता है चहकते।
नयनों में पावनता लाओ, प्रेम पात्र सब के बन जाओ ॥१५४॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

जिसके पास भी होगा मनबल, जाग्रत हो जाता है तन बल।
वचनों में आती है सिद्धि, बढ़ जाती है सुख समृद्धि ॥१५५॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायकारितश्रोतेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अर्पित और समर्पित होकर, बीज शील का निज में बोकर।
अघ कुशील का बंधन छूटे, पाप भाव से नाता टूटे ॥१५६॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितस्पर्शनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्यों ही शिखरपर कलश चढ़ायें, त्यों ही शील की महिमा बताएँ।
शास्त्र पुराण भी गाते महिमा, शीलवान की बढ़ती गरिमा ॥१५७॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मोक्ष का प्रेमी व्रत को धारे, वह ही आतम रूप विचारे।
इन्द्रिय वश कर शांति पावे, इच्छाओं में ना गोता खावे ॥१५८॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

शीलवान पायें गुणवत्ता, मोक्षपुरी की मिलती सत्ता।
सुख अनंत झरना बह जावें, सुख में बाधा कभी ना आवे ॥१५९॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

व्रत धारी में हो शुभ लक्षण, प्रतिभा उसकी होय विलक्षण।
वाह्य शक्ति भी जाग्रत होवे, पाप शक्ति जाकर के सोवें ॥१६०॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचस्त्रीकायकारितश्रोत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

कायानुमोदित दोष विचार

भुजंगप्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

इन्द्रिय प्रवृत्ति, यदि होगी जो ज्यादा।
वहाँ पे ना होती है, कोई मर्यादा ॥
इससे ही काया को वश में रखना।
न करना अनुमोदना, ध्यान ये रखना ॥१६१॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

करो शील पालन, न करना अनादर।
सदा शील धारी का, करना है आदर ॥
करो प्रेरणा औ, स्वयं का हो पालन।
मिलेगा जो सत्पथ, हुआ आत्म लालन ॥१६२॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अमृत खजाना, लिये तुम हो बैठे।
अंदर मिलेगा, जरा झाँक देखे ॥
अमृत को पाने का, द्वार है शील।
निकाले यही जो, भरी कर्म कील ॥१६३॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

मिली प्रेरणा देख, तुमको प्रभुजी।
बनूँ आप जैसा, है भाव प्रभु जी ॥
परिपूर्ण शील के, धारी तुम्हीं हो।
संपूर्ण महिमा के धारी तुम्हीं हो ॥१६४॥

ॐ ह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितचक्षुइन्द्रियविषयजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तुम्हें शीलव्रत ने प्रतिष्ठा दिलाई।
तुम्हें देखने से ही, होती भलाई॥
किन्तु प्रतिष्ठा की, ओर न देखे।
तुम तो प्रभु जी, निजाम को लेखें॥१६५॥

ॐह्रीं मनुष्यस्त्रीकायानुमोदितकर्णेन्द्रियजनित-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

करूँ दर्श तेरा, धरूँ शील भाव।
शक्ति दो मुझको, न होवें विभाव ॥
है ज्येष्ठ औ श्रेष्ठ, यही व्रत बताया।
करूँ मैं भी पालन, ये भाव है आया॥१६६॥

ॐह्रीं देवांगनाकायानुमोदितस्पर्शजनित-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

चतुर्मुख कहाते पर, आतम को देखें।
पर मुख ही आकर, तुम्हीं को है देखें ॥
शृंगार अंगार, बनकर है तपता।
है छोड़ा जिन्होंने, वो पायेगा साता॥१६७॥

ॐह्रीं देवांगनाकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-**सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

प्रभु जी किसी से, प्रशंसा ना चाहो।
न पर को ही देखें, औ ना ही सराहो॥
परमतत्त्व आतम में, लीन है रहते।
इससे तुम्हें सब ही, भगवान कहते॥१६८॥

ॐह्रीं देवांगनाकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-**सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

आसक्ति जग में, पर से ही है जोड़े।
हुआ ज्ञान सच्चा, तो निज से ही जोड़े॥
आसक्ति चिंता, दुखों को बुलाये।
निराकुल निरंजन, स्वयं को ही ध्याये॥१६९॥

ॐह्रीं देवांगनाकायानुमोदितनेत्रेन्द्रियजनित-**सुखदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

धरम का जो उपदेश, प्रभु जी सुनाये।
चारित बिना जीव, मुक्ति न जाये॥
दरश ज्ञान चारित, जो तीनों समावें।
चले मुक्ति पथ पे, जा मुक्ति को पावें॥१७०॥

ॐह्रीं देवांगनाकायानुमोदित**श्रोत्रेन्द्रियजनित**-सुखदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

सामग्री भोगों की, चहुँ ओर छाई।
न दिखता धर्म, पाप की है बिछाई॥
मोह का चश्मा, लगा पाने दौड़े।
प्रभु मोह बंधन, को जड़ से है छोड़े॥१७१॥

ॐह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शजनित-सुखदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

बड़े पुण्यशाली, जो व्रत धारते हैं।
हो के निराकुल जीवन वारते हैं॥
चर्चा के सम जो, चर्या हो जावे।
चले धर्म पथ पर, वो भक्ति को गावे॥१७२॥

ॐह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

दूजे के भोगों का, करता अनुमोदन।
भरे पाप गगरी, न आतम का शोधन॥
प्रभो निज में रहते, न बाहर ही आते।
परिपूर्ण शील, वे आतम को ध्याते॥१७३॥

ॐह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

विषयों को त्यागों, तो दुख दूर होगा।
तजो दोष सारे, सुख भरपूर होगा॥
अचेतन हो स्त्री, लखे सौख्य पावें।
इसी दोष से, व्रत में दूषण लगावें॥१७४॥

ॐह्रीं अचित्तस्त्रीकायाऽनुमोदितनेत्रेन्द्रियजनित-सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नारि अचेतन के, शब्दों से मोहित।
हुआ दोष मन में, न होता है शोभित ॥
धरो व्रत स्वयं को, है शुद्ध बनाओ।
न करना अनुमोद, आतम को ध्याओ ॥१७५॥

ॐ ह्रीं अचित्तस्त्रीकायानुमोदितकर्णेन्द्रियजनित-सुखदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय** अनर्घ्य-पदप्राप्तये **अर्घ्यं...।**

तिर्यंची पे प्रेम के, भाव ना लाओ।
धरों मन में समता, न खुद को जलाओ ॥
सूक्ति सुधा का, हो पान तुम्हारा।
इससे बड़ा सौख्य, ना हो दुबारा ॥१७६॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितस्पर्शजनित-सुखदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-प्राप्तये **अर्घ्यं...।**

करके हृदय शुद्ध, सबका बनाओ।
शुद्ध हृदय से निजातप को ध्याओ ॥
अनुमोद पाप भी, दोष बताया।
यही दोष ने पाप, को है बुलाया ॥१७७॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितरसनेन्द्रियजनित-**सुखदोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्य-पदप्राप्तये **अर्घ्यं...।**

आतम की शक्ति को, अंदर बहाओ।
आतम में आनंद, सिन्धु को पाओ ॥
काल अनादि से, भटका जगत में।
क्योंकि जाना, कि सुख है स्वयं में ॥१७८॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितघ्राणेन्द्रियजनित-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

बाह्य सुखों की, हम आश लगाते।
इसी से निजातम में, झाँक न पाते ॥
मन से है बाहर, वचन से है बाहर।
काया सदा ही तो, रहती है बाहर ॥१७९॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितनेत्रेन्द्रियजनित-**सुखदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

आकांक्षा अभिलाषा, करो दूर मन से।
इच्छायें, वांछा, हटाओ चमन से ॥
आतम की कलियाँ तो, मुरझा रही हैं।
निष्काम भक्ति, करो यह सही है ॥१८०॥

ॐ ह्रीं तिर्यंचीस्त्रीकायानुमोदितजनित-कर्णसुखदोषनिवारकाय **श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-**प्राप्तये अर्घ्यं...।**

पूर्णार्घ्य

शंभू छंद

नव कोटि जीवों की रक्षा कर, जो भाव शील का धरता है।
आतम शांति, मन से शांति, वो स्वयं अशांति हरता है ॥
निज के ब्रह्मा को पहचाने, तो ब्रह्मचर्य के भाव बने।
यह ब्रह्मचर्य बल आज शक्ति, देकर देता है सौख्य घने ॥

ॐ ह्रीं पूर्णब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।(१०८ बार)

जयमाला

दोहा

धर्म अहिंसा नींव है, सत्य है चैत्य समान।
ब्रह्मचर्य कलशा चढ़ा करो स्वयं सम्मान ॥

शेरचाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

सर्व व्रतों में में महान, ब्रह्मचर्य है ।
सर्व गुणों की ये खान ब्रह्मचर्य है ॥
मुक्ति का है ये बीज, जो भी डाल देता है।
फिर अनंत सौख्य का वो, फल को लेता है ॥१॥

काम ने कहा, त्रिलोक वश में है मेरे।
मैं देता सबको चोट, देऊँ दुख घनेरे ॥
किन्तु जब जिनदेव की, वो शरण में आया।
देखा अखंड ब्रह्मचारी, शीश झुकाया ॥२॥
गृहस्थ में रहकर के जो, थोड़ा भी पालता।
सीता हो मैना, अंजना को, मन में धारता ॥

सेठ सुदर्शन की महिमा, जगत ये गाये।
रूप औ धन से भी सेठ, शील निभाये ॥३॥
काम कहो मदन कहो, वासना कहो।
निष्काम हो मन भाव, इससे दूर ही रहो॥
जिसने भी इसे अपने हृदय, में है बसाया।
इसने उसे सम्पूर्ण जग में, खूब घुमाया ॥४॥
जिसने भी ब्रह्म मन से धरा, शांति फैलाई।
आतम को करके शुद्ध, की है आत्म भलाई॥
राग त्याग विषय भोग, दूर हटाओ।
होगा न कष्ट कही कोई, कही भी जाओ ॥५॥
मन में विकार आये, ज्ञान दूर करेगा।
वचनों से राग वचन त्याग, कर्म हरेगा॥
स्त्री हो देवी या तिर्यंची, भाव बिगाड़े।
यदि हो अचेतन तो भी, भव को बिगाड़े ॥६॥
इतने सारे दोष छोड़, प्रभु शील निभायें।
इससे ही भक्त चरण में आ, शीश झुकायें॥
ब्रह्मचर्य स्वर्ग के, सिंहासन को हिलाये।
ब्रह्मचारी के चरण, सुर दौड़ के आये ॥७॥
राग छोड़ के विरागी, पूर्ण शील पालता।
तब ध्यान आत्मा का करे, न कोई सताता॥
कर्म सिन्धु सोख के, मुक्ति में जा बसे।
हम भी शक्ति ऐसी पायें, चरणों में आ बसे ॥८॥

दोहा

ब्रह्मचर्य से शुद्ध हो, हुये आप भगवान।
सबकी शक्ति प्रगट हो, बारंबार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पूर्णब्रह्मचर्यव्रतप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निर्विकार निर्विकल्प हो, ब्रह्मचर्य को पाल।
'स्वस्ति' की है भावना, सबको करो निहाल॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आकिंचन्य महाव्रत पूजा

शंभू छन्द (तर्ज-भला किसी का...)

आतम में परिग्रह लेश न है, भावों से अपना मानते हैं।
मन वचन काय से त्याग मुनि, करके निज में हर्षाते हैं॥
फाँस जरा सी तन में लगती, वह भी दुख को देती है।
अधिक परिग्रह किया इकट्ठा, धर्म भाव हर लेती है ॥

दोहा

परिग्रह ग्रह को छोड़कर, बने आप मुनिराज।
भेष दिगम्बर धारकर, पहना धर्म का ताज॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-धर्मधारक श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं आकिंचन्य-धर्मधारक श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं आकिंचन्य-धर्मधारक श्री जिन ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अष्टक

शंभू छंद

संसार में होड़ लगी ऐसी, धन करें इकट्ठा सुख होगा।
झूठी आकांक्षा भटकाये, धन हो तो तभी धरम होगा॥
इस भ्रम को धोने हे प्रभुवर, जल चरणों लेकर आये हैं।
आकिंचन, धन को तज के बने, पूजा करके हर्षाये हैं ॥१॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जब नोट पास में आते हैं, चंदन सी शांति मिलती है।
जब धोखा देके दूर जायें, आतम ये ताप से तपती है॥
हम मोह करें धन से इतना, आकुल व्याकुल परिणाम हुये।
आकिंचन, धन को तज के बने, आकर के हमने चरण हुये॥२॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

श्रद्धा विश्वास जमा बैठे, धन अजर अमर अविनाशी है।
जब छोड़ के धन कही और जायें, तब पता चले ये विनाशी है॥
अक्षय तो केवल आतम है, इसका सुख भी अक्षय होता।
अक्षय पद पाने को प्रभुवर, अक्षत चरणों में मैं लाता॥३॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

धन पाके मन ये बौराया, भोगों में इसे लगा दीना।
इच्छायें पूरी पूरी करने में, जीवन ये सर्व ये सर्व विता दीना॥
फूलों से ज्यादा सुन्दर है, गुणवान है ये मेरा आतम।
जानूँ मैं निज को हे भगवन, आतम बन जायें परमातम॥४॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।

हो उच्च भाव सादा जीवन, पर इससे उल्टा जीते हैं।
जिह्वा भटकायें सदा हमें, भोगों का रस हम पीते हैं॥
आतम का भोजन धर्मज्ञान, इसको पा आतम स्वस्थ रहे।
नैवेद्य इसी से चढ़ा रहे, चरणों में ज्ञान की धार बहे॥५॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

पापों की काली छाया में, ना सत्य नजर मुझको आता।
जिनधर्म को अब तक ना समझा, भोगों का रस मुझको भाता॥
ज्योति आतम में ज्ञान की हो, यह भाव चरण में लाया हूँ।
ले दीप प्रभु पूजूँ तुमको, चरणों में आ हर्षाया हूँ॥६॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जीवन में विषमता आती है, मन दुखमय होकर घबराता।
शाश्वत आतम को ना जाना, कर्मों का उदय भी भरमाता॥
कर्मों पे विजय तुमने पाई, इंसान से तुम भगवान बने।
ले धूप चरण पूजा करता, इंसान से हम भगवान बने॥७॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार के फल की चाह सदा, ना मिले तो झटका लगता है।
मुक्ति फल स्वाद नहीं जाना, बाहर के फलों में अटका है।
आकिंचन व्रत को धारण कर, जब आतम ध्यान लगायेंगे॥
तब ही मुक्ति का फल मिलता, फल चढ़ा प्रभु को ध्यायेंगे॥८॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

बाहर का परिग्रह दस प्रकार, जिनदेव प्रभु ने तज दीना।
अंदर का संग चौदह प्रकार, इसको तज आतम सुख लीना॥
स्वर्णिम अवसर अब मिला मुझे, कुछ करके धर्म को ध्याया है।
मानव पर्याय की सार्थकता, आतम का धर्म निभाया है॥९॥

ॐ ह्रीं आकिंचन्य-परमधर्मधारकाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रोधाश्रित अभ्यंतर परिग्रह दोष विरति

पद्धरि छंद (तर्ज-ये देश है वीर...)

यह क्रोध महादुखदाई है, इसको तजना सुखदाई है।
मनकृत इस क्रोध को दूर करें, प्रभु देव जिनेश्वर पूज करें॥१॥

ॐ ह्रीं मनःकृताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

इस क्रोध को जो भी करता है, धरती पर नरक बनाता है।
मन कारित दोष को त्यागा है, जिनवर प्रभु में मन पागा है॥२॥

ॐ ह्रीं मनःकारिताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बिन क्रोध कर्म शत्रु भागा, क्योंकि मन आतम में लागा।
अनुमोद क्रोध का ना करते, आतम से आतम में रखते॥३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदिताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जब क्रोध आयें तो चिल्लाता, ठंडा होकर के पछताता।
वचकृत इस क्रोध को छोड़ना है, प्रभु नाम से नाता जोड़ना है॥४॥

ॐ ह्रीं मनःवचनकृताभ्यन्तर परपरिग्रहक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों में समता जो रखते, शांति का अमृत वो चखते।
वच कारित क्रोध को नाशा है, हम भी नाशे ये आशा है॥५॥

ॐ ह्रीं वचनःकारिताभ्यन्तर परिग्रहक्रोधदोष-विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मूर्छित होकर के क्रोध करें, हित अहित का ना विचार करें।
अनुमोदन क्रोध के त्यागी हैं, जिनदेव पूर्ण वीतरागी हैं॥६॥

ॐ ह्रीं वचनोनुमोदितांतरंगक्रोधदोष-निवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रोधी काया को फटकारें, जम-जम के हाथ पाँव मारें।
कायाकृत क्रोध को संभारा, आसन धारे आतम प्यारा॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृतांतरंगक्रोधदोष-विवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की शक्ति पहचानी, बन बैठे है आतम ध्यानी।
काया ने शुभ फल दीना है, अमृत निज में भर लीना है॥८॥

ॐ ह्रीं कायाकारितांतरंगक्रोधदोष-विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिन्तन स्वाध्याय को पाया है, फिर सच्चा ज्ञान जो आया है।
उन्हें क्रोध स्वयं न आता है, पाते बस साता-साता है ॥१॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितांतरंगक्रोधदोष-विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मानाश्रित अभ्यंतर दोष विचार

पद्धरि

पुद्गल प्रीति अभिमान आये, आतम को पुद्गल भय बतायें।
मनकृत यह मान निवारा है, समकित निज धर्म की धारा है ॥१०॥

ॐ ह्रीं मनकृतांतरंगपरिग्रहमान-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिसे थोड़ा ज्ञान जो हो जाता, अभिमान उसे तो आ जाता।
अभिमान का मान भगाया है, चेतन का चित्त जगाया है ॥११॥

ॐ ह्रीं मनःकारितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सम्मान यदि मिल जाता है, अभिमान से वह भर जाता है।
जिनवर की बात सभी मानें, अभिमान जरा न वो जाने ॥१२॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अच्छे कुल में जब जन्म पाय, अज्ञान दशा अभिमान आय।
जिनवर का कुल सबसे अच्छा, आतम दिखाये सच्चा-सच्चा ॥१३॥

ॐ ह्रीं वचनकृतांतरंगपरिग्रहमान-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मामा का कुल जो ऊँचा हो, अभिमान करें न सांचा हो।
अपनी आतम को पहचानो, बस बात प्रभु की ही मानो ॥१४॥

ॐ ह्रीं वचनकारितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है पुण्य उदय तन बल पाया, अभिमान संग में है आया।
तन नश्वर माटी का पुतला, माटी को माटी में मिलना ॥१५॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितांतरंगपरिग्रहमानकृत-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तप करने से ऋद्धि आती, तब मान कषाय भी बढ़ जाती।
प्रभु चौंसठ ऋद्धि के धारी हैं, अभिमान दोष निरवारी हैं ॥१६॥

ॐ ह्रीं कायकृतांतरंगपरिग्रहमान-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन स्वस्थ मिला तप करते हैं, अभिमान दूर ही रखते हैं।
काया से धर्म कराया है, काया का दोष मिटाया है ॥१७॥

ॐ ह्रीं कायकारितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सुन्दर शरीर अभिमान आये, आतम ज्ञानी को न मान भाये।
अंतर परिग्रह यह बतलाया, तजने का भाव बना लाया ॥१८॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितांतरंगपरिग्रहमान-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

माया कषायान्तरंग परिग्रह दोष विचार

पद्धरि छंद

मन वचन काय के अलग रूप, आतम को करता है विरूप।
मनकृत माया को तजना है, यदि निज आतम को भजना है ॥१९॥

ॐ ह्रीं मनःकृतमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जब निज आतम को भूल जायें, तब छल होता निज को सतायें।
माया कारित भी दुखदायी, ना आवें आर्जव धर्म भाई ॥२०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अंतर बाहर हो अलग भाव, दो मुँहा है माया का स्वभाव।
सच्चाई नाहीं दिखाती है, निज आतम को भरमाती है ॥२१॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अंदर में होते कुटिल भाव, मीठे वचनों से कर प्रभाव।
वचकृत माया यह दोष कहा, आतम ने तो अति दुःख सहा ॥२२॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन वचन काय जब सरल होय, तब आर्जव धर्म का बीज बोय।
आर्जव तो सरलता लाता है, सीधे ही मोक्ष को जाता है ॥२३॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

माया किसी और की पहचानी, अनुमोद करें कर मनमानी।
इसको भी दोष बताया है, जिसने आतम को सताया है ॥२४॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कुछ होते हैं कुछ दिखलाना, कुछ और सोच कुछ सिखलाना।
माया कई रूप बनाती है, पर निज आतम न भाती है ॥२५॥

ॐ ह्रीं कायकृतमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया के चक्कर में माया, माया की काली है छाया।
जिन सम जयवन्त जो होना है, माया को दूर ही रखना है ॥२६॥

ॐ ह्रीं कायकारितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यदि धर्म में मायाचारी हो, तिर्यंच गति तैयारी हो।
हों सरल-सरल हो सरल भाव, माया का करता है अभाव ॥२७॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमायाकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लोभ कषायान्तरंग परिग्रह दोष विचार

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के लोगो...)

वस्तु का रूप जो देखा, झट उसमें मन को फेंका।
मनकृत यह दोष निवारूँ, निसंग भावना धारूँ ॥२८॥

ॐ ह्रीं मनःकृतलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जो लोभ को नाहीं सम्हाले, तो बुने कर्म के जाले।
मन कारित संग को त्यागू, निसंग भाव में जागूँ ॥२९॥

ॐ ह्रीं मनःकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परिग्रह अनुमोदन पाप, यह भी देता संताप।
अनुमोदना से भी बचना, वरना पापों में रखना ॥३०॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परिग्रह कैसे हो इकट्ठा, उपदेश देय जो सस्ता।
वचनों को जरा संभालों, आतम को इससे बचा लो ॥३१॥

ॐ ह्रीं वचनकृतलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जब लोभ ज्यादा बढ़ जावें, धरती में धन को गड़ावें।
बन नाग उसी पर बैठे, औ दुर्गतियों में भटके ॥३२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यह मोह ही लोभ कराये, सबको अपना बतलाये।
जबकि कुछ नहीं है मेरा, ये जग माया का फेरा ॥३३॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भगवान ने जिसको छोड़ा, भक्तों ने उसको जोड़ा।
ये भक्त समझ ना पायें, क्योंकि मन लोभ सताये ॥३४॥

ॐ ह्रीं कायकृतलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यह लोभ पाप का बाप, न करने देता जाप।
यह धर्म से दूर कराये, बस लोभ में ही उलझाये ॥३५॥

ॐ ह्रीं कायकारितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हर जन्म में लोभ सताये, संग एकत्रित करवाये।
फिर छोड़ वहाँ से जाये, कही और वही कर आये ॥३६॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितलोभकषायान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हास्य कषायान्तर परिग्रह दोष विचार

चाल छन्द

हँसने को कषाय बताया, इसने बाहर उलझाया।
हँसते में धर्म न होवें, यह बीज कष्ट के बोवें ॥३७॥

ॐ ह्रीं मनःकृतहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संक्लेश हास्य करवाये, यह जग में भी भरमाये।
इसलिये समता को धारो, निज आतम रूप निहारो ॥३८॥

ॐ ह्रीं मनःकारितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी दुखिया पर मत हँसना, वरना पापों में फँसना।
यह हँसी दुखों का खजाना, इससे अपने को बचाना ॥३९॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

द्रौपदी की हँसी को जानो, फल महाभारत ही मानो।
वचनों पर संयम लाओ, स्वपर को सुखी कराओ ॥४०॥

ॐ ह्रीं वचनकृतहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जो व्यंग में है मुस्काये, वो गहरे तीर चलाये।
भावों की हिंसा कराये, दुर्गतियों में भटकाये ॥४१॥

ॐ ह्रीं वचनकारितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हँसते में ध्यान न होता, ना ही स्वाध्याय है होता।
हँसना तो भूख को बढ़ावे, हमें धर्म से दूर करावे ॥४२॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शत्रु पर भी ना हँसना, ना ही पापों को कसना।
समता की ले लो शरणा, आओ प्रभु जी के चरणा ॥४३॥

ॐ ह्रीं कायकृतहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

न हँसी किसी की बनाओ, न हँस के उसे सताओ।
हित और अहित को जानों, प्रभु जी की बात को मानो ॥४४॥

ॐ ह्रीं कायकारितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ओ पाप परिग्रह त्यागी, वह ही होता वैरागी।
वैरागी आत्म को ध्याता, हँसने में पल न गँवाता ॥४५॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितहास्यान्तरंगपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रति कषायान्तर परिग्रह दोष विचार

दोहा

बाह्य जगत में प्रीति को, मन से खूब बढ़ाय।
रति भाव उसको कहा, प्रभु तज के हर्षाये ॥४६॥

ॐ ह्रीं मनःकृतरतित्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

देख जगत की वस्तु को देखत ही उमगाय।
औ पाने की लालसा, परिग्रह ही कहलाये ॥४७॥

ॐ ह्रीं मनःकारितरत्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रथम प्रेम पश्चात् दुख, रति ही देकर जायें।
दुखमय ऐसे प्रेम को, प्रभु तज, निज को ध्यायें ॥४८॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितरत्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्तु के गुण गावता, वचनों से ललचाय।
वचन से प्रभु गुण गाइये, आतम प्रीति बढ़ाये ॥४९॥

ॐ ह्रीं वचनकृतरत्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्वयं प्रीत तो करता है, औरों को करवाय।
पाप प्रचार जग में करें, ये भी दोष कहाय ॥५०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितरत्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रीत जगत जो कर रहा, करें वच से अनुमोद।
आतम नाहीं जानता, ना आतम का शोध ॥५१॥

ॐ ह्रीं वचनाऽनुमोदितरत्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महा अशुभ इस राग में, मन में अति हर्षाय।
सब कुछ छोड़ के जाना है, बात को यही भुलाय ॥५२॥

ॐ ह्रीं कायकृतरत्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भूत भावी की सोचे ना, वर्तमान का राग।
सब कुछ उसी को मानता, करो राग का त्याग ॥५३॥

ॐ ह्रीं कायकारितरत्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूजें की चिंता करें, निज हित याद न आयें।
राग प्रीत इस मोह में, इतना उलझ ये जायें ॥५४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितरत्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अरति कषायाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार

दोहा

जिस वस्तु में प्रीत ना, करता उससे द्वेष।
अरति भाव इसको कहा, सत्य दिगम्बर वेश ॥५५॥

ॐ ह्रीं मनःकृतारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोजन अच्छा ना लगे, द्वेष भाव मन लाय।
समता मन में ना धरे, कर्म-कर्म बुलवाय ॥५६॥

ॐ ह्रीं मनःकारितरत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूप असुन्दर देख कर, निंदा में लग जायें।
निंदा मन गंदा करे, शत्रु को उपजाय ॥५७॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूर करो इस वस्तु को, द्वेष वचन को बोल।
आतम को ना जानता, निज रहस्य को खोल ॥५८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मंत्र यंत्र षड्यंत्र से, द्वेषी दुख पहुँचायें।
दुख के बदले दुख मिले, जिनवर जी समझायें ॥५९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

द्वेष भावना लेयकर, यदि मन्दिर में जाये।
धर्म में मन तो लगे नहीं, पाप कर्म बुलवाये ॥६०॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

द्वेष इशारे से किया, द्वेष भाव अज्ञान।
द्वेष छोड़ समता धरो, तो आवेगा ज्ञान ॥६१॥

ॐ ह्रीं कायकृतारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

व्यर्थ द्वेष ज्यादा करें, क्योंकि हैं अंजान।
कर्म नहीं अंजान है, वो देगा अंजाम ॥६२॥

ॐ ह्रीं कायकारितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

आकांक्षा पूरी न हो, द्वेष भाव आ जाय।
दोनों दुख के कारण है, यह क्यों समझ न पायें ॥६३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितारत्यभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

शोक कषायान्तर परिग्रह दोष विचार

दोहा

यदि अपमान जो हो गया, करता शोक के भाव।
आतम को नहिं जानता, ना ही निज का स्वभाव ॥६४॥

ॐ ह्रीं मनःकृतशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

घटना यदि कोई घट गई, चिन्ता सिन्धु डूब।
आहें भरता रात दिन, कर्म बंध मन खूब ॥६५॥

ॐ ह्रीं मनःकारितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

कर्म असातावेदनी, चिन्ता ही बुलवाये।
फल तो निश्चित दुखद है, ये क्यों समझ न पाये ॥६६॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

आँसू बीज जो बोवता, आँसू ही फल आये।
शोक दुःख ही लायेगा, जिनवर जी बतलायें ॥६७॥

ॐ ह्रीं मनःकृतशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

चारित शुद्धि के लिये, करो शोक का त्याग।
आतम शुद्धि होयगी, खिले आत्म का बाग ॥६८॥

ॐ ह्रीं वचनकारितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं

है प्रसन्न जिनमुद्रा भी नहीं शोक का काम।
नहीं प्रभावित हो प्रभु, इसीलिये निष्काम ॥६९॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पश्चाताप गहरा हुआ, चिन्ता धुन बन जायें।
डिप्रेशन के रोग से, दुख तो अधिक ही पायें ॥७०॥

ॐ ह्रीं कायकृतशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निज हित की सोचो जरा, चिन्ता दूर भगाय।
दर्श करो जिनदेव के, उन्हें देख मुस्काय ॥७१॥

ॐ ह्रीं कायकारितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिन्ता चिता है बन रही, जीवन हुआ बेकार।
क्या लेकर के आये थे, न जाये सरकार ॥७२॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितशोकाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भयाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार

दोहा

सम्यक् दृष्टि न डरे, चाहे मृत्यु आ जाये।
से डर जाये कहाँ, वहाँ भी ये आ जाये ॥७३॥

ॐ ह्रीं मनःकृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन परिवर्तन मृत्यु है, सच्चाई को जान।
भय से कुछ ना होयगा, बदलेगा स्थान ॥७४॥

ॐ ह्रीं मनःकारितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कैसे इस जग में रहूँ, डरता मन के माँहि।
गुण न आने देता है, कष्ट सहे जग माँहि ॥७५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हाय बीमारी होय न, सोचत है दिन रैन।
इसे वेदना भय कहा, आता नहीं है चैन ॥७६॥

ॐ ह्रीं वचनकृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कही अचानक दुख ना हो, करता रहे विचार।
अकस्मात भय है कहा, कर्म का है विकार ॥७७॥

ॐ ह्रीं वचनकारितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अगले जनम में मैं कहाँ जाऊँगा हे नाथ।
वहाँ पे जाने क्या मिले, भय का है ये पाथ ॥७८॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भय चारित का दोष है, नहीं करे वह ध्यान।
धर्मध्यान में बाधा है, ना पावे निर्वाण ॥७९॥

ॐ ह्रीं कायकृतभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गुप्त बात कोई जान लें, सबसे है भयभीत।
उसे छुपाता ही फिरे, ना है धर्म के गीत ॥८०॥

ॐ ह्रीं कायकारितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

मेरा कोई रक्षक नहीं, भय के भाव बनाय।
धर्म सदा रक्षा करें, बात भूल ये जायें ॥८१॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितभयनामाभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

जुगुप्सा कषायाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

चौपाई

देख पसीना ग्लानि करता, समता भाव न मन में धरता।
कर्म जुगुप्सा बंध किया है, कर्म परिग्रह ओढ़ लिया है ॥८२॥

ॐ ह्रीं मनःकृतजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धूल भरी देखी जो शैय्या, करता ग्लानि याद करें मैय्या।
ग्लानि कर्म बंध करवाये, प्रभु चरणों में हम अर्घ्यं चढ़ावें ॥८३॥

ॐ ह्रीं मनःकारितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

खुद उपवास जो न कर पावें, तपसी देख ग्लानि उपजावें।
ग्लानि धर्म से दूर करावें, चारित में यह दोष लगावें ॥८४॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गंदे दाँत देख कर ग्लानि, बात नहीं जिनवर की मानी।
बस बाहर में ही उलझा है, सच्चे धर्म से ना सुलझा है ॥८५॥

ॐ ह्रीं वचनकृतजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन मल देख ग्लानि को करता, वस्तु स्वरूप को नहीं समझता।
वस्तु स्वरूप समझ जो आवे, नहीं ग्लानि फिर उसे सतावें ॥८६॥

ॐ ह्रीं वचनकारितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

केश वृद्धि या लम्बे बाल, बना है ज्यों मकड़ी का जाल।
उसे देखकर ग्लानि कीनी, पाप कर्म में वृद्धि कीनी ॥८७॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ग्लानि मन को देय अशांति, हर दम ही है फैलती भ्रांति।
कर्म बंध ऐसा करवायें, जो भविष्य को दुखद बनायें ॥८८॥

ॐ ह्रीं कायकृतजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

मन से दूर करो यह ग्लानि, तब ही प्रभु की बात है मानी।
आज्ञाकारी भक्त कहाओ, तब ही आतम ध्यान को पाओ ॥८९॥

ॐ ह्रीं कायकारितजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सड़न गलन पुदगल का स्वभाव है विशुद्ध आतम का भाव।
अपने आत्म स्वभाव को जानो, कर्म जुगुप्सा दूर ही मानो ॥९०॥

ॐ ह्रीं कायानुमतिजुगुप्साभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

स्त्री वेदाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

चौपाई

बाह्य भोग में मन ललचावे, स्त्री वेद उदय को पावे।
धार महाव्रत दोष निवारों, अपने मन के भाव सम्हारों ॥९१॥

ॐ ह्रीं मनःकृतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काल अनादि के संस्कार है, धर्म से इनके हटे विचार है।
मनकारित यह दोष बताया, दूर करन का भाव बनाया ॥९२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वेद उदय में भाव है उठतें, संयम से वे दूर ही रहते।
अनुमोदना भी ना करना, पाप कार्य से दूर ही रहना ॥९३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्त्री वेद के वचन न बोलो, अंदर आतम का मल धोलो।
वचकृत दोष दूर है करना, महाव्रत धर इसको है हरना ॥९४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

स्त्री वेद के भाव विकार, परिग्रह बन ये करें प्रहार।
निज आतम का अहित है करते, तजने पर ही भाव संवरते ॥९५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचन से न अनुमोदन करिये, वचनों से भी रक्षा करिये।
वचन कीमती है अनमोल, इनका ना ही कोई तौल ॥९६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

आतम को यदि शुद्ध बनाना, काया का संयम रखवाना।
काय आत्म की शक्ति बढ़ाती, आतम का निज रूप दिखाती ॥९७॥

ॐ ह्रीं कायकृतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

विषय विकार महा दुखदायी, जग में भरमाता है भाई।
विष के सम ये कष्ट को देते, महाव्रत धार आत्म सुख लेते ॥९८॥

ॐ ह्रीं कायकारितस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

विषयों की अनुमोदना विष है, यह तो करती जगत भ्रमित है।
विषयों के वश में न होना, ना ही इसमें जीवन खोना ॥९९॥

ॐ ह्रीं कायानुमतस्त्रीवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

पुरुष वेदाश्रिताभ्यन्तर दोष विचार

चौपाई

पुरुष वेद भी वेदन करता, धर्म ज्ञान के भाव को हरता।
मनकृत दोष को दूर हटाना, आतम को यदि शुद्ध बनाना ॥१००॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

नहीं कुशील जो मन में आवे, ना ही औरों से करवावे।
मनकारित के भाव को छोड़ों, धर्म ज्ञान से नाता जोड़ो ॥१०१॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

पुरुष शक्ति सबसे बड़ी शक्ति, आत्म धर्म की करो अभिव्यक्ति।
ऐसा भव कब मिले दुबारा, यदि नहीं संयम को धारा ॥१०२॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

वेद परिग्रह कहलाता है, ग्रह चक्कर ही भटकाता है।
परिग्रह ही संकट बुलवायें, ताप शाप संताप बढ़ायें ॥१०३॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

वेद उदय ही राग बढ़ायें, समय पे यदि न संयम लायें।
राग आग सम खूब जलायें, भव - भव में यह खूब घुमायें ॥१०४॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

मोह के संग में क्रोध भी आयें, मान माया के बादल छायें।
इसलिये अनुमोदन करना, यदि दुखों का सागर तरना ॥१०५॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

काया इच्छा पूर्ति चाहे, आतम तप की चलता राहें।
संयम अमृत काय सुधारे, स्वस्थ्य चित्त और आत्म निहारें ॥१०६॥

ॐ ह्रीं कायाकृतपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

काया काम का करे इशारा, औरों में भी भरे विकारा।
काया कारित कर्म बुलायें, पाप कर्म जग में भटकायें ॥१०७॥

ॐ ह्रीं कायाकारितपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

उत्तम पुरुष भगवान हमारे, पुरुष वेद को करें किनारे।
अंतर का परिग्रह छोड़ा है, निज आतम में मन जोड़ा है ॥१०८॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपुरुषवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

नपुंसक वेदाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

चौपाई

अशुभ नपुंसक वेद बताया, इसने जीवों को है सताया।
मनकृत दोष को दूर कराये, प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाये ॥१०९॥

ॐ ह्रीं मन:कृतनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

वेद नपुंसक अति दुख देता, इक क्षण का भी सुख न होता।
मन कारित दोषों को दूर, महाव्रत धारी सुख भरपूर ॥११०॥

ॐ ह्रीं मन:कारितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

वेद नपुंसक पाप करायें, दुर्गतियों में ये भिजवायें।
अनुमोदन भी महापाप है, महाव्रती का पूर्ण त्याग है ॥१११॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

विषय राग अंतर की अग्नि, दावानल से तेज है अग्नि।
अग्नि के सम वेद जलायें, धर संतोष प्रभु निज ध्यायें ॥११२॥

ॐ ह्रीं वचन:कृतनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

मन को भोग मैल से भरता, समता धर गुरु इनको धोता।
वचन हो कारित दोष लगायें, महाव्रती इसे दूर करायें ॥११३॥

ॐ ह्रीं वचनकारितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

वेद नपुंसक का अनुमोदन करना होगा अब अवरोधक।
मुक्ति द्वार पे ताला लगाये, हम प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाये ॥११४॥

ॐ ह्रीं वचनाऽनुमोदितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

धर्म की शक्ति कष्ट मिटायें, जगत दुखों से जीव बचाये।
कायाकृत दोषों को छोड़ो, निज आतम से नाता जोड़ो ॥११५॥

ॐ ह्रीं कायकृतनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

काया से नहि हँसी उड़ाना, ना ही सहयोग उनका कराना।
काया कारित दोष हटाये, हम प्रभु चरणों अर्घ्यं चढ़ाये ॥११६॥

ॐ ह्रीं कायकारितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

धर्म आत्मा से ही करना, वन में रह आतम को ध्याना।
काय अनुमोदन भी दुखदाई, प्रभु चरणों में शांति पाई ॥११७॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितनपुंसकवेदाश्रिताभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

मिथ्यात्वाश्रिताभ्यंतर दोष विचार

(तर्ज-चौबीसी पूजा)

मिथ्याभावों के साथ, मिथ्यातम छायें।
मिथ्यात्व भाव का त्याग, करने हम आयें॥
अंतर परिग्रह यह जान, धर्म न होने दें।
सच्चा आतम श्रद्धान, भाव न करने दें॥११८॥

ॐ ह्रीं मन:कृतमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

कुगुरु कुदेव कुशास्त्र, को जो मानता है।
यह है गृहीत मिथ्यात्व, सच न जानता है॥
सुगुरु सुदेव सुशास्त्र, पर श्रद्धान करें।
सम्यक्त्व भाव आ जायें, वह मिथ्यात्व हरें॥११९॥

ॐ ह्रीं **मन:कारितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

तन जन्म में आतम जन्म, जो भी मानेगा।
अगृहीत कहा मिथ्यात्व, सच न जानेगा॥
सम्यक्त्व शुद्ध हो जायें, इसके जाते ही।
निज आतम मिल जायें, मन को भातें ही॥१२०॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

एकान्त पक्ष के साथ, वचन जो कहता है।
मिथ्यात्व दोष लग जाये, धर्म ये कहता है॥
स्याद्वाद वीर की वाणी, इसको अपनाओ।
सम्यक्त्व के संग में ज्ञान, सबको समझाओ॥१२१॥

ॐ ह्रीं **वचनकृतमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**_।

उल्टा हो जावे ज्ञान, मिथ्या को लाये।
अभ्यंतर शुद्धि हेत, तजने को आयें॥
वच कारित मिथ्या दोष, प्रभु जी दूर करें।
प्रभु जी सब दोष से दूर, मम अज्ञान हरें॥१२२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

हीरा कंकड़ समदेव, सबको एक कहे।
करें विनय सभी की एक, वह न ज्ञान लहे॥
यह विनय महा मिथ्यात्व, जग में भरमाये।
धरो वीतराग श्रद्धान, जग ना अटकायें॥१२३॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मिथ्या अज्ञान भरा, मिथ्या वचन कहे।
खुद भटके और भटकाये, जग के कष्ट सहे॥
अब सच्चे ज्ञान को पा, समकित पाना है।
अज्ञान भाव को दूर, अब करवाना है॥१२४॥

ॐ ह्रीं कायकृतमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिन वचन में संशय होय, हो मिथ्यात्व महा।
जिन वचन में श्रद्धा होय, यह सम्यक्त्व कहा॥
है सम्यक् दर्शन नींव, मुक्ति मंजिल की।
सम्यक्त्व महासुखकार, वाणी जिनवर की॥१२५॥

ॐ ह्रीं कायकारितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषविवर्जिताय श्री** जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मोही उलझा जग बीच, साथ असंयम है।
जिनदेव दर्श से ज्ञान, होता संयम है॥
सम्यक् बिन दुख का नाश, कभी न होयेगा।
मिथ्या अनुमोदना छोड़, वरना रोयेगा॥१२६॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमिथ्यात्वनामाभ्यन्तरपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री** जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

क्षेत्राश्रित परिग्रह दोष विचार

(तर्ज-चौबीसी पूजा)

है अनाज उत्पत्ति स्थान, उसको क्षेत्र कहा।
अपने से देखे अलग, ज्ञान का नेत्र कहा॥

निसंग हो करते त्याग, अपना ना माने।
आतम के सिवा न कोई, अपना ना जाने॥१२७॥

ॐ ह्रीं मनःकृतक्षेत्रबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपना पर का सब क्षेत्र, सबको छोड़ दिया।
न राग करें ना द्वेष, भाव से त्याग दिया॥
निष्पृह भावो को धार, दोषों को छोड़ा।
आतम के ध्यानी आप, मन को है मोड़ा॥१२८॥

ॐ ह्रीं मनःकारितक्षेत्रबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धरती के लिये संसार, लड़ता फिरता है।
अध्यात्मिक ज्ञान का सार, आपमें दिखता है॥
अनुमोद भी न करते, दोषों को त्यागा।
आया है सच्चा ज्ञान, मोह तुरत भागा॥१२९॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तिल शाली यव औ धान्य, खेत में होते हैं।
जन खेत से करते मोह, बीज को बोते हैं॥
प्रभु हृदय बीच में बीज, ध्यान का डाला है।
सच्चे आनंद को पायें, तोड़ा जाला है॥१३०॥

ॐ ह्रीं वचनकृतक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूजे का हो यदि खेत, उसको ना देखें।
अपने से अपना ध्यान, निज को निज लेखे॥
पर लेश मात्र नहिं भाव, परिग्रह का होता।
लेना देना सब छोड़, निज में ही रमता॥१३१॥

ॐ ह्रीं वचनकारितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों का भी अनुमोद, वे ना करते हैं।
संपूर्ण त्याग के भाव, निज में धरते हैं॥
परिग्रह को ग्रह सम मान, आपने छोड़ा है।
नहिं कोई ग्रह अब सताये, बंध को तोड़ा है॥१३२॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-**दोषविमुक्ताय श्री** जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया का इशारा नाहिं, भूमि मेरी है।
आतम के भाव सुधार, भूख घनेरी है ॥
परिग्रह से ममता छोड़, आत्म सँवारा है।
आतम का सुन्दर रूप, तुमने निहारा है ॥१३३॥

ॐ ह्रीं कायकृतक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

ये भूमि साथ ना जायें, मोह कहे अपना।
जनमे मरते है लोग, लख झूठा सपना ॥
भूमि मेरी है नाम, अपना लिखवायें।
पा सच्चे ज्ञान को आप, भाव से तज आये ॥१३४॥

ॐ ह्रीं कायकारितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

ना माने अपना गाँव, गाँव को छोड़ा है।
मुक्तिपुर मेरा गाँव, नाता जोड़ा है ॥
वापस ना जहाँ से आये, वह है धाम मेरा।
मुक्ति जा सिद्ध कहाय, सिद्ध है नाम मेरा ॥१३५॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्षेत्राश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वास्तु-आश्रित, बाह्य परिग्रह दोष विचार

तर्ज - चौबीसी पूजा (जल फल आदि...)

परिग्रह के त्यागी देव, घर भी छोड़ दिया।
घर से ना करने मोह, मन को मोड़ लिया ॥
मन में संयम को धार, निज को ध्याया है।
हम भक्त चरण में आये, आत्म सम्हारा है ॥१३६॥

ॐ ह्रीं मनःकृतवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हम घर का मालिक थे, मैंने बनाया है।
किंचित न आते भाव, मोह हटाया है ॥
अकिंचन व्रत को पाल, जग को त्याग दिया।
परिग्रह का मोह हटाय, आत्म सँवार लिया ॥१३७॥

ॐ ह्रीं मनःकारितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है महल कोठी औ मकान, सुन्दर जो होते।
लख करें नहीं अनुमोद, कर्मों को धोते ॥
परिग्रह छाया भी छोड़, बने दिगम्बर हैं।
दश दिशा के रहते बीच, दिशा ही अंबर हैं ॥१३८॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ममता अनुराग को त्याग, वचन से ना बोले।
ये मेरा महल मकान, द्वार नहीं खोले ॥
झलके निज आत्म स्वरूप पर का मोह तजा।
कर-करके आतम ध्यान, आतम राम भजा ॥१३९॥

ॐ ह्रीं वचनकृतवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तजे बगिया महल मकान, याद ना आते हैं।
परिग्रह किसी और का देख, नाहिं लुभाते हैं ॥
वैराग्य भावना धार, ध्यान सदा करते।
है नित्य नहीं संसार, ममता ना धरते ॥१४०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हुआ जड़-चेतन का ज्ञान, अलग-अलग जाना।
प्रज्ञा दृष्टि से देख, निज को है माना ॥
निज ज्ञान का ज्योतिर्लोक, सत्य नजर आया।
अंतर्मन से सब छोड़, निज को है ध्याया ॥१४१॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निज ध्यान का अमृत कुंड, उसमें नहाते हैं।
कर्मों के मैल को धोय, शुद्ध बनाते हैं ॥
काया तप से हो शुद्ध, आपने जान लिया।
आतम को करें विशुद्ध, निज का ध्यान किया ॥१४२॥

ॐ ह्रीं कायकृतवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परिग्रह को इकट्ठा कर, जग यह खुश होवे।
चिन्ता दुख संग में आय, पापों को बोवे ॥

यह मोह उदय भटकाये, इससे यूँ करता।
कर दर्श तुम्हारा देव, ज्ञान हमें होता ॥१४३॥

ॐ ह्रीं कायकारितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदना में भी पाप, निश्चित लगता है।
इसलिये करें इसे त्याग, आतम जगता है॥
आतम से करें अनुराग, आत्म भला करते।
है दुख पथ परिग्रह राग, आप इसे तजते ॥१४४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितवास्तुनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धनाश्रित बाह्यपरिग्रह दोष विचार

दोहा

गाय भैंस औ हाथी को, धन कहते जिनदेव।
पशु परिग्रह रूप है, तजो कहें जिनदेव ॥१४५॥

ॐ ह्रीं मनःकृतधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पशु को अपना मानकर, मैंने मन का भाव।
मनकारित यह दोष है, नहीं है शुद्ध स्वभाव ॥१४६॥

ॐ ह्रीं मनःकारितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्वयं रखन के भाव ना ना करते अनुमोद।
मन अनुमोदन भी तजा, किया है आतम शोध ॥१४७॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पशुओं की ममता तजी, आत्म शुद्धि के हेत।
वचन से भी न बोलते, अपना है ये खेत ॥१४८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हाथी घोड़े पालकर, उनसे मोह बढ़ाय।
छोड़े वैरागी इसे, चरणों अर्घ्य चढ़ाय ॥१४९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धन से निज सम्मान को, नहीं मानते देव।
आतम भक्ति सम्मान कर, करें स्वयं की सेव ॥१५०॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ऊँट बकरी भी पालते, भी पालते, करवाते हैं काम।
आत्म ध्यान निज काम है, भूले आतमराम ॥१५१॥

ॐ ह्रीं कायकृतधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रद्धा इतनी गहरी है, दिया है सब कुछ छोड़।
बाईस परीषह सहते हैं, मन निज आतम जोड़ ॥१५२॥

ॐ ह्रीं कायकारितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम के उपदेश को, लिया जीव ने धार।
मुक्ति पथ पर चालने, करते आत्म विहार ॥१५३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितधनाश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धान्याश्रित बाह्य परिग्रह दोष विचार

दोहा

धान्य अठारह तरह का, करें इकट्ठा लोग।
इतना न खा सकते हैं, परिग्रह का है भोग ॥१५४॥

ॐ ह्रीं मनःकृतधान्याश्रितबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गेहूँ दाल चावल चना, है ये परिग्रह धान्य।
पूर्ण भाव से इसे तजा, आतम को है मान्य ॥१५५॥

ॐ ह्रीं मनःकारितधान्यानामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

औषधादि उपधान्य है, नहीं रखें जिनदेव।
उर में समता धार कर, करें आत्म की सेव ॥१५६॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितधान्यानामबाह्यपरिग्रह-दोषविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मूर्च्छा परिग्रह छोड़कर, छोड़कर, वीतराग है भाव।
वचन शुद्धि कर के प्रभो, रहते आत्म स्वभाव ॥१५७॥

ॐ ह्रीं वचनकृतधान्यनामबाह्यपरिग्रह-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यदि ऊपर को उठना है, परिग्रह बोझ उतार।
भार रहित होकर प्रभु, रहते मोक्ष मँझार॥१५८॥

ॐ ह्रीं वचनकारितधान्यनामबाह्यपरिग्रह-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपदप्राप्तये **अर्घ्यं...।**

मोह छोड़ना कठिन है, किया आपने त्याग।
वचन वीतरागी हुये, खिला आत्म का बाग॥१५९॥

ॐ ह्रीं वचोनुमोदितधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-प्राप्तये **अर्घ्यं...।**

शक्ति औ सामर्थ्य से करो परिग्रह त्याग।
धीरे धीरे बढ़ चलो, मिले मोक्ष का पाथ॥१६०॥

ॐ ह्रीं कायकृतधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपदप्राप्तये **अर्घ्यं...।**

करें इकट्ठा जो भी जन, जाने पर दुख होय।
यदि इकट्ठा न करें, साधु सम सुख होय॥१६१॥

ॐ ह्रीं कायकारितधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये **अर्घ्यं...।**

अनुमोदन भी न करें, व्रत न लगायें दोष।
वीतराग जिन भाव में, होता है संतोष॥१६२॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितधान्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-प्राप्तये **अर्घ्यं...।**

द्विपद नाम बाह्य परिग्रह दोष विचार

दोहा

द्विपद यानि है पैर दो, सब मनुष्य के जान।
दास बना उसको रखा, परिग्रह है यह मान॥१६३॥

ॐ ह्रीं मनःकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

रखते न रखवाते हैं, करते नाहिं विचार।
मन कारित इस दोष को दूर करें जिनधार॥१६४॥

ॐ ह्रीं मनःकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

मित्र रिश्तों से राग कर अपना उन्हें बताय।
इसे परिग्रह है कहा, जिनवर जी समझाय॥१६५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

पुत्र स्त्री से मोह कर, चिन्ता करें दिन रैन।
वचन से भी अपना कहें, यह परिग्रह की देन॥१६६॥

ॐ ह्रीं वचनकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

दास खास न होते हैं, कार्य का है संबंध।
फिर भी अपना मानकर, करें करम का बंध॥१६७॥

ॐ ह्रीं वचनकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

परिग्रह जितना कम रहे, चिन्ता भी घट जाये।
पूर्ण परिग्रह त्याग से, धर्म अकिंचन पाय॥१६८॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।**

काय से दूर भले रहें, मन से जुड़ें है भाव।
इसीलिये आस्रव हुआ, छूटा आत्म स्वभाव॥१६९॥

ॐ ह्रीं कायकृतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अति परिग्रह जो रखे, मूर्च्छा भी बढ़ जाये।
अति परिचय जो करें, झगड़ा भी हो जायें॥१७०॥

ॐ ह्रीं कायकारितद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

परिग्रह की अनुमोदना, पाप परिग्रह जान।
धर्म अकिंचन पाना है, बारंबार प्रणाम॥१७१॥

ॐ ह्रीं कायानुमतद्विपदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

चतुष्पद बाह्य परिग्रह दोष विचार

दोहा

चतु पद मतलब चार पैर, होता है तिर्यंच।
इन से भी ममता तजी, मोह नहीं है रंच॥१७२॥

ॐ ह्रीं मनःकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

हाथी घोड़ा पाल के, करें सवारी रोज।
इसीलिए परिग्रह कहा, कर्म की है ये खोज ॥१७३॥

ॐ ह्रीं मनः कारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

इनमें ही ममता बढ़ी, बढ़ा राग का भाव।
संग अनुमोदना करते हैं, कभी होता दुर्भाव ॥१७४॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दुग्ध पान की भावना, गाय भैंस को पाल।
मोह भाव इनसे किया, बिछा कर्म का जाल ॥१७५॥

ॐ ह्रीं वचनकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

राग वचन व्यवहार में, निश्चित आवे रोज।
इनसे उत्तम त्याग है, पायें अकिंचन ओज ॥१७६॥

ॐ ह्रीं वचनकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविनाशनाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

चतुष्पद अच्छा योग्य है, इसे खरीदो आप।
करते न अनुमोदना, तभी मिटे संताप ॥१७७॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

गर्मी सर्दी में [illegible] के, बांधा [illegible] के पास।
[illegible] वर्षा के कष्ट से, उपजे उन्हें संताप ॥१७८॥

ॐ ह्रीं कायकृतचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

[illegible] भाव की [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] कारित दोष तज, [illegible] [illegible] की [illegible] ॥१७९॥

ॐ ह्रीं कायकारितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

[illegible] में [illegible] को, [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] को भी [illegible], त्याग से [illegible] [illegible] ॥१८०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितचतुष्पदनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

आसनाश्रित परिग्रह दोष विचार

दोहा

आसन शासन के लिये, किया पीठ का त्याग।
मनकृत दोष को दूर कर, किया राग का त्याग ॥१८१॥

ॐ ह्रीं मनःकृतआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आसन शासन माँगता, इसे परिग्रह जान।
निज पे शासन है किया, उत्तम भाव प्रमान ॥१८२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

आसन दूजे को मिले, इनसे भी नहिं राग।
नहीं करें अनुमोदना, किया मोह का त्याग ॥१८३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

आसन ला मेरे लिये, ऐसा कहते नाहिं।
वचकृत दोष भी तज दिया, रहते आतम माँहि ॥१८४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सुर गण सिंहासन बिछा, नहिं स्पर्श का काम।
चतु अँगुल ऊपर हुये, वीतराग जिनधाम ॥१८५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

वीतराग जब प्रगट हो, आतम आसन होय।
बाह्य आसन की आश न, बीज धर्म का बोय ॥१८६॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितआसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काय को आसन मिले, नहीं करते हैं विचार।
आत्म ध्यान आसन मिले, आवें शुद्ध विचार ॥१८७॥

ॐ ह्रीं कायकृत आसननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

आसन को परिग्रह कहा, यह भी मोह बढ़ावे।
मोह परिग्रह संग्रह कर, सब जग में भटकाय ॥१८८॥

ॐ ह्रीं कायाकारितासननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आत्म ध्यान में रमें जहाँ, वह उत्तम स्थान।
ध्यान में आसन क्या करें, आसन निज का धाम ॥१८९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितासननामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

शयनाश्रित परिग्रह दोष विचार

दोहा

साधु अवस्था त्यागमय, परिग्रह चिन्ता देय।
मनकृत दोष निवारते, निज आतम सुध लेय ॥१९०॥

ॐ ह्रीं मनःकृतशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मनहर उत्तम काष्ठ की, शैय्या सुख नहीं चाह।
आत्म ध्यान में लीन रह, चलते मुक्ति राह ॥१९१॥

ॐ ह्रीं मनःकारितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

नहि पलंग की भावना, ना बिस्तर का काम।
बाह्य परिग्रह तज दिया, निज आतम विश्राम ॥१९२॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

कोमल सुखद सुहावनी, किया शैय्या का त्याग।
आतम सुखद सुहावनी, करें आत्म अनुराग ॥१९३॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मृदु पुआल की भावना, रहे न मन में शेष।
बाईस परीषह सहन कर, करते कार्य विशेष ॥१९४॥

ॐ ह्रीं वचनकारितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गादी तकिया ना धरे, लिया दिगम्बर भेष ।
प्रकृति सम जग विचरते, चमके गगन दिनेश ॥१९५॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितशय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

भाव मृदु तन को कठिन, करें तपस्या घोर।
झर-झर झरते कर्म हैं, मिले मुक्ति का छोर ॥१९६॥

ॐ ह्रीं कायकृतशैय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ना देते उपदेश वे, शैय्या कैसी होय।
काया कारित दोष को, तजे सुखी वे होय ॥१९७॥

ॐ ह्रीं कायकारितशैय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित- दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्ञान में जाग्रत रह सदा, जागे आतम माहिं।
सोते में भी जागते, रमे न विषयों माहिं ॥१९८॥

ॐ ह्रीं कायानुमतशैय्यानामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

कुप्य (वस्त्र) आश्रित परिग्रह दोष विचार

भुजंगप्रयात छंद (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

मनु तन के दोष, तो वस्त्र छिपावें।
इकट्ठा करें और, परदा लगावें॥
परिग्रह है पाप, जो आपने जाना।
किया त्याग वस्त्रों का, निज पद को माना ॥१९९॥

ॐ ह्रीं मनःकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

संसारी राग से, वस्त्रों को पहने।
सजाता है तनको, पहने है गहने॥
परिग्रह को मन से, जो आपने छोड़ा।
तजा बाह्य राग को, मोह मरोड़ा ॥२००॥

ॐ ह्रीं मनःकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ओढ़े है शाल, दुशाले भी भारी।
करें तन की चिंता, न आतम बिहारी॥
बने वीतरागी, तो इनको है छोड़ा।
जगत बंधनों से, है नाता को तोड़ा ॥२०१॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-

प्राप्तये अर्घ्यं...।

कम बल है जिनका, वे कम्बल को ओढ़े।
इन्हें ओढ़ने में वे, मोह को जोड़े॥
तजा मोह तन का, है कम्बल भी छोड़ा।
किया ध्यान निज का, जगत राग तोड़ा॥२०२॥

ॐ ह्रीं वचनकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धर्म अकिंचन तो, सब कुछ छुड़ावे।
सुंदर निजातम का, रूप दिखावे॥
यह लक्ष्य मेरा, यही मुक्ति मंजिल।
दो आशीष प्रभुवर, बनूँ मैं भी काबिल॥२०३॥

ॐ ह्रीं वचनकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषविमुक्ताय श्री जिनाय** अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्त्र है कोमल पर, राग न करते।
तजी मोह ममता, स्वयं में सँवरते॥
दिगम्बर बने, शेष कुछ भी नहीं है।
प्रभु तेरी वाणी, तो सच्ची सही है॥२०४॥

ॐ ह्रीं वचोऽनुमोदितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

रंगीन वस्त्रों की, दुनिया निराली।
सभी इनमें उलझे, है छाया भी काली॥
प्रभु मोह छोड़ा, निजातम निहारे।
निजातम की छवि पा, स्वयं को सम्हारे॥२०५॥

ॐ ह्रीं कायकृतकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये** अर्घ्यं...।

तन के सभी दोष, मन से हटाये।
तभी तो तजे वस्त्र, आतम को ध्याये॥
छिपे दोष वस्त्रों से, पाप कराते।
परिग्रह हुआ काफी, चिन्ता कराते॥२०६॥

ॐ ह्रीं कायकारितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं**...।

वस्त्र प्रशंसा भी, ना ही वे करते।
अनुमोद दोषों का शोधन वे करते॥
वस्त्रों का राग, बड़ा ही दुखदाई।
धर्म अकिंचन, जो होवे सुखदाई॥२०७॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितकुप्यनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं**...।

भाण्डाति बाह्य परिग्रह दोष विचार

भुजंगप्रयात छंद (नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

पात्रों को तजके, महाव्रत को धारा।
न दोष लगाते, ले व्रत का सहारा॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२०८॥

ॐ ह्रीं मनकृतभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं**...।

बना पात्र अंजुलि, वे आहार लेते।
बने वीतरागी, धरम पथ को देते॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२०९॥

ॐ ह्रीं मनकारितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषनिवारकाय **श्री जिनाय** अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्वर्ण का बर्तन, न मोह किया है।
संयम से उन ने, मन वश में किया है॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२१०॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-**प्राप्तये** अर्घ्यं...।

है चाँदी का बर्तन, ना राग से देखे।
निजातम है अपनी, वे निज को ही लेखें॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२११॥

ॐ ह्रीं व[illegible]भाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-**दोषनिवारकाय श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-प्राप्तये

अर्घ्यं...।

वे ताँबे का बर्तन, न पास में रखते।
किया मोह त्याग, न सुख स्वाद चखते॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२१२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

न पीतल का बर्तन भी, उनने मंगाया।
न ममता ही कीनी, न मन को डिगाया॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२१३॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

वे त्याग करें, औ विशुद्धि बढ़ाते।
वे उत्तम धरम से, अशुद्धि हटाते॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२१४॥

ॐ ह्रीं कायकृतभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बर्तन का नर्तन, नहीं आप करते।
तजी सारी निधियाँ, निजातम को वरते॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२१५॥

ॐ ह्रीं कायकारितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोद बर्तन का, ना आप कीना।
चिन्ता रहित हो के, निज ध्यान कीना॥
अकिंचन के धारी, परिग्रह के त्यागी।
रहें सुख से निज में, हैं आतम बिहारी॥२१६॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितभाण्डनामबाह्यपरिग्रहाश्रित-दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

शंभू छंद (तर्ज-पीछी रे पीछी...)

अंदर में परिग्रह कर्मों का, बाहर में परिग्रह फैला है।
संग्रह के भाव सदा उमड़े, इससे ही आतम मैला है॥
चौबीसों परिग्रह त्याग प्रभु, अपनी आतम को ध्याते हैं।
हम भी प्रभु पूजा तेरी करें, चरणों में अर्घ्य चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं आकिंचनमहाव्रताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

दोहा

पाप पाँचवा है कहा, परिग्रह को है जान।
सारे ग्रह इस पर चढ़े, तजो तो आये ज्ञान॥

शंभु छंद

हे नाथ आपकी शांत छवि, भक्तों के हृदय समायी है।
मुस्कान अधर पर ध्यान स्वयं पर, ध्यान रूप छवि भायी है॥
चिंतायें नहीं, पीड़ायें नहीं, ना कष्ट दिखाई देता है।
प्रभु तीन लोक के नाथ बने, तीनों लोकों के नेता है॥१॥

इक घर का मालिक बन करके, चिंता कष्टों में घुल जाता।
हे नाथ त्रिलोकी आप सुखी, क्यों बने समझ में ना आता॥
जिनवाणी माँ ने बतलाया, प्रभु सर्व परिग्रह त्यागी हैं।
वे आत्म ध्यान में लीन रहें, उनकी आतम तो जागी है॥२॥

अंदर में परिग्रह चौदह है, जो क्रोध मान मायाचारी।
और लोभ पाप का बाप कहा, इससे सारी दुनिया हारी॥
है हास्य रति अरति भय भी, है शोक जुगुप्सा स्त्री वेद।
ये ही आतम को भरमाते, हैं वेद नपुसंक पुरुष वेद॥३॥

अंदर में कषायें नहीं रहे, तो बाह्य परिग्रह कुछ न करें।
तब वीतरागता प्रगटेगी, जड़ से ही सारे कर्म हरे॥

अंदर की कषायें शांत करें, जो चाहे उष्ण में शीतलता।
संयम तप त्याग ही साधन है, आवेगी इससे निर्मलता ॥४॥

दश भेद है बाह्य परिग्रह के, जो सब आँखों से दिखता है।
है घर मकान सोना चाँदी, वस्त्राभूषण जग बिकता है॥
धन धान्य और बर्तन संग कहा, है दास दासी हाथी घोड़ा।
आया वैराग्य प्रभु तुमको, इक पल में ही सब कुछ छोड़ा ॥५॥

अंदर में भाव जो उठते हैं, बाहर का परिग्रह निमित्त बने।
दोनों ने मिलकर आतम में, ममता छाई और मोह घने॥
सब जानते हैं कुछ अपना नहीं, पर मोह तो अपना कहलाता।
मजबूत मोह की जड़ इतनी, सारा जीवन भ्रम में रहता ॥६॥

संसार स्वार्थ का मेला है, क्षणभंगुर है जीवन कलियाँ।
वैराग्य हुआ तब मोह तजा, छोड़ी तुमने जग की गलियाँ॥
प्रभु राग द्वेष दोनों को तज, बस निज आतम में लीन हुये।
तब वीतरागता प्रगट हुई, भक्तों ने प्रभु के चरण छुयें ॥७॥

सच्चा सुख सच्ची शांति तो, संपूर्ण त्याग से आई थी।
अकिंचन धर्म के धारी प्रभु, तब शांति छटा लहराई थी॥
प्रभु मुद्रा यही बताती है, संयम तप बिन तो मुक्ति नहीं।
अंतरमन की आवाज सुनो, प्रभु दर्श से मिलती युक्ति यही ॥८॥

मोह बिना भगवान है, मोह संग संसार।
अकिंचन शुभ धर्म से, छूटे कर्म प्रहार॥

ॐ ह्रीं अकिंचनधर्माधारक जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

मोक्ष के प्रेमी सच्चे हैं, तजते माया मोह।
मुक्ति पथ बढ़ते चले, मंजिल मिलेगी मोक्ष॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

रात्रि भुक्ति त्याग व्रत पूजा

शंभू छंद

भोजन को भुक्ति कहा यहाँ, उत्तम ऋषि उत्तम त्याग करें।
छटवाँ अणुव्रत यह कहलाया, उत्तम पालन तो ऋषि करें॥
व्रत को उपहार समझ लेते, उपवास को कर आनंदित हैं।
हम यथाशक्ति इस व्रत को करें, ये कर्म करें आतंकित हैं॥

दोहा

दोष दूर हो जायें प्रभु, व्रत करते इस हेत।
मन वच तन भक्ति करें, मिले मुक्ति का खेत॥

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जित श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जित श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-विवर्जित श्री जिन! मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शेरचाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

मिथ्यात्व मैल आत्मा में, है लगा हुआ।
संयम के जल को लेके, हमने इसे धो दिया॥
विषयों के विष तो हर समय, पीवते हैं।
हम अब तेरी पूजा से प्रभु, इसको करेगें कम॥

ॐ ह्रीं रात्रिभक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

व्रत नियम पाल मन ये मेरा, शांत होता है।
चंदन से है वंदन कि क्रोध, मैल खोता है॥
सान्निध्य प्रभु तेरा, सच्चा ज्ञान करायें।
पुरुषार्थ सच्चा होवे तो, हम मुक्ति में जायें॥

ॐ ह्रीं रात्रिभक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

अक्षय अनंत आत्मा का, खंड न होता।
अक्षय स्वभाव आत्मा का, पंथ न होता॥
अक्षय स्वभाव प्राप्ति हेतु, पूजता तुम्हें।
अक्षय है मुक्ति धाम, प्रभु प्राप्त हो हमें॥

ॐ ह्रीं रात्रिभक्ति-विवर्जिताय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

जिनदेव की हर बात, सच्ची राह दिखाये।
जो चलता है उस पथ पे, वही सौख्य को पाये ॥६॥

त्रिभंगी

तज जग की गलियाँ, चुन-चुन कलियाँ, भक्ति को हम ले आये।
इक हार बनाया, चरण चढ़ाया, भाव पुष्प भरकर लाये॥
चारित शुद्धि व्रत, चले मुक्ति पथ, सच्चेसुख की राह यही।
जहाँ प्रभु गये हैं, हम भी जायें, ज्ञान ध्यान की गंग बही॥

ॐ ह्रीं रात्रिभुक्ति-परित्यागताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शक्ति दो मुझको प्रभु, व्रत हम भी कर पायें।
भक्ति से युक्ति मिले, चरणों अर्घ्य चढ़ायें॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

मनोगुप्ति पूजा

स्थापना

त्रिभंगी छंद

अति मन की विशुद्धि, नहीं अशुद्धि, मन गुप्ति कहलाती है।
मन छुपा के रक्खा, दोष न चक्खा, बस आतम को ध्याती है॥
मन ही है राजा, करता काजा, निश्चित भाव सुधारेगा।
मन दोष हटाओ, धर्म को पाओ, निज का रूप निहारेगा॥

दोहा

मन गुप्ति को धारकर, लखे आत्म का रूप।
आव्हानन उनका करूँ, पाया आत्म स्वरूप॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधर श्री जिन ! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधर श्री जिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधर श्री जिन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलि क्षिपेत।

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के लोगो...)

कोई भी देखे वस्तु, न भाव बिगाड़े अस्तु।
मन गुप्ति को है पाया, जल से है पूज रचाया॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

वे पंच महाव्रत धारी, मन गुप्ति आप सम्हारी।
चंदन से पूजूँ उनको, हुई मन में विशुद्धि जिनको॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

वे राग द्वेष ना करते, समता में सदा ही रहते।
अक्षय आतम के कारण, करें काम क्रोध निस्तारण॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

दश धर्म का बाग लगाया, उसमें आतम सुख पाया।
बाहर की गंध न भाये, पुष्पों से पूज रचायें॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं...।

षट् रस का स्वाद न लेते, आतम रस को है चखते।
नैवेद्य से पूज रचाऊँ, मन वश में कराने आऊँ॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

निज ज्ञान दीप प्रज्वलाया, अज्ञान अंध नशवाया।
मैं दीप से पूजा करता, अपने अज्ञान को हरता॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जब आतम ध्यान लगाते, कर्मों का धुआँ उड़ाते।
ले धूप चरण में आऊँ, कर्मों का नाश कराऊँ॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

निष्काम योग को ध्याया, निस्वार्थ भावना भाया।
पर मुक्ति फल मिल जावें, फल से प्रभु पूज रचावें॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

मन पर संयम आ जावें, मन बाहर भाग न जावे।
मन से पूजा मैं करता, ले अर्घ्यं चरण में धरता॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिधराय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ्य

चौपाई

मन गुप्ति में मन वश रहता, नहीं भाग के बाहर जाता।
मनकृत दोष को दूर है करता, धर्म ध्यान में हरपल रहता॥१॥
ॐ ह्रीं मनः कृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन पर संयम रखते - रखते, ज्ञान ध्यान रस चखते - चखते।
मन गुप्ति की प्राप्ति होवे, मन कारित सब दोष को खोवे॥२॥
ॐ ह्रीं मनः कारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रोध मान मन में ना आये, स्वपर को ये नाहीं सताये ।
मन वश धीरे-धीरे होगा, ज्ञान से ही ये आतम जागा॥३॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रतिदिन सामायिक शुभ कीजे, सर्व त्यागी बन आतम लीजे।
वचकृत दोष को दूर भगाये, सच्ची सामायिक को पाये॥४॥
ॐ ह्रीं वचनकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निरतिचार व्रत मन जब पाले, भाव अशुभ ना धर्म को पाले।
वचकारित दोषों को छोड़ो, मन शुद्धि कर आतम जोड़ो॥५॥
ॐ ह्रीं वचनकारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शुद्ध भाव से धर्म को करना, इधर उधर मन से ना विचरना।
नाहीं अशुभ अनुमोदन कीजे, तभी धर्म के सुख को लीजे॥६॥
ॐ ह्रीं वचनोनुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सरल भाव सीधा कहलाता, सरल भाव ही धर्म को ध्याता।
सरल तरल हो मुक्ति जावे, मन कठोर वो दुःख उठावे॥७॥
ॐ ह्रीं कायकृतमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन स्थिर मन भी हो स्थिर, सामायिक में वचन हो स्थिर।
मन पर इसका प्रभाव है पड़ता, जाती है आतम की जड़ता॥८॥
ॐ ह्रीं कायकारितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्ञान अभीक्षण प्यास ज्ञान की, ज्ञान करो फिर बात ध्यान की।
ध्यान में आनंद अनुपम आवे, संसारी इसे कैसे बतावे॥९॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

दोहा

दीक्षा शिक्षा लेते हैं, मन शुद्धि के काज।
मन शुद्धि यदि हो गई, मिले मोक्ष का ताज॥
ॐ ह्रीं मनोगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

दोहा

चारित शुद्धि व्रत किये, मन वश करने हेत।
मन शुद्धि होवे मेरी, पूजा भाव समेत॥

पद्धरि छंद (ये धर्म आतम ज्ञानी...)

मिथ्या कुमति को नशाया है, सुमति शुभ ज्ञान को पाया है।
मन वश करने संयम पाले, उपसर्ग परीषह सह डाले॥१॥

पर मन में विकार नहीं आया, नहिं क्रोध मान की है छाया।
जीवों की रक्षा करते हो, तुम क्षमा भाव को धरते हो॥२॥

विषयों को तज महाव्रत धारा, निरतिचार ही व्रत सारा।
अरिहंत भक्ति भी कीनी है, निज आत्म में दृष्टि दीनी है॥३॥

तुम प्रतिदिन ही स्वाध्याय करो, सामायिक से मन दोष हरो।
वाणी हित मित प्रिय होती है, भरे ज्ञान ध्यान के मोती है ॥४॥

रत्नत्रय आभूषण पहने, कर घोर तपस्या कर्म हने।
नित पंचाचार को पाल रहे, सारे दोषों को टाल रहे ॥५॥

मन वश करने ये करते हैं, मन पर संयम नित धरते हैं।
मन पाप ताप न करवाता, मन पाप कर्म को हरवाता ॥६॥

नित मन की विद्धि बढ़ाते हैं, मन गुप्ति को निज ध्याते है।
मन शुद्धि सबसे बढ़ा धर्म, मन शुद्धि मन को करे नर्म ॥७॥

तन के विकार मन दूर करे, मन ही तो सारे दोष हरे।
मनगुप्ति पाने का भाव बना, मन से पूजा कर कर्म हना ॥८॥

दोहा

निर्मल विमल अमल बने, होवे सरल स्वभाव।
मन शुद्धि करने किया, सब ही दूर विभाव॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्ति प्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन गुप्ति जिनधारी को, करता नित्य प्रणाम।
मन शुद्धि के ही लिये, जपे नाम सुबह शाम॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

वचन गुप्ति पूजा

त्रिभंगी छंद

वचनों को तौला, फिर मुँह खोला, मात्र धर्म की बात करें।
वे व्यर्थ की बातें, नहीं बताते, वचनों को वे शुद्ध करें ॥
संतोष को धारे, आत्म संभारे, शुभ-शुभ वाणी बोल रहे।
विपरीत समय में, बात विनय से, राज धर्म का खोल रहे॥

दोहा

वचन गुप्ति व्रत धारकर, ज्येष्ठ श्रेष्ठ बन जाये।
वचन शक्ति को जानने, शत-शत शीश झुकाये॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिन ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तर्ज-चौबीसी पूजा (जल-फल...)

मिलता सच्चा सुख ज्ञान, प्रभु के चरणों में।
रहे सदा मेरा ये ध्यान, आपके वचनों में॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हितमित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥१॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

सुन दिव्य वाणी जिनरूप, शीतलता आवे।
चंदन सी ठंडक होय, मन में छा जावे ॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हितमित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥२॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

जिनवाणी अक्षय ज्ञान, वचन में शक्ति भरे।
वचनों से करें स्वाध्याय, पाप को आप हरें॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हितमित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥३॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

फूलों सम वाणी बोल, सत पथ दिखलाये।
भोगों से दृष्टि मोड़, ज्ञानी कहलाये॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हितमित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥४॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।**

ज्ञानामृत वचन पिलाय, तृप्ति आतम में।
भोजन की भूख मिट जाये, भक्ति आतम में॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥५॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

प्रभु वाणी ने प्रकाश, जग में फैलाया।
हर जीव सुखी हो जाये, सुख से मिलवाया॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हितमित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥६॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

वचनों का गलत प्रयोग, पाप को बुलवाता।
ईर्ष्या कषाय औ झूठ, जग में भटकाता॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥७॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं...।**

कोयल तो मीठा बोल, फल को खाती है।
प्रिय वाणी कर्ण रस घोल, मित्र बनाती है॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥८॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।**

मुख जप करके णवकार, वचन को शुद्ध करे।
वचनों में विनय को धार, पाप को शीघ्र हरे॥
वचनों में सत्य प्रयोग, आप ही करते हो।
हित मित प्रिय वचन को बोल, भ्रमतम हरते हो॥९॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

चाल छंद

जब मन शुद्धि हो जाती, तो वचन में शक्ति आती।
दुर्लभ वच गुप्ति के धारी, पूजा हम करें तुम्हारी॥१॥

ॐ ह्रीं मनःकृतवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

है वचन कीमती होते, जब शुभ बातों को कहते।
हृदय में सजों के रखना, ये काम आयेंगे वचना॥२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचनों पर संयम आया, क्रोधादि वचन न भाया।
वचनों में समता आयी, न बात अनर्गल भायी॥३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

विपरीत परिस्थिति आती है धर्म धैर्य ही साथी।
समता के वचन वे बोले, औ मुक्ति द्वारा खोले॥४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सम्यक दर्शन को पाया, सम्यक वचनों को बनाया।
अमृत सी मधुर है वाणी, पीते हैं वे जिनवाणी॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वच राग द्वेष बीमारी, तज करें मुक्ति तैयारी।
हितमित प्रिय जिनकी वाणी, कहलाती है जिनवाणी॥६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तप से दोषों को सोखा, न देते किसी को धोखा।
होते हैं सरल स्वभावी, नहीं होते कुटिल विभावी॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृतवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

करे धर्म अहिंसा पालन, वचनों में उनका लालन।
काया कारित ना दोषा, मन में रखते संतोषा॥८॥

ॐ ह्रीं कायकारितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

संसार से नाता तोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।
बस आतम की करें चर्चा, आतम की करते अर्चा॥९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

महार्घ्य

वचन गुप्ति की महिमा को, ज्ञानी ही समझाय।
भाव भक्ति से चरण में, शत-शत शीश झुकाय॥

ॐ ह्रीं नवविधिवचनगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।(१०८ बार)

जयमाला

वचनों को सुधारा, उन्हें सँवारा, राग द्वेष वच ना बोले।
आगम के द्वारा, आत्म निहारा, मुक्ति रहस्य को वे खोले॥
है वच निर्दोषा, धर संतोषा, अधिक कभी न बोले हैं।
ना वाद विवादा, ज्ञान है ज्यादा, बोल से पहले तौले हैं॥

शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

धर के अहिंसा धर्म ध्वजा सत्य उड़ायी।
धर के अचौर्य धर्म ब्रह्म लगन लगायी॥
है धर्म अकिंचन, सब कुछ ही तज दिया।
केवल ये तन ही साथ है, ना मोह है किया॥१॥

वैराग्य भावना ही भाते, राग छोड़ा है।
ना द्वेष करे आप, समता भाव जोड़ा है॥
हिंसा असत्य चोरी वचन, छोड़ दिये हैं।
आगम सिद्धान्त जिनकी वाणी, आत्म दिये हैं॥२॥

वे क्रोध मान माया वचन, बोलते नहीं।
वे लोभ त्याग वाणी बोले, बात है सही॥
संसार से कुछ चाहिये, ना भाव है ऐसा।
फिर द्वेष करें किससे, ना शत्रु है कैसा॥३॥

वचनों के दोष को हटा, वच शुद्ध बोलते।
गंभीर है सिन्धु के सम, न मोह डोलते॥
वे सत्य वाणी बोले है, झूठ को त्यागा।
पापों का आना रुका, आत्म उनका है जागा॥४॥

ज्यादा से ज्यादा मौन रहें, निज से जुड़े हैं।
जो बोलता है ज्यादा, वो पर से ही जुड़े हैं॥
निंदा न करें वे तो, प्रतिक्रमण करते हैं।
वे निज के दोषों को हटाने, गर्दा करते हैं॥५॥

हम शिक्षा लें, ऐसे गुरु से, मौन रहेंगे।
वातावरण हो सामने, न उसमें बहेंगे॥
वच गुप्ति की पूजा तो, सफल तभी होयेगी।
वचनों की शक्ति ही तो, धर्म बीज बोयेगी॥६॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

पाप विनाशक वचन को, बोल के सुख हम पायें।
ऐसी शक्ति प्राप्त हो, शत-शत शीश झुकायें॥
हीरा मोती सम्हालते, त्यों वचनों को सम्हाल।
वचन भी हीरा मोती हैं, क्यों ना होय निहाल॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

काय गुप्ति पूजा

गीता छंद

काया करें बहु दोष जब, संयम नहीं जब पालती।
संयम से इसको वश करें, तो दोषों को ये टालती॥
आठों करम के नाश हेतु, काय गुप्ति धारी है।
हम भाव से पूजा करें, हम भावना के धारी हैं॥

दोहा

अघ कल्मष को धोवने, काय गुप्ति को पाये।
आओ हृदय में आ बसो, शत-शत शीश झुकाये॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिन ! अत्र अवतर अवतर संवोषट्** इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।**
ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्** सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद (प्रभु पतित पावन...)

मन वचन चंचल हो के काया, को भी चंचल करते हैं।
चंचल हो जीवन भी यदि, कष्टों दुखों को भरते हैं॥
गंभीर सागर सम हो जीवन, धैर्य को हमें पाना हैं।
गंभीर ऋषि को पूज कर, चरणों में जल ये चढ़ाना हैं॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय** जलं...।

काया जब भोगों को माँगे, ताप जीवन में बढ़े।
काया पे संयम धार ले तो भाव शुभ ऊँचे चढ़े॥
अब कायगुप्ति के धारी ऋषि को, पूजने हम आये हैं।
चंदन चढ़ा शीतल बने, हम पूजा कर हर्षाये हैं॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।**

मुक्ति का पद क्षय नाहीं होवे, वह अजर अविनाशी है।
रिश्तों के पद संसार में, है स्वार्थ के संग राशि है
अक्षय हमारी आत्मा, अक्षय ही पद को पाना है।
अक्षय से पूजूँ नाथ तुमको, सच्चे सुख को पाना है

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।**

उम्र बढ़ती जा रही, पर कामना घटती नहीं।
भौतिक सुखों के भँवरे हम, सुख भावना मिटती नहीं॥
इन्द्रिय सुखों को छोड़, आतम सौख्य हमको पाना है।
मैं पुष्प से पूजूँ प्रभो, चारित्र शुद्धि करना है॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।**

हम अनादि काल से, काया की सेवा कर रहे।
भोजन करें दिन रात, पर ये, पेट नाहीं भर रहे॥
आतम में तृप्ति आई तुमको, धर्म अमृत पीते हो।
नैवेद्य से पूजूँ प्रभो, निज आत्मा में जीते हो॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।**

धर्म दीपक ना जला, सच राह ना दिखती हमें।
इससे ही दुख मंडरा रहे, सुखराह ना मिलती हमें॥
ये तन औ चेतन अलग देखें, दुःख सब भग जायेंगे।
दीपक से पूजूँ नाथ तुमको, सौख्य सब मिल जायेंगे॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।**

व्रत नियम संयम से काया, स्वस्थ वश में होती है।
काय गुप्ति पाने को, ये हीरा और ये मोती है॥
आठों करम के नाश हेतु, भावना हम लाये हैं।
मैं धूप से पूजूँ प्रभो, शुभ भावना हम भाये हैं॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।**

ध्यान अध्ययन वृक्ष पर, फल ज्ञान का ही लगता है।
मोह वृक्ष यदि लगा तो, कष्ट दुख ही मिलता है॥
स्वाध्याय में काया सदा, स्थिर ही होकर बैठती।
मैं फल से पूजूँ नाथ तुमको, काया सुख को देखती॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।**

ज्ञान पंचम पाने को, पुरुषार्थ, तो करना पड़े।
संसारी सुख आतम के सुख में, ज्ञान में आगे अड़े॥
पद अनर्घ्य की आशा लेकर, पूजा तेरी गायी है।
ले अर्घ्यं पूजूँ नाथ तुमको, तेरी छवि हमें भायी है॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।**

प्रत्येक अर्घ्य

भुजंग प्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

धरे काय गुप्ति, औ ध्यान लगावे।
न तन में हो हलचल, वे आतम को ध्यावें॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥१॥

ॐ ह्रीं मनः कृतकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन में भी काया को, ना वे हिलाते।
आसन हो कैसा, सहज ही लगाते॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

करते तपस्या, तो काया ना डोले।
धरते विशुद्धि, नहिं कुछ भी बोले॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥३॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की चंचलता, दूर करी है।
तभी ज्ञान गगरी, तो सुख से भरी है ॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महीनों वे एक ही, आसन में ठाड़े।
काया रहे स्थिर, चाहे हो जाड़े॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

खाये शेरनी तन, ना ध्यान डिगाया।
यही काय गुप्ति ने मुक्ति भिजवाया॥

परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धरम ध्यान करने में, आलस ना करते।
धरम ध्यान करके, वे कर्मों को हरते॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृतकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

न आलस्य करते, औ नाहीं कराते।
चले मुक्ति पथ औ, वे सबको चलाते ॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥८॥

ॐ ह्रीं कायकारितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूजा हो चंचल, न अनुमोद करते।
स्वयं हो के स्थिर, स्वयं में विचरते॥
परम श्रेष्ठ ज्ञानी, परम है तपस्वी।
परम ध्यान ध्याता, परम है यशस्वी ॥९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितकायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

दोहा

अति विशुद्ध परिणाम से, किया स्वयं का ध्यान।
काया बाधा न करें, काय गुप्ति है जान॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसंबंधी-दोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

दोहा

काय गुप्ति को धारकर, किया है आम ध्यान।
ऐसे परम तपस्वी को, बारंबार प्रणाम॥

चौपाई

आतम की छाया है काया, जैसा आतम वैसी छाया।
छाया की आकृति सुधारना, आतम रूप को ही निहारना ॥१॥

काया भी चारित्र निभाये, आतम जैसा कार्य कराये।
काया कुछ न कभी बोलती, वह तो आतम संग डोलती ॥२॥

भव सिन्धु में काया नैया, आतम इसका बना खिवैया।
इससे तपस्या खूब कराओ, काया से आतम सुख पाओ ॥३॥

एक वर्ष तक खड़े रहे थे, वर्षा गर्मी ठंड सहे थे।
पर विचलित न ध्यान छुड़ाया, ध्यान में निज का रूप दिखाया ॥४॥

गज कुमार सिर ऊपर सिगड़ी, काया स्थिर आत्म न बिगड़ी।
मोक्ष गये मुक्ति के गामी, काया भी हुई जग में नामी ॥५॥

पार्श्व प्रभु पे उपसर्ग हुआ था, पर ना उनका ध्यान डिगा था।
काया में स्थिरता आई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई ॥६॥

सुकुमाल की कोमल काया, काया सुख की तजी थी माया।
स्यालिनि खाये पैर तुम्हारे, आप खड़े थे आत्म सहारे ॥७॥

संयम से काया बल आवे, तप से शक्ति भी बढ़ जावे।
जितनी शक्ति उतना करना, नहिं प्रमाद कर धर्म को तजना ॥८॥

धीरे-धीरे और बढ़ेगी, मुक्ति की यह सीढ़ी चढ़ेगी।
धर्म में काया साथ निभाये, है संकल्प तो पीछे आये ॥९॥

संयम व्रत औ नियम को धारो, नाहिं सोचो नाही विचारों।
ये ही मेरे सच्चे साथी, जैसे होते दिया और बाती ॥१०॥

दोहा

काय गुप्ति धारी मुनि, देवें हमें आशीष।
अर्घ्य चढ़ायें भाव से, झुका चरण में शीश ॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काय गुप्ति की महिमा से, पावे सौख्य अपार।
ज्ञान ध्यान बढ़ता रहे, जावे मोक्ष मंझार ॥

इत्याशीर्वादः परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ईर्या समिति पूजा

शंभू छंद

तन की क्रिया को जीव रक्षा, करके ही तो करना है।
पाँचों समिति प्रभु बताये, कर्म को ही हरना है॥
चलते समय चौ हाथ भूमि, देख आगे चलना है।
ईर्या समिति कहते इसको, धर्म पालन करना है॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिन ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिन ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिन ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नाराच छंद (तर्ज—नीर गंध अक्षतान...)

जीव की दशा और दिशा, दोनों राह पे नहीं।
नाथ ज्ञान दो हमें, दोनों होय वे सही॥
ईर्या समिति धारी जिन, पूजने को आये हम।
जल चढ़ा में पूजता, भावना शुभ भाये हम ॥१॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जिन्दगी में युद्ध बहुत, ताप देते है हमें।
जलता ही रहूँ सदा, शाप देते है हमें ॥
ताप शांत हो मेरा, चंदनों से पूजता।
ईर्या समिति धारी के गुण, कर्ण में है गूँजता ॥२॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं...।

परिस्थिति ऐसी हुई, मनः स्थिति बदल गई।
चरणों में जब आये हम, राह सच की मिल गई॥
स्थिर मन की प्राप्ति हेतु, अक्षतों से पूजता।
ईर्या समिति धारी के गुण, कर्ण में है गूँजता ॥३॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

रोते-रोते आते हैं, और सोते-सोते जाना है।
भोग फिर भी नहिं छुटे, भोगों का दिवाना है॥
भोग रोग के समान, छोड़ने को आया हूँ।
पुष्प ले के पूजता, चरण में चढ़ाया हूँ॥४॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।

जीने को ही खाना था, परिभाषा ही बदल गई।
जिह्वा वश में है नहीं, स्वादों में उलझ गई ॥
ज्ञान संयम पाऊँ प्रभु, कृपा तेरी चाहिये।
कैसे हो कल्याण प्रभु, मुझको तो बताइये ॥५॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

आँख तो मिली है पर, रंगीन जग को देखता।
आत्म चक्षु न खुले, रिश्तों को ही लेखता॥
आत्म हीरा देखने को, ज्ञान नयन चाहिये।
दीप से पूजूँ प्रभो, अज्ञान तो हटाइये ॥६॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

परम हंस आत्मा, कर्म बीच में फँसी।
मुक्ति पाने तरसे मन, जग के बीच में धँसी॥
साधना आराधना से, कर्म को है काटना।
धूप से पूजूँ प्रभो, अज्ञान को है नाशना ॥७॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं...।

चल पड़े जो मुक्ति पथ पे, फल तो सुख का आयेगा।
धर्म छोड़ घूमता वो, दुःख को उठायेगा॥
ज्ञान आचरण में आये, ज्ञान सुख को देता है।
फल से पूजूँ नाथ आप, मुक्ति के विजेता है ॥८॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

भीड़ राग द्वेष की, आत्म को भटकाती है।
राग द्वेष हम करें, धर्म ना प्रभाती है॥
उलझा हुआ मन मेरा, सुलझाने प्रभु आया हूँ।
अर्घ्य लेके पूजता, गीत तेरे गाया हूँ ॥९॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ्य

चाल छंद

ईर्ष्या समिति से चलते, जीवों की रक्षा करते।
मनकृत के दोष निवारे, चलने की राह सम्हारे ॥१॥

ॐ ह्रीं मनःकृत-दोषविनाशनाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे इधर उधर ना देखें, ईर्या समिति को लेखें।
मन कारित दोष हटाया, हमने आ अर्घ्य चढ़ाया ॥२॥

ॐ ह्रीं मनःकारित-दोषविनाशनाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

वे तो हैं दया के सागर, भक्तों की भरते गागर।
अनुमोदन दोष निवारा, ईर्ष्या समिति को सम्हारा ॥३॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदित-दोषविनाशनाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सब नीचे देख के चालो, संदेश दे भाव सम्हालो।
वचकृत दोषों को छोड़ा, नाता आतम से जोड़ा ॥४॥

ॐ ह्रीं वचनकृत-दोषविनाशनाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

न चलते और चलाते, ईर्या समिति बतलाते।
वचकारित दोष को नाशा, आतम में किया प्रकाशा ॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकारित-दोषविनाशनाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चाहे कोई कही भी जायें, वे रस्ता न बतलायें।
अनुमोद दोष के हारी, वे ईर्या समिति धारी ॥६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित-दोषविनाशनाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चक्षु ने काम किया है, औ अभयदान दिया है।
पग संभल-संभल के चाले, धरती के जीव बचाले ॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृत-दोषविमुक्ताय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

करुणा सागर कहलाते, जीवों के प्राण बचाते।
मुझ पर करुणा बरसाओं, मन मन्दिर में बस जाओं ॥८॥

ॐ ह्रीं कायकारित-दोषनिवारक य ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मन में जब आई विशुद्धि, कर्मों की दूर अशुद्धि।
मुक्ति मारग पर चलते, और जीव जरा ना हिलते ॥९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित दोषनिवारकाय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

दोहा

जिओ और जीने दो का, दें संदेश महान।
चल के दिखाये डगर हमें, बारंबार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं नवभेदयुक्ताय ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।(१०८ बार)

जयमाला

त्रिभंगी

वे जीव बचाये, चल के दिखाये, जीवंत शास्त्र कहलाते हैं।
कहे वचन विशेषा, धर संतोषा, भक्त के मन को भाते हैं॥
गुण गण से भूषित, तप से पोषित, जिन आगम अपनाया हैं।
हम भक्ति गाये, पूज रचाये, आकर शीश झुकाया हैं॥

पद्धरि छंद

समिति चर्या सीमित करती, औ व्यर्थ के कार्यों को हरती।
जीवों की रक्षा हेतु होय, यह धर्म का निश्चित बीज बोय॥१॥

आतम विशुद्धि बढ़ जाती है, आतम शांति छा जाती है।
पापों का संवर होता है, यहाँ कर्म पाप भी रूकता है॥२॥

मुक्ति पथ का दिग्दर्शक है, जीवों को सुख दे भरसक है।
मुक्ति की राह चलाता है, मुक्ति से भी मिलवाता है॥३॥

ईर्या समिति है प्रथम कही, जिनवर जी की हर बात सही।
चऊ कर आगे का देख चलो, ईर्ष्या समिति को पाल चलो॥४॥

तुम सावधान होकर चलना, ऐसे ही आतम से मिलना।
तीरथ दर्शन को जाते हैं, आतम पवित्र कर आते हैं॥५॥

गुरु वंदन का जब भाव बना, भक्ति का मन में भाव घना।
हर कदम देखकर रखते हैं, वे ज्ञान से चर्चा करते हैं॥६॥

दोहा

देख-देख कर के चलें, रक्षा जीव कराय।
'स्वस्ति' वंदन नित करें, चरणों अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं परिपूर्ण ईर्यासमितिप्रतिपालकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्ञान ज्योति प्रकाश में, चलते ज्ञान के साथ।
आत्म ज्योति जाग्रत करें, झुका चरण में माथ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

भाषा समिति पूजा

तर्ज-चौबीसी पूजा (जल फल...)

अपराध किये है नाथ, चरणों में आया।
प्रायश्चित का है भाव, भावों को लाया॥
भाषा समिति को पाल, भगवन आप बने।
हृदय में विराजो नाथ, गुण है बहुत घने॥१॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपक श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपक श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपक श्री जिन! मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

है जन्म मृत्यु का चक्र, इसके बीच फँसे।
निकलूँ कैसे मैं नाथ, इसके बीच धँसे॥
चहुँ गतियाँ घूम चुका, शांति ना पाई।
जल से पूजूँ हे देव, बुद्धि अब पाई॥१॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

धन अर्जन संग्रह नाथ, मैंने खूब किया।
पर आत्म धर्म के काम, मैं तो भाग लिया॥
करूँ आत्म धर्म से प्रेम, ऐसी बुद्धि दो।
मुक्ति पथ जाना देव, अब सद्बुद्धि दो॥२॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय संसारताप विनाशनाय चन्दनं...।

हर पल क्षय आयु होय, स्थिर ना होती।
अक्षयपुर वासी आप, ज्ञान मिले मोती॥
कर लेकर अक्षय पुंज, पूजा करता हूँ।
अक्षयपुर जाना देव, चरण में धरता हूँ॥३॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं...।

भोगों की हवा चले, मैं तो बह जाता।
संयम तप त्याग में जिन, पीछे रह जाता॥
उत्कृष्ट भावना होय, पुष्प से पूज रहा।
हर पल भक्ति के भाव, गीत ये गूँज रहा है॥४॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।

संतुष्टि ज्ञान से आये, मैंने ना कीना।
बस भूख - भूख चिल्लाये, तृप्ति ना लीना॥
जीने को भोजन खाये, ऐसे भाव बने।
नैवेद्य से पूजूँ नाथ, कर्म को आप हने॥५॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

है पाप की जड़ अभिमान, आत्म अँधेरा दे।
सब यही छोड़ कर जायें, ज्ञान सवेरा दे॥
धन धर्म की है परछाई, पीछे आयेगा।
हो ज्ञान दीप प्रकाश, भ्रम तम जायेगा॥६॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सुख फूले दुख में रोय, जीवन बीत गया।
इससे ऊपर है धर्म, आज ये ज्ञान हुआ॥
कर्मों के फल को जान, पूजने आया हूँ।
निष्कर्म हुये तुम देव, पा हर्षाया हूँ॥७॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं...।

लगा धर्म धैर्य का वृक्ष, सुख के फल आयें।
तप त्याग का पानी डाल, आतम हर्षाये॥
यह जीवन है संघर्ष, धर्म को ना भूलों।
इस धर्म ने प्रभु बनाये, तप में नहिं फूलों॥८॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

है लाभ हानि का विचार, और न कुछ सोचे।
आतम का धर्म हिसाब, इसमें हम चूके॥
आतम के धर्म औ लाभ, हानि नहीं होती।
अब चढ़ा चरण में अर्घ्य, ज्ञान मिले मोती॥९॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

भाषा को ना जानते, वस्तु तो है सत्य।
जनपद सत्य को मानना, यही धर्म का तथ्य॥१॥

ॐ ह्रीं भाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

अलग-अलग शुभ देश में, अलग वस्तु के नाम।
सबको सत्य ही मानना, जनपद सत्य है जान॥२॥

ॐ ह्रीं मनःकृत-दोषविनाशक जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

शब्द अलग को बोलता, वस्तु अलग ना होय।
जनपद सत् इसको कहा, बीज धर्म के बोय॥३॥

ॐ ह्रीं मनःकारित-दोषविनाशक जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नाम वस्तु का अलग सुन, ज्ञानी लड़ते नाहिं ।
जनपद सत्य को जानते, रहें सत्य के माँहि॥४॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भिन्न वस्तु का नाम है, नाम से भिन्न न होय।
समझ ज्ञानी न बोलता, वाद विवाद को खोय॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकृत-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

राजा राणा किंग कहो, या चक्री का द्वार।
शब्द अलग व्यक्ति वही, वह है सत्य की धार॥६॥

ॐ ह्रीं वचनकारित-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आर्य अनार्य की भाषा तो, अलग-अलग है जान।
ना समझे झगड़ा हुआ, समझ के होवे ज्ञान॥७॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित-दोषविमुक्ताय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संस्कृत प्राकृत हिन्दी भी, औ अँग्रेजी जान।
शब्द अलग वस्तु वही, जनपद सत्य को मान॥८॥

ॐ ह्रीं कायकृत-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रियवाणी उत्तम कही, भाषा कोई भी होय।
अंतर का संताप हर, मन के मैल को धोय॥९॥

ॐ ह्रीं कायकारित-दोषविवर्जिताय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भाव भाषा में आते हैं, भावों का है खेल ।
भाव शुद्ध करते चलो, ना हो कर्म की जेल॥१०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित-दोषनिवारकाय जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नव कोटि से शुद्ध कर, मन वच काय संभाल।
सत्य तभी तो आयेगा, सत्य बहुत है विशाल॥११॥

ॐ ह्रीं जनपदभाषासमिति निरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सम्मत सत्य

दोहा

सबने जिसको मान लिया, कैसा क्यों न होय।
सत्य कहा वह जायेगा, सोच व्यर्थ ही होय॥१२॥

ॐ ह्रीं सम्मतसत्यभाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सब जग सत्य है मानता, क्रिया सत्य वह होय।
नहि विवाद करना वहाँ, बीज सत्य का बोय॥१३॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशनाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भाषा समिति इसको कहा, यही सत्य है जान।
अनुमोदन के दोष तज, होवें जगत प्रमाण॥१४॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशनाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सारे देश में घूमते, लगता है आश्चर्य।
फिर सत्य है मानते, यही श्रेष्ठ यही वर्य॥१५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशनाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अलग भले हम को लगे, वहाँ का है शुभ काम।
इसीलिये तो सत्य कहा, प्रभु के वचन प्रमाण॥१६॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशनाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कहीं लौकी को खाते हैं, कहीं पे दोष बताये।
अलग - अलग स्थान में, अलग भाव हो जाये॥१७॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशनाय सम्मतसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नाम सत्य विचार

दोहा

किसी वस्तु या व्यक्ति का, गुण बिन रखते नाम।
नाम सत्य इसको कहा, नाम से है पहचान ॥३४॥

ॐ ह्रीं नामसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चौपाई छंद

वीर नहीं पर नाम धराया, सत्य विचार भी इसको पाया।
वीरवाणी में यह बतलाया, नामसत्य का नाम धराया ॥३५॥

ॐ ह्रीं वचःकृतदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नाम से होती है पहचान, नाम बिना कैसे हो ज्ञान।
भाषासमिति इससे आये, प्रभु चरणों में शीश झुकाये ॥३६॥

ॐ ह्रीं मनकारितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शेरसिंह जी चूहे से डरते, फिर भी नाम तो निश्चित रखते।
मन अनुमोदना दोष को छोड़ा, भाषा समिति से नाता जोड़ा ॥३७॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन सभी के नाम पुकारे, पर गुण तो ना उसमें निहारे।
वचकृत दोष को दूर किया है, भाषासमिति ज्ञान लिया है ॥३८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन से शक्ति मन में आवे, प्रेमवाणी से कोई पुकारे।
वच कारित दोषों को धोया, भाषा समिति से ज्ञान को पाया ॥३९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नाम की सब अनुमोदना करते, भाषा समिति नाम सुमरते।
वच अनुमोदना दोष न लाते, हम प्रभु चरणों शीश झुकाते ॥४०॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जब तक काया नाम मिलेगा, तीर्थंकर बन फूल खिलेगा।
उससे बड़ा न कोई नाम है, इससे बड़ा न धर्म ध्यान है ॥४१॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रभु नाम में जपकर आया, कर प्रसन्न मन को है भाया।
नाम जगत में प्रसिद्ध होवे, जो अपने पापों को खोवे ॥४२॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नाम कैसा हो काम हो अच्छा, कोई बड़ा हो, या हो बच्चा।
भाषा समिति वचन में लाओ, प्रभु चरणों में शीश झुकाओ ॥४३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविमुक्ताय नामसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

प्रभु नाम सबसे बड़ा, बड़ा है उनका ज्ञान।
नाम प्रभु सार्थक करें, बारंबार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं नामसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उपमा सत्य विचार

दोहा

सुन्दर रूप को देख के, चन्द्रमुखी कहते।
उपमा सत्य इसको कहा, प्रभु हृदय रहते ॥४५॥

ॐ ह्रीं उपमासत्य भाषासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चौपाई छंद

सुन्दर नयन मृगनयनी कहते, रूप सत्य इसको है कहते।
मनकृत दोष को दमन है करना, भाषा समिति में ही रहना ॥४६॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशनाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हस्त को कमल की करी कल्पना, उपमा सत्य भी इसको कहना।
मनकारित दोषों को धोया, भाषा समिति सत्य को बोया ॥४७॥

ॐ ह्रीं मनः कारितदोषविनाशनाय उपमासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूप देखा पर मन न लुभाया, आत्म रूप ही उनको भाया।
मन अनुमोदना दोष लगाये, भाषा समिति सत्य को पाये ॥४८॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविनाशनाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूप वीतरागी उत्कृष्ट, भक्तों को करता आकृष्ट।
इसी रूप के गीत को गाये, शत-शत चरणों शीश झुकाये ॥४९॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशनाय उपमासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उपमा सत्य को झूठ न कहना, वीरवाणी को सत्य मानना।
वचकारित न दोष लगाओ, सच्चे प्रभु की शरण में आओ ॥५०॥
ॐ ह्रीं वचकारितदोषविनाशनाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उपमा सत्य है भाषा समिति, इससे आई मन में प्रीति।
जिसने भी इसको अपनाया, वह ही सच्चा भक्त कहाया ॥५१॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशनाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सत्य अनेकों आँख से देखें, तभी तो पूरन सत्य को लेखें।
करना मुश्किल सत्य समझना, समझ गये तो मुक्ति वरना ॥५२॥
ॐ ह्रीं कायकृतदोषनिवारकाय उपमासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

फूल अनेकों सत्य बाग में, रंग अलग है, हर प्रासाद में।
सभी फूल ही सत्य कहाये, यही वीर वाणी समझाये ॥५३॥
ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशनाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया सत्य अनुमोदन करती, सत्य धर्म का पालन करती।
काय अनुमोदन दोष न करना, भाषा समिति पालन करना ॥५४॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशनाय उपमासत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

उपमा देकर वस्तु की, वर्णन विषय कराय।
उपमा सत्य इसे कहा चरणों अर्घ्य चढ़ाय ॥५५-५६॥
ॐ ह्रीं उपमासत्य भाषासमितिप्रतिपालकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूप सत्य विचार

दोहा

सफेद रंग की वस्तु बहुत, पर बगुला याद है आय।
बगुले जैसा श्वेत है, रूप सत्य कहलाय ॥५७॥
ॐ ह्रीं रूपसत्य भाषासमितिप्रतिपादकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के...)

काला रंग जब है बोले, कौआ को याद है करले।
मनकृत ना दोष लगाये, वे सत्य धर्म को पाये ॥५८॥
ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविवर्जिताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है बहुत वस्तु ही काली, पर याद रवि की लाली।
मन कारित दोष निवारा, उन्हें सत्य धर्म है प्यारा ॥५९॥
ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविवर्जिताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवर बैठे आसन में, कहते है सिंहासन में।
मन अनुमोदन शुभ कीना, पाया है सत्य नवीना ॥६०॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जो रूप प्रसिद्धि पावें, वह रूप ही याद में आवें।
वचकृत दोषों को धोया, शुभ धर्म बीज को बोया ॥६१॥
ॐ ह्रीं वचःकृतदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है जिनवर की ये वाणी, बतलाती है जिनवाणी है।
वचकारित दोष हटाओ, औ सत्य धर्म को पाओ ॥६२॥
ॐ ह्रीं वचः कारितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भाषा समिति जब आवे, झगड़ा लड़ाई मिट जावे।
वच अनुमोदन शुभ करते, हितमित प्रियवाणी कहते ॥६३॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया भी समिति पाले, तोड़े कर्मों के जाले।
कायाकृत दोष हटाया, भक्तों ने शीश झुकाया ॥६४॥
ॐ ह्रीं कायकृतदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से करें इशारा, मुक्ति पथ सबसे प्यारा।
काया कारित को तजते, वे आतम राम को भजते ॥६५॥
ॐ ह्रीं कायकारितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की छाया शुभ हो, अनुमोद भी नाहीं अशुभ हो।
अनुमोद दोष को त्यागा, जब धर्म में आतम जागा ॥६६॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविमुक्ताय रूपसत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

भाषा समिति पालना, सर्व सुखी हो जाये।
आत्मिक शांति प्राप्त हो, शत शत शीश झुकाये ॥६७॥
ॐ ह्रीं रूपसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रतीति सत्य विचार

दोहा

बड़ी वस्तु है हो गई, छोटी अपेक्षा काज।
सत्य प्रतीति इसे कहा, सत्य धर्म का राज ॥६८॥

ॐ ह्रीं प्रतीतसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय **श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये** अर्घ्यं...।

चाल छंद

लंबा औ ठिगना होता वह वस्तु अपेक्षा कहता।
मनकृत दोषों को तजना, भावों की शुद्धि करना ॥६९॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविवर्जिताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कोई छोटा कोई बड़ा है, यह कथन अपेक्षा कहा है।
वह वस्तु जग में होय, भाषा समिति सच होय ॥७०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है ह्रस्व दीर्घ ये मात्रा, पढ़ती है सारी छात्रा।
भाषा समिति है मानो, औ सत्य धर्म को जानो ॥७१॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है प्रतीति सत्य परिभाषा, बनती है समिति भाषा।
सुंदर भाषा की आशा, नहीं होय जरा भी निराशा ॥ ७२॥

ॐ ह्रीं वचःकृतदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय **श्री जिनाय** अनर्घ्यपद-**प्राप्तये अर्घ्यं...।**

सूक्ष्म से सूक्ष्म बातें, प्रभु जी हमको समझाते।
वचनों का ज्ञान कराया, वचनों का दोष हटाया ॥७३॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय **श्री** जिनाय **अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

भाषा समिति की शुद्धि, वचनों में होती सिद्धि।
वचनों को शुद्ध कराये, जिनवर जी हमें सिखाये ॥७४॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमिति **प्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

हितमित प्रिय वाणी बोले, और द्वार सत्य का खोले।
काया भी है सहयोगी, जो सत्य धर्म का योगी ॥७५॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषविवर्जिताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय **श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सुन्दर भाषा जब आये, जीवन ये बदल ही जाये।
भाषा समिति की महिमा, जीवन में आती गरिमा ॥७६॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय **श्री जिनाय अनर्घ्य-पदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

प्रियवाणी अमृत घोले, सुनने को फिर मन बोले।
भाषा समिति अपनाओ, सबसे, सम्मान को पाओ ॥७७॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित दोषविमुक्ताय प्रतीतिसत्यभाषासमिति प्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

सत्य प्रतीति जानकर, जीवन सफल बनाय।
कर्म निर्जरा होयगी, शत-शत शीश झुकाय ॥७८॥

ॐ ह्रीं प्रतीतिसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संभावना सत्य विचार

दोहा

कारज की संभावना, जिस वस्तु के माँहि।
ये संभावना सत्य है, वीर कहा जग माँहि ॥७९॥

ॐ ह्रीं सम्भावना सत्यभाषासमिति प्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भुजंगप्रयात छंद (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

इन्द्र सौधर्म, बड़ी शक्ति पाई।
पलट दे जम्बू को, संभावना आई॥
परन्तु इस भूमि पे, मन्दिर जिनालय।
पलटता है ना ही, धरम के है आलय ॥८०॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हर जीव में भगवन, बनने की शक्ति।
पुरुषार्थ करता तो होगी अभिव्यक्ति॥

संभावना है तो सत्य बताया।
इसी सत्य को पढ़ के, शक्ति जगाया ॥८१॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रभो वाणी में शक्ति, जीवन सुधारे।
सुने ध्यान से जो, वो आतम उतारे॥
वाणी की शक्ति को, पहचानो भाई।
प्रभु वाणी ने की, करम की सफाई॥८२॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

शायद वो सिन्धु को, पार करेगा।
शक्ति है उसमें, वो भव से तिरेगा ॥
संभावित शक्ति को, सत्य बताया।
भक्तों ने चरणों में, शीश झुकाया॥८३॥

ॐ ह्रीं वचःकृतदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कथन को एकान्त से, नाहीं बतावे।
शक्ति समझ देव, करके समझावे॥
भाषा समिति के, साथ में बोले।
तभी तो वे मुक्ति के, द्वार को खोले॥८४॥

ॐ ह्रीं वचकारितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन शक्ति समझो, समझ करके बोलो।
ना होगी लड़ाई, जो प्रियवाणी बोलो॥
वचन के सभी दोष, दूर जो होगी।
शांति की धारा, जगत में बहेगी॥८५॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

न कोयल कुछ देती, ना कौआ कुछ लेता।
इक की प्रशंसा, दूजे को भगाता॥

प्रियवाणी सुनने को, मन सबका तरसे।
भाषा समिति से, अमृत सा बरसे॥८६॥

ॐ ह्रीं कायकृतदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

साधु जी भाषा, समिति से बोले।
व्यर्थ की भाषा, वे नाही है बोले॥
रहे मौन खुद में, आतम को ध्याते।
ऐसे मुनिवर को, शीश झुकाते॥८७॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

सत्य संभाव को, जिसने है धारा।
मिला उसको निश्चित, है मुक्ति किनारा॥
सत्य का ज्ञान, महा सौख्य दाई।
भाषा समिति पा, कर्म रिहाई॥८८॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषनिवारकाय सम्भावनासत्यप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

चिंतन मनन औ ध्यान से, भाषा समिति आये।
भाषा समिति धारी को, शत-शत शीश झुकाये॥८९॥

ॐ ह्रीं सम्भावनासत्य भाषासमितिनिरूपकाय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्यवहार सत्य विचार

दोहा

राजकुमार को राजा कह, कोई अगर बुलाय।
सत्य व्यवहार इसको कहा, शत-शत शीश झुकाये॥९०॥

ॐ ह्रीं व्यवहारसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पद्धरि छंद

व्यवहार सत्य प्रभु समझाये, व्यवहार ज्ञान भी करवाये।
मनकृत दोषों को हटाया है, औ सत्य का रूप दिखाया है॥९१॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बालक तीर्थंकर तीर्थंकर, कहते हैं सभी भक्ति भर कर।
मनकारित दोष को छोड़ा है, व्यवहार से सत्य को जोड़ा है॥९२॥
ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
तेरहवें स्थान में उदय होय, तीर्थंकर प्रकृति समय होय।
पर पहले ही कहते रहते, व्यवहार से सत्य वे ही करते॥९३॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्यवहार सत्य लेकर बोलो, कर्मों को तज के सिद्ध होलो।
वचकृत दोषों को दूर किया, व्यवहार सत्य को जान लिया॥९४॥
ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविगुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
बच्चा बड़ा जब हो जाता है, कहे छोटा कपड़ा होता है।
व्यवहार सत्य इसे माना है, जिनवर को शीश झुकाना है॥९५॥
ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ये सड़क तो दिल्ली जाती है, पर सड़क कहीं नहीं जाती है।
यात्री ही उस पर जाता है, व्यवहार सत्य बतलाता है॥९६॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
जिनवाणी ज्ञान को देती है, अज्ञान तिमिर हर लेती है।
कायाकृत दोष को तजना, जिनदेव गुणों को है भजना॥९७॥
ॐ ह्रीं कायकृतदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
कैसा बोले और क्या बोले, मुँह खोलने के पहले तौले।
भाषा समिति तब आयेगी, हमें वीर आज्ञा भी भायेगी॥९८॥
ॐ ह्रीं काय कारित दोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
भाषा कोई भी हो सकती, भाव भंगिमा वही रहती।
समिति भाषा पर अनुशासन, मिलता मुक्ति का सिंहासन॥९९॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविमुक्ताय व्यवहारसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

वैज्ञानिक जिनवीर की, बाते बड़ी महान।
जो भी इसको मान ले, बन जाये भगवान॥१००॥
ॐ ह्रीं व्यवहारसत्य भाषासमितिनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भाव सत्य विचार

दोहा

काने को काना ना कहे, कहते सूरजदास।
भाव सत्य इसको कहा, होवे ना उपहास॥१०१॥
ॐ ह्रीं भावसत्यभाषासमितिप्रतिपादकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पद्धरि छंद

जिसे सुन के मन को चोट लगे, नहि ऐसी बात जरा भी कहे।
मनकृत दोषों को दूर किया, भाषा समिति को साध लिया॥१०२॥
ॐ ह्रीं मनःकृतदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
वे चोर को चोर न कहते, समझा के अच्छा बनाते।
मन कारित दोष को हरना है, औ मुक्ति पुरी को वरना है॥१०३॥
ॐ ह्रीं मनःकारितदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
मन दुखे तो हिंसा होती है, बस बाँटे ज्ञान के मोती है।
भाषा समिति अनुमोद नहीं, है वीर प्रभु की बात सही॥१०४॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
वे क्रोध वचन ना कहते हैं, समता धर निज में रहते हैं।
वचकृत दोषों को धोया है, समिति का बीज जो बोया है॥१०५॥
ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
वे मान वचन भी नहीं कहे, सम्मान वचन वे ना ही सुने।
वच कारित दोष को हरते है, मार्दव स्वभाव को वरते है॥१०६॥
ॐ ह्रीं वचनकारितदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
माया की छाया दूर करें, जिन आर्जव धर्म को पास रखे।
अनुमोद ना मुख से करते हैं, ले मौन नियम में रहते हैं॥१०७॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
वे लोभ क्षोभ से दूर रहे, वे असत वचन भी नहीं कहे।
यह भाव सत्य ही होता है, सुख बीज यही तो बोता है॥१०८॥
ॐ ह्रीं कायकृतदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
न कहते हैं खरी खोटी बात, न कहते कभी वे छोटी बात।
समिति भाषा को पाले हैं, तोड़े कर्मों के जाले हैं॥१०९॥

ॐ ह्रीं कायकारितदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भाषा समिति है प्रियवाणी, हितमित होती है कल्याणी।
अनुमोदन दोष हटाया है, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाया है॥११०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदोषविनाशनाय भावसत्यनिरूपकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

कोमल निर्मल भाषा ही, भाव सत्य कहलाये।
है कठोर वाणी यदि, हिंसा भाव में पाये॥१११॥

महार्घ्य

शंभू छंद

भाषा समिति दश भेदों से, समझा कर ज्ञान कराया है।
वाणी को किया है संस्कारित, वाणी को नरम बनाया है॥
कैसे बोले, कितना बोले, औ क्यों बोले सिखलाते हैं।
उपकार है वीरा का हम पर, चरणों में अर्घ्य चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं भावसत्य भाषासमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

वाणी के देवता को मेरा नमस्कार है।
भाषा का ज्ञान भी दिया जी नमस्कार है॥
है राग रहित वाणी तेरी, नमस्कार है।
है द्वेष रहित वाणी तेरी नमस्कार है॥१॥

क्रोध मान माया लोभ, वाणी जो बोले।
हिंसा है होती इसमें, द्वार मुक्ति न खोले॥
भाषा को समझने, दस प्रकार सत्य है।
इससे समिति आती है, बाकी असत्य है॥२॥

कर्कश कठोर कटुक, अभिमानी भाषा।
निष्ठुर प्रकोपिनी अनुपकारी भाषा॥
है मध्यकुंशा, छेद करी औ भूतबंध करी।

ये दश है निंद्य भाषा, त्याग ज्ञानी ने करी॥३॥

तू मूर्ख है तू बैल है, ये वाणी ताप दे।
तू दुष्ट है अधर्मी है, ये मन संताप दे॥
मार दूँ औ काट तू, निर्लज्ज हँसता है।
निज प्रशंसा पर की निन्दा, करके फँसता है॥४॥

शक्ति को हरे ऐसी, भाषा जो भी बोलता।
हो ब्रह्मचर्य नाश, वाणी नर्क में पड़ता॥
ये निंद्य भाषा उत्तम पुरुष, नाहीं बोलते।
रहते है मुनि मौन, द्वार आत्म खोलते॥५॥

स्त्री कथा भोजन कथा भी, पाप बढ़ाती।
औ राज्य कथा चोर कथा, पुण्य नशाती॥
दूसरों की निंदा, वाणी मेरी अशुभ है।
कर पर की प्रशंसा तो, वाणी मेरी शुभ है॥६॥

इसको भाषा समिति कहा, मूलाचार में।
बोला तो करो धर्म कथा, भावाचार में॥
आत्म में गुण वृद्धि हो, उपदेश दिया है।
शास्त्रों को पढ़ा, स्वर्ग मोक्ष ज्ञान दिया है॥७॥

गुरुवाणी जब भी निकले तो, वैराग्य बढ़ाये।
दे तत्त्व ज्ञान, हमें महान ज्ञान सिखाये॥
कर धर्म की चर्चा तो, भाषा समिति आयेगी।
न व्यर्थ की चर्चा करो, निज आत्म भायेगी॥८॥

दोहा

हितकारी शुभवाणी ही, सत्यमार्ग दिखलाये।
हमको सत्य की भावना, प्रभु जी हमें सिखाये॥

ॐ ह्रीं भाषासमिति प्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मौन से मन को शांत कर, वचन शांत हो जाये।
वचन सिद्धि हो जायेगी, 'स्वस्ति' प्रभु को ध्याये॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

एषणा समिति पूजा

गीता छंद (तर्ज-प्रभु पतित...)

आहारचर्या की प्रभु ने, रीति शुद्ध बताई है।
आहार से मन शुद्धि हो, औ व्रत अहिंसा भायी है॥
इसे पाल भगवन बन के, आतम ध्यान तुमने कीना था।
हम पाले इसको नित्य, ये उपदेश हमको दीना था॥

दोहा

एषणा समिति जिन की थी, नव कोटि से शुद्ध।
कर्म निर्जरा कर बने, आपहि भगवन सिद्ध॥

ॐ ह्रीं एषणासमितिधर श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीं एषणासमितिधर श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं एषणासमितिधर श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभू छंद

संसार कषायों के कारण, मन पत्थर जैसा कड़ा हुआ।
जब ज्ञान का जल इस पर डाला, तब मन कोमल और मृदु हुआ॥
एषणा समिति के स्वामी की, हम जल से पूजा करते हैं।
ऐसी शुद्धि में भी पाऊँ, हम यही भावना वरते हैं॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

वदवू तन से जो आती है, है मुख्य कर्म ही कारण है।
चंदन गुलाब न काम करें, हल इसका कर्म निवारण है॥
एषणा समिति के स्वामी की, चंदन से पूजा करते हैं।
आतम खुशबू पाने को प्रभु, आतम के धर्म को करते हैं॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

संसार अपेक्षा आशा कर, पश्चात् निराशा पाता है।
प्रभु आशा अपेक्षा रहित हुये, इसलिये तो साता साता है॥
एषणा समिति के स्वामी की, अक्षत से पूजा करते हैं।
हो शुद्ध भाव अक्षय मेरे, अक्षय नगरी को पाते हैं॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

तन शक्ति से हम भोग करें, भोगों से पाप ही आता है।
तन शक्ति जब कम हो जावें, मन कष्ट दुखों को पाता है॥
तन शक्ति से समिति पाले, ऐसी मेरी बुद्धि करना।
एषणा समिति के स्वामी जी, भोगों के भावों को हरना॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।

व्रत संयम नियम तो तन को ही बस, स्वस्थ औ सुखी बनाते हैं।
दिन रात किया जो भोजन है, बीमारी शीघ्र बुलाते हैं।
प्रभु आपने इसका रहस्य जान, एषणा समिति को पाला है।
भक्तों को भी उपदेश दिया, मुक्ति का मिले उजाला है॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

सूरज चंदा के उजाले में, मन भटक भटक खो जाता है।
पर ज्ञान दीप सबसे अच्छा, जो सत्पथ पर ले जाता है॥
केवलज्ञानी अंतर्यामी, अंतर्यामी, मम ज्ञान दीप भी प्रजलाओ।
मैं दीप से पूजूँ प्रभो तुम्हें, मिथ्यात्व अंध को नशवाओ॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

कर्मों की आंधी जब आये, जीवन बगिया तो उजड़ गई।
कर्मों का फल और कर्म बंध, आतम मेरी कमजोर भई॥
कर्मों का धुंआ उड़ाने को, मैं धूप से पूजा करता हूँ।
जंजीर कर्म की टूटे प्रभो, इसलिये शरण में रहता हूँ॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं...।

संसार फलों की आशा में, पुरुषार्थ निरन्तर करता है।
पर जग के फल तो नश्वर है, इसलिये दुखी हो फिरता है॥
मुक्ति का फल मिले एक बार फिर अन्य फलों की जरूरत क्या।
आनंद आनंद ही बरसेगा, अद्भुत प्रभु जैसी मूरत ना॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

उपदेश सुने पूजा कीनी, पर पद अनर्घ्य ना पाया है।
सब भाव शून्य क्रिया कीनी, अब मुझे समझ में आया है॥
तुम जैसा ध्यान लगा करके, अनुभूति आतम की पाऊँ।
तड़-तड़ करके सब कर्म झरे, मुक्ति मंजिल तक मैं जाऊँ॥
ॐ ह्रीं एषणासमितिधराय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

औद्देशिक दोष परिहार

मुक्ति पथ के पथिक जनों ने जीवन का निर्वाह किया।
तन गाड़ी को चलाने हेतु, भोजन पान भी शुद्ध किया॥
किन्तु मुनिजन छयालीस दोष को दूर करे आहार लिया।
एषणा समिति इसी को कहते, पालन इस का नित्य किया॥

दोहा

एषणा समिति पाल के, कर्म को नित्य झराय।
दोष दूर करने के लिए, चरणों शीश झुकाय॥१॥

ॐ ह्रीं औद्देशिकदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

चौपाई

पाखंडी को कर उद्देश्य, भोजन बनाया यही विशेष।
वह भोजन यदि मुनिवर लेवे, समिति एषणा दोष को पावे॥२॥

ॐ ह्रीं मनःकृत औद्देशिकदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

परिव्राजक को कर उद्देश्य, भोजन बनाया बड़ा विशेष।
वह भोजन यदि मुनिवर लेवे, समिति एषणा दोष को पावे॥३॥

ॐ ह्रीं मनःकारित औद्देशिकदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जन सामान्य के लिये बनाया, वह भोजन यदि गुरु को कराया।
ऐषण समिति में दोष लगाया, दोष दूर हो भाव बनाया॥४॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित औद्देशिकदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

मुनि निर्ग्रंथ के लिये बनाया, उनको वह आहार कराया।
औद्देशिक यह दोष लगाया, दोष दूर हो भाव बनाया॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकृत औद्देशिकदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

दीन हीन के लिये बनाया, वह भोजन यदि मुनि को कराया।
औद्देशिक यह दोष है लगता, दोष दूर हो भाव ये लिखता॥६॥

ॐ ह्रीं वचनकारित औद्देशिकदोषविवर्जिताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

नाग आदि देवों को बनाया, वह आहार मुनि को कराया।
अनुमोदना भी दोष लगाये, दोष दूर हो भाव बनाये॥७॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित औद्देशिकदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

कर उद्देश्य कार्य है करते, कायाकृत इस दोष को भरते।
कायाकृत यह दोष भगाऊँ, प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ॥८॥

ॐ ह्रीं कायकृत औद्देशिकदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

स्वयं न करते किन्तु कराते, काया कारित दोष लगाते।
दोष दूर करने को आया, व्रत जप से है इसे भगाया॥९॥

ॐ ह्रीं कायकारित औद्देशिकदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

औदेशिक जो भोजन बनाया, यदि उसका अनुमोद कराया।
दोष हटाने चरणों आया, चरण शरण में शीश झुकाया॥१०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित औद्देशिकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अध्यधि दोष परिहार

चाल छंद (तर्ज-ए मेरे वतन...)

आते देखा जो गुरु को, भोजन को बढ़ाया झट वो।
अध्यधि दोष यह जानो, मनकृत इस दोष को मानो॥११॥

ॐ ह्रीं मनःकृत अध्यधिदोषहराय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गुरुवर के प्रति है भक्ति, ऐसी मन आती युक्ति।
पर अध्यधि दोष लगाया, गुरुवर को निमित्त बनाया॥१२॥

ॐ ह्रीं मनःकारित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी और ने भोज बनाया, मन भाव प्रशंसा आया।
मन अनुमोदना छोड़ो, कर्मों के बंधन तोड़ों॥१३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्यों ही देखा गुरुवर को, वस्तु को बढ़ाओ अब वो।
वचकृत यह दोष लगाया, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाया॥१४॥

ॐ ह्रीं वचनकृत अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूजे से कार्य कराया, वच कारित दोष लगाया।
दोषों से रहित हो भोजन, एषण समिति मन भावन॥१५॥

ॐ ह्रीं वचनकारित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

किसी ओर ने अन्न बढ़ाया जा गीत प्रशंसा गाया।
अनुमोदन दोष को त्यागो, निज शुद्धातम में जागो॥१६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया भी दोष लगाये, सब कार्य तो यही कराये।
कायाकृत दोष निवारो, प्रभु मेरी ओर निहारो॥१७॥

ॐ ह्रीं कायाकृत अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वैराग्य भावना मन में, संतोष धरा है तन में।
काया भी माया छोड़े, माया छोड़े, मुक्ति से नाता जोड़े ॥१८॥
ॐ ह्रीं कायकारित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
अध्यधि अनुमोदन अच्छा, दोषों से रहित है सच्चा।
सच्चे ही भाव बनाये, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाये ॥१९॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदित अध्यधिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूत दोष विचार

चौपाई

सचित्त में अचित्त मिलाया, मन पूति दोष कराया।
मन का यह दोष हटायें, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ायें ॥२०॥
ॐ ह्रीं मनःकृत पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
उत्तम आहार बनाया, चूल्हे पर ही है बनाया।
ये प्रथम मुनि को दूँगा, पश्चात किसी को दूँगा ॥२१॥
ॐ ह्रीं मनःकारित पूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
कोई वस्तु ओखली कूटी, दूँ प्रथम मुनि को कह दी।
यह मन निश्चय जो धरता, औ पूति दोष को करता ॥२२॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
करछली से वस्तु बनाई, दूँ प्रथम मुनि वच गाई।
ऐसा यदि निश्चयकीना, वचकृत यह दोष को लीना ॥२३॥
ॐ ह्रीं वचःकृत पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
जब तक मुनि भोज न लेवे, किसी और को हम न देवे।
ऐसा संकल्प जो धारा, यह पूति दोष विचारा ॥२४॥
ॐ ह्रीं वचनकारित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
भोजन रसदार सुगंधित, पर किया है उसको बंधित।
मुनि के पश्चात ही दूँगा, वरना ना मैं किसी को दूँगा ॥२५॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
दाता संकल्प जो लेवे, बस यही दोष कर लेवें।
कायाकृत दोष निवारो, प्रभु जीवन मेरा संभारो ॥२६॥
ॐ ह्रीं कायकृत पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आहार मुनि को लेना, पर दोष से दूर है रहना।
कायाकारित निर्दोषा, होने की प्रभु जी आशा ॥२७॥
ॐ ह्रीं कायाकारित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
अनुमोदन दोष को हरना, मुक्ति की सीढ़ी चढ़ना।
वैराग्य भाव जब आये, तब ही यह व्रत पल पायें ॥२८॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदित पूतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मिश्र दोष विचार

चाल

गृहस्थी ने भोज बनाया, मुनिवर को निमित्त बनाया।
मनकृत यह दोष लगाया, औ मिश्र दोष को पाया ॥२९॥
ॐ ह्रीं मनःकृत मिश्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
पाखंडी साथ बनावे, औ भोज तैयार करावे।
यह मिश्र दोष बतलाया, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाया ॥३०॥
ॐ ह्रीं मनःकारित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
इसका अनुमोद करे है, मन मिश्र दोष को भरे है।
अनुमोद भाव को त्यागा, जब शुद्धातम है जागा ॥३१॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदित मिश्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
एषण समिति को जानो, वचनों से भी है मानो।
वचकृत दोषों को तजना, और नाम प्रभु का भजना ॥३२॥
ॐ ह्रीं वचनकृत मिश्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
संदेश दोष न देना, दोषों से दूर है रहना।
वचनों को शुद्ध बनाओ, वचनों के दोष हटाओ ॥३३॥
ॐ ह्रीं वचनकारित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
जितनी शुद्धि भोजन की, उतनी शुद्धि बुद्धि की।
अनुमोदना दोष को हरना, जिनदेव शरण में रहना ॥३३॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
जैसा खाते हो अन्न, वैसा होता है मन।
कायाकृत दोष को त्यागो, निजधर्म ओर से जागो ॥३४॥
ॐ ह्रीं कायाकृत मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्रत संयम नियम करेंगे, निश्चित पापों से बचेंगे।
इस मिश्र दोष को हरना, पुण्यों में आगे बढ़ना ॥३५॥
ॐ ह्रीं कायाकारित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कोई संयम को जब पाले, अनुमोदन पुण्य कमाले।
ना मिश्र दोष को लगाओ, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाओ ॥३६॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदित मिश्रदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्थापित दोष

दोहा

जिस बर्तन भोजन बना, दूजे में रख देय।
स्थापित यह दोष है, दोष प्रभु ही हरेय ॥३७॥
ॐ ह्रीं मनःकृतस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपने घर या दूजे के, नहीं लेय मुनिराज।
स्थापित इस दोष को, मन से तजे मुनिराज ॥३८॥
ॐ ह्रीं मनःकारितस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन अनुमोदन न करें, करें तो दोष लगाय।
मन शुद्धि करके ही वे, शुद्धाहार को पाये ॥३९॥
ॐ ह्रीं मनसामोदितस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन से भी कहते नहीं, भोज पात्र बदलेय।
वचकृत के इस दोष को दूर से ही हर लेय ॥४०॥
ॐ ह्रीं वचनकृतस्थापित दोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दे उपदेश करवाये ना, धर मन में वैराग।
स्थापित वच दोष को, करते मुनिवर त्याग ॥४१॥
ॐ ह्रीं वचनकारितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोष किसी ने भी किया, अनुमोद का त्याग।
वच अनुमोदन से रहित, खिले त्याग का बाग ॥४२॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नव कोटि से त्यागते, स्थापित यह दोष।
नव जीवन है त्याग का, धर आतम संतोष ॥४३॥
ॐ ह्रीं कायकृतस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोजन का बर्तन बदल देते हैं जो आहार।
दोष जान मुनिवर तजे, त्याग धरम का सार ॥४४॥
ॐ ह्रीं कायकारितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काय न अनुमोदन करे, करें तो दोष लगाय।
दोष दूर करने प्रभु, चरणों शीश झुकाये ॥४५॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितस्थापितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बलि दोष विचार

दोहा

किसी पितर या यक्ष को, भोजन दिया बनाय।
बलि दोष इसको कहा, दोष मिटाने आय ॥४६॥
ॐ ह्रीं मनःकृतबलिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पितर पूज भोजन बचा, मुनि को दिया कराय।
मन कारित यह दोष का, बंध छुड़ाने आये ॥४७॥
ॐ ह्रीं मनःकारितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यक्ष पूज भोजन बचा, दिया आहार में दान।
मन अनुमोदन भी किया, दोष छुटे अनुदान ॥४८॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नाग पूज भोजन बचा, मुनि को दिया जिमाय।
बलि दोष इसको कहा, छूटे अर्घ्य चढ़ाय ॥४९॥
ॐ ह्रीं वचनकृतबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

खुद न किया पर कर दिया, काया कारित दोष।
दोष छुड़ाने आये प्रभो, हृदय धर संतोष ॥५०॥
ॐ ह्रीं वचनकारितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आने वाले संयमी, पूर्व ही जल को क्षेप।
यह भी दोष हुआ तभी, दोष छूटे हित हेत ॥५१॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से अनुमोद कर, और प्रशंसा गाय।
अनुमोदन इस दोष को बंध छुड़ाने आये ॥५२॥
ॐ ह्रीं कायकृतबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से बलि दोष कर, दिया नहीं फिर ध्यान।
जिनवर ने समझाय दी, छूटे मन अज्ञान ॥५३॥
ॐ ह्रीं कायाकारितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
काया से अनुमोदना, किये इशारे घोर।
ज्ञान हुआ छोड़ू इसे, विनती है कर जोर ॥५४॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितबलिदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रावर्तित (प्राभृत) दोष विचार

दोहा

दान आज जो देना था, कल या परसो देय।
दिवस प्राभृत दोष यह, पूजा प्रभो हर लेय ॥५५॥
ॐ ह्रीं मनः कृतप्रावर्तितदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
शुक्ल पक्ष में देना था, कृष्ण पक्ष में देय।
अथवा उल्टा ही किया, स्थूल प्राभृत होय ॥५६॥
ॐ ह्रीं मनःकारितप्रावर्तितदोषविवर्जिताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
देना था वैशाख में, दिया चैत में दान।
मास परावृत दोष यह, क्षमा करो भगवान ॥५७॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
अगले वर्ष में देना था, दिया इसी साल दान।
अथवा आगे पीछे कर, वर्ष प्राभृत ही जान ॥५८॥
ॐ ह्रीं वचनकृतप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
देना था दोपहर में, दिया सुबह ही दान।
सूक्ष्म प्राभृत यह दोष को, जानो प्रभु अज्ञान ॥५९॥
ॐ ह्रीं वचनकारितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
समय बदलने से वहाँ, मन में हो संक्लेश।
इसीलिये यह दोष है, प्रभु का है उपदेश ॥६०॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
प्राभृत दोष को छोड़ के, शुद्धि मन में आये।
दोष रहित मुझको करो, शत-शत शीश झुकाये ॥६१॥
ॐ ह्रीं कायकृतप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्वयं दोष तो ना किया, करवाया किसी और।
काया कारित दोष है, कर्मों का है जोर ॥६२॥
ॐ ह्रीं कायकारितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
इच्छा मोक्ष की है यदि, दोषों को करो दूर।
श्रद्धा मन में धर सदा, सुख पाओं भरपूर ॥६३॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितप्रावर्तितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्राविष्कर दोष विचार

दोहा

प्राविष्कार के भेद दो, संक्रमण और प्रकाश।
मन से इनको दूर कर, धर्म का होय विकाश ॥६४॥
ॐ ह्रीं मनः कृतप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
इक बर्तन से दूजे में, वस्तु यदि कराय।
दोष संक्रमण है कहा, शुद्धि प्रभु कराय ॥६५॥
ॐ ह्रीं मनःकारितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
बर्तन के स्थान को, बदले कही रखाय।
दोष संक्रमण है कहा, चरणों अर्घ्य चढ़ाय ॥६६॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
राख से यदि बर्तन घिसे, यह भी दोष बताय।
दोष प्रकाशित है कहा, प्रभु जी दोष हराय ॥६७॥
ॐ ह्रीं वचनकृतप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
मंडप में दीपक जला, कीना वहाँ प्रकाश।
दोष प्रकाशित है कहा, दोष दूर हो आश ॥६८॥
ॐ ह्रीं वचनकारितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
मुनिवर जब आहार लें, घर में प्रकाश करेय।
प्राविष्कार यह दोष हो, शक्ति त्याग की देय ॥६९॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
जिस क्रिया से पाप हो, औ होवे आरंभ।
इसीलिये यह दोष है, तजते धर्म प्रारंभ ॥७०॥
ॐ ह्रीं कायकृतप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोष तजे गुण धार के, बने आप भगवान।
चरण वंदना नित करूँ, बारंबार प्रणाम ॥७१॥
ॐ ह्रीं कायकारितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोष त्याग की भावना, आतम शुद्ध कराय।
इसीलिये जिनदेव हम, पूजा भक्ति कराय ॥७२॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितप्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन वच काया साथ में, कृत कारित अनुमोद।
इन सबसे ही त्याग हो, हो आतम का शोध ॥७३॥
ॐ ह्रीं प्राविष्करदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रीत दोष विचार

चाल छंद (तर्ज-तुम सम्मेदशिखर...)

दे गाय भैंस कालोनी, चेतन पदार्थ क्रय कीनी।
यह क्रीत दोष कहलाये, जिनवर जी दूर हटाये ॥७४॥
ॐ ह्रीं मनःकृतक्रीतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूपया दे वस्तु लीनी, मुनि को आहार में दीनी।
मनकारित दोष हटाये, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाने ॥७५॥
ॐ ह्रीं मनःकारितक्रीतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्या को बेच धन पाया, उससे आहार कराया।
अनुमोदना मन में कीनी, यही दोष दूर कर दीनी ॥७६॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितक्रीतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मंत्रों से धन है कमाया, मुनि को आहार कराया।
आहार में दोष लगाया, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाया ॥७७॥
ॐ ह्रीं वचनकृतक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

घर में हो सारे पदार्थ, आहार देने का अर्थ।
प्रभु दोष दूर हो जायें, यह भाव चरण में भाये ॥७८॥
ॐ ह्रीं वचनकारितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रय में क्लेश होता है, इससे ही दोष होता है।
मन भाव शुद्ध कर देना, चर्या के पुण्य को लेना ॥७९॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों ने प्रवृत्ति कीनी, वस्तु को क्रय कर लीनी।
वचकृत यह दोष लगाया, प्रभु इसे छुड़ाने आया ॥८०॥
ॐ ह्रीं कायकृतक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से कार्य कराया, सामान और बुलवाया।
वचकारित दोष को हरना, आया प्रभु तेरी शरणा ॥८१॥
ॐ ह्रीं कायकारितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नवकोटि शुद्ध आहार, करता है शुद्ध विचार।
अनुमोदन दोष हटाना, गलती को क्षमा प्रभु करना ॥८२॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्रीतदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रामिच्छ (ऋण दोष) दोष विचार

चाल छंद

ले दाल रोटी का कर्ज, करता आहार में मर्ज।
प्रामिच्छ दोष बतलाया, यह बंध छुड़ाने आया ॥८३॥
ॐ ह्रीं मनः कृतप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मनकारित दोष को दूर, गये मुक्ति सुख भरपूर।
प्रभु चरणों दोष हटाऊँ, मुक्ति की भावना भाऊँ ॥८४॥
ॐ ह्रीं मनःकारितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोजन ले कर्ज के रूप, विपरीत आहार स्वरूप।
मन अनुमोदन दोष हटाने, आया प्रभु शरणा पाने ॥८५॥
ॐ ह्रीं मनसानुमोदितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से मांग के लाया, मुनि को आहार कराया।
वचकृत है दोष परिहारी, आया प्रभु शरण तिहारी ॥८६॥
ॐ ह्रीं वचनकृतप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोषों से दूर जिनेशा, कहलाते है परमेशा।
वचकारित दोष विनाशी, प्रभु बने शिवपुर के वासी ॥८७॥
ॐ ह्रीं वचनकारितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषण समिति का पालन, बन जाता मुक्ति लालन।
अब दोष नाश के हेतु, प्रभु भक्ति बनी है सेतु ॥८८॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितप्रामिच्छदोषनिवारकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मनकृत दोषों को धोया, मुक्ति के बीज को बोया।
यह दोष नशाने आये, प्रभु तुम ही मन को भाये ॥९७॥

ॐ ह्रीं कायकृतपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वपु कारित दोष निवारो, मन शुद्ध भाव संभारो।
समिति एषणा के धारी, दोषों के हैं परिहारी ॥९८॥

ॐ ह्रीं कायकारितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदना ना करना है, प्रामिच्छ दोष हरना है।
हे शुद्ध आप जिनदेवा, हम करें आपकी सेवा ॥९९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परिवर्तक (परावर्त) दोष विचार

चाल छंद

दाता रोटी औ भाता, घटिया औरों को देता।
बदले में उत्तम लेता, परिवर्तक दोष है लगता ॥१००॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पहले तो मन ने विचारा, औरों का लिया सहारा।
मन कारित दोष लगाया, प्रभु बंध छुड़ाने आया ॥१०१॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिन अनुमोदन के त्यागी, मुनिवर तो है वैरागी।
अनुमोद दोष को नाशों, निज आतम रूप प्रकाशों ॥१०२॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समिति शुद्धि करवाती, दोषों से नित्य बचाती।
यह मार्ग मुक्ति में जाये, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाये ॥१०३॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से कह के कराया, पर दोष तो उसमें आया।
वच कारित दोष हरीजे, श्रद्धा का शुभ फल दीजे ॥१०४॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदन दोष न पाऊँ, यदि लगा तो दूर भगाऊँ।
पूजा करूँ मैं जिनदेवा, और करूँ आपकी सेवा ॥१०५॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परिवर्तित दोष लगाये, ना ध्यान से भोज बनाये।
करो दोष दूर भगवान, चरणों में करूँ प्रणाम ॥१०८॥

ॐ ह्रीं कायकृतपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

घर में सामग्री जो हो, वो ही मुनिवर को दे दो।
काया का दोष मिटाने, आया हूँ पाप घटाने ॥१०९॥

ॐ ह्रीं कायकारितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम की शुद्धि हेतु, आहार बनाया सेतु।
अनुमोदन दोष नशाऊँ, एषण शुद्धि को पाऊँ ॥११०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपरिवर्तकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अभि घट दोष विचार

है सर्व देश दो अभिघट, औ योग्य अयोग्य का जुगत।
मनकृत कर दोष हुआ है, जिनदेव को पूज लिया है ॥१११॥

ॐ ह्रीं मनःकृतअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रम से जो सप्त घरों से लाया आहार वरों से।
यह गुरु योग्य बतलाया, शुभ ज्ञान रूप दिखलाया ॥११२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नवमें या दसवें घर से, या बिन पंक्ति के घर से।
आहार अयोग्य बताया, यह दोष मिटाने आया ॥११३॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूजे गाँवों से लाया, औ अन्न से भोज बनाया।
सर्वाभिघट कहलाया, प्रभु दोष टालने आया ॥११४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जा दूजें देश से लाया, मुनि को आहार कराया।
सर्वाभिघट कहलाया, दोषों को भगाने आया ॥११५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपने ही गाँव से लाया, उससे आहार कराया।
स्वग्राम का दोष लगाया, प्रभु दोष छुड़ाने आया ॥११६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित अभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपने ही देश से लाया, आहार में दोष लगाया।
स्वदेश दोष बतलाया, प्रभु क्षमा मांगने आया ॥११७॥

ॐ ह्रीं कायकृतअभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम की शुद्धि करना, आहार शुद्ध ही लेना।
भावों में शुद्धि आये, आतम का ध्यान लगाये ॥१०८॥

ॐ ह्रीं कायकारित अभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हिंसा आने जाने में, होती कभी अंजाने में।
संयम का घात है होता, इस कारण दोष है लगता ॥१०९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित अभिघटदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उभिन्न दोष विचार

भुजंगप्रयात छंद (नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

धर्म अहिंसा के पालन के हेतु।
करते हैं शुद्धि आहार हेतु ॥
दोषों को दूर, मैं करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥११०॥

ॐ ह्रीं मनःकृतउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उद्भिन्न दोष में, हिंसा है आये।
जिनधर्म सबको, अहिंसा सिखाये ॥
दोषों को दूर, मैं करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥१११॥

ॐ ह्रीं मनःकारितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

घी का जो बर्तन, ढका पात्र गंदा।
कीचड़ से लिपटा है जीव अनंता ॥
दोषों को दूर मैं, करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥११२॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गुड़ का जो बर्तन, ढँका गंदा पात्र।
दिया मुनि को भोजन, बना है अपात्र ॥
दोषों को दूर मैं, करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं, शीश झुकाया ॥११३॥

ॐ ह्रीं वचनकृतउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शक्कर में वैसे ही, चींटी जो आती।
ढका पात्र गंदा तो, जीवों को लाती ॥
दोषों को दूर मैं करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥११४॥

ॐ ह्रीं वचनकारितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उसी पात्र में से, दिया जो आहार।
उद्भिन्न दोष का, करता विचार ॥
दोषों को दूर, मैं करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥११५॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोषों को दूर, प्रभु ने किया है।
दोष रहित हो के, जीवन जिया है ॥
दोषों को दूर मैं, करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥११६॥

ॐ ह्रीं कायकृतउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

इन्द्रिय विजयी ही तो, संयम को पाले।
संयम सहित ही, करम को निकाले ॥
दोषों को दूर मैं करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥११७॥

ॐ ह्रीं कायकारितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

करुणा दया के है, भंडार मुनिवर।
तभी दोष दूर ना करते हैं गुरुवर ॥
दोषों को दूर मैं, करने को आया।
क्षमा दान दो जिन, मैं शीश झुकाया ॥११८॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितउद्भिन्नदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मालारोहण दोष विचार

छंद भुजंगप्रयात

मुनिवर तो मन से, दोष निवारे।
जो दोष दिखे तो, दूर करावे ॥

मन से वचन से, दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥११९॥

ॐ ह्रीं मनःकृतमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्तये** अर्घ्यं...।

सीढ़ी पे चढ़के, जो वस्तु को लाये।
लगा दोष माला, आरोहण बताये ॥
मन से वचन से, दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥१२०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये** अर्घ्यं...।

सीढ़ी उतर के, जो भोज को लाये।
मुनि से छिपा के, आहार कराये ॥
मन से वचन से, दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥१२१॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये** अर्घ्यं...।

ऊँची जमीं चढ़ के, भोजन को लाये।
दाता अपात्र के, दोष छिपाये ॥
मन से वचन से, दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥१२२॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये** अर्घ्यं...।

नीचे जमीं जा के, आहार लाये।
लगा दोष चर्या में, शुद्धि न पाये ॥
मन से वचन से दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥१२३॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये** अर्घ्यं...।

एषणा समिति, अहिंसा सिखाये।
अहिंसा धरम से ही, आहार पाये ॥
मन से वचन से दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आय ॥१२४॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये** अर्घ्यं...।

अहिंसामयी भोज, मन शुद्धि करता।
आतम की शुद्धि, धरम से सँवरता ॥

मन से वचन से, दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥१२५॥

ॐ ह्रीं कायकृतमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

काया भी धर्म अहिंसा कराये।
काया धरम को, साधन बनाये ॥
मन से वचन से दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥१२६॥

ॐ ह्रीं कायकारितमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अनुमोदना दोष, पाप कराये।
दोषों से दूर, प्रभु जी को ध्याये ॥
मन से वचन से दोष लगाये।
करो दूर जिनवर, शरण तेरी आये ॥१२७॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमालारोहणदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

आच्छेद्य विचार

भुजंगप्रयात (नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

दान न दोगे, तुम्हें लूट लेंगे।
कहे चोर ऐसा, तभी तो छोड़ेंगे ॥
अच्छेद्य ये दोष को, मन से कराया।
दोषो को धोने, शरण तेरी आया ॥१२८॥

ॐ ह्रीं **मनःकृतआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

राजा के भय से ही, दान दिया है।
नहीं भाव मन में, उपचार किया है ॥
अच्छेद्य ये दोष को, मन से कराया।
दोषो को धोने, शरण तेरी आया ॥१२९॥

ॐ ह्रीं **मनःकारितआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

राजा का डर है, दे देश निकाला।
इसी से मुनि को दिया है आहारा ॥
मन अनुमोदन का, दोष लगाया।
दोषो को धोने, शरण तेरी आया ॥१३०॥

ॐ ह्रीं **मनसानुमोदितआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

भय का लिया भोज, शुद्धि न देवे।
ऐषण समिति में, दोष लगावे॥
वचकृत आच्छेद्य, दोष लगाया।
दोषों को धोने, शरण तेरी आया॥१३१॥

ॐ ह्रीं वचनकृतआच्छेद्यदोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आहार शुद्धि तो, मन शुद्धि करती।
करम निर्जरा करके, दोषों को हरती॥
आच्छेद्य दोष को, दूर है करना।
इसी से प्रभु तेरी, पूजा है करना॥१३२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आहार में संयम, मन शुद्धि करता।
संयम को ले, मुक्ति पथ आगे बढ़ता॥
वच अनुमोदन के दोष हटाये।
इसी से प्रभु तेरी, शरणा में आये॥१३३॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयम बिना काया, वश में न होती।
संयम बिना काया, पापों को बोती॥
काया के दोष, हटाने है आये।
करी भक्ति तेरी, औ गुणगान गाये॥१३४॥

ॐ ह्रीं कायकृत आच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषण समिति भी, संयम सिखाये।
भोजन की शुद्धि, भी मन वश कराये॥
काया के दोष, हटाने हैं आये।
करी भक्ति तेरी, औ गुणगान गाये॥१३५॥

ॐ ह्रीं कायाकारितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोद संयम भी, संयम कराये।
इसी से अनुमोद, भक्ति बढ़ाये॥
काया के दोष, हटाने है आये।
करी भक्ति तेरी, औ गुणगान गाये॥१३६॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितआच्छेद्यदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनीशार्थ दोष विचार

घर का जो मालिक, वो देने से रोके।
फिर भी यदि ले तो, दोष है होवे॥
एषण के दोषों को, दूर वे करते।
करके तपस्या वे मुक्ति को वरते॥१३७॥

ॐ ह्रीं मनःकृतअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

दोष रहित हो गुरु, आहार लेते।
संयम की नौका को, खुद ही वे खेते॥
एषणा समिति का, दोष हटाया।
भक्त ने गुरुवर को, अर्घ्य चढ़ाया॥१३८॥

ॐ ह्रीं मनःकारितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मन से अनुमोद ना ही, वे करते।
मुक्ति के राही, वे राह पे चलते॥
जिनवर की भक्ति, मैं नित्य करूँगा।
कर्मों का क्षय करके, मुक्ति वरूँगा॥१३९॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों के साधक, वचन सिद्धि कीने।
दोष वचन को, न मन में वे लीने॥
एषणा समिति का, वचनों से पालन।
झुके भक्त आकर के, गुरुवर के चरणन॥१४०॥

ॐ ह्रीं वचनकृतअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचकारित दोष, गुरु जी हटाये।
एषणा समिति को, चित्त से ध्याये॥
अनीषार्थ तज के है, आहार लीना।
आतम की शुद्धि, भावों में कीना॥१४१॥

ॐ ह्रीं वचनकारितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आहार लेते, समय ध्यान रखते।
करे वो मना तो, वे भोजन को तजते॥
अनुमोदना भी, कभी ना ही करते।
हृदय शुद्ध करके, वे निज में विचरते॥१४२॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयम से काया को, वश में किया है।
तभी आत्म ध्यान में, लगता जिया है॥
सकल दोष तज के, निजातम को ध्याया।
काया ने संयम, भी करके दिखाया॥१४३॥

ॐ ह्रीं कायकारितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा समिति का पालन है करते।
अनीषार्थ दोष को, तज निज में रहते॥
तप साधना से, है आतम सुधारा।
किया ध्यान निज में, निज को निहारा॥१४४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितअनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

परम शुद्धि पा के, जिनेश्वर बने हैं।
वर्णन न गाये, गुण तो घने हैं॥
दोषों के त्यागी, परम वीतरागी।
करूँ पूजा तेरी, निजाम है जागी॥१४५॥

ॐ ह्रीं अनीशार्थदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पात्र आश्रित उत्पादन के १६ दोष

धात्री दोष निरूपण

भुजंग प्रयात (नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

मुनिवर ग्रहस्थों को, उपदेश देते।
बच्चे का लालन व पालन सिखाते॥
हो के प्रसन्न, वो आहार देता।
यदि गुरु ले ले तो, दोष है होता॥१४६॥

ॐ ह्रीं मनःकृतधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धाय समां स्नान, करना सिखाते।
विधि जैसी होती, वे वैसी बताते॥
धात्री है दोष, प्रभु ने बताया।
करूँ दोष दूर, शरण में हूँ आया॥१४७॥

ॐ ह्रीं मनःकारितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्त्रों को पहनाने का, ज्ञान सिखाते।
कौन से वस्त्र अच्छे, यह भी बताते॥
पश्चात आहार ले, वन को जाते।
धात्री लगा दोष, प्रभु जी बताते॥१४८॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बच्चों को सुन्दर आभूषण पहनाओ।
बच्चों को अच्छी तरह से खिलाओ॥
उपदेश ऐसा है, दोष बताया।
ऐषण समिति में, दोष लगाया॥१४९॥

ॐ ह्रीं वचनकृतधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूध पिलाने की, विधियाँ बताते।
पश्चात् आहार, ले वन को जाते॥
एषणा समिति के, दोषों को त्यागूँ।
शुद्ध आत्मा के प्रति मैं भी जागूँ॥१५०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बच्चों को निंद्रा, कैसे अच्छी आये।
गुरुवर जी उसकी, विधि भी बताये॥
ऐसे आहार से, पाप प्रहार।
तजें इसको प्रभुजी, आतम बिहार॥१५१॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रावक विधि सुन के, प्रसन्न होता।
गुरुवर को आहार, खुश हो के देता॥
धात्री ये दोष, प्रभु ने बताया।
दोषों को धोने, प्रभु जी मैं आया॥१५२॥

ॐ ह्रीं कायकृतधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धात्री का दोष, नव कोटि को छोड़ें।
दोष रहित भोज, ले मन को मोड़े॥
एषणा समिति से, आतम विशुद्धि।
आतम विशुद्धि से, शिव की हो सिद्धि॥१५३॥

ॐ ह्रीं कायकारितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आगम अनुरूप चर्या को करते।
चर्या में क्रिया का ध्यान है रखते॥
चर्चा हो शुद्ध, औ चर्या हो शुद्ध।
दोषों रहित हो के, आतम प्रबुद्ध॥१५४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितधात्रीदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूत दोष स्वरूप विचार

चौपाई छंद

देश दूजे के समाचार, उनके हैं जो कि रिश्तेदार।
समाचार कहा आहार लिया, यह दूत नाम का दोष लिया॥१५५॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शुभ समाचार है दूजे गाँव, गृहस्थों से कह हो खुश भाव।
आहार लिया दोषों के साथ, मनकारित दोष का लिया पाप॥१५६॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सुन समाचार हर्षित जो होय, मुनिवर को वे आहार देय।
प्रभु जी ने बताया दोष हुआ, प्रभु दोष दूर का भाव किया॥१५७॥

ॐ ह्रीं मनसानुमोदितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा समिति का दोष जाने, जिनभगवन की आज्ञा जो माने।
इस दोष दूर के भाव हुये, आकर जिनवर के चरण छुये॥१५८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

नहिं वचनों में अनुमोद पाये, एषणा समिति में दोष आये ।
वचकारित दोष को दूर करूँ, पापों की गठरी हल्की करूँ॥१५९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से इशारा नहीं करूँ, अनुमोद का फल भी नाहिं भरूँ।
वच अनुमोदन दोषों को टार, आया हूँ जिनवर तेरे द्वार॥१६०॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से इशारा नहीं करूँ, मायाचारी से दूर रहूँ।
कायाकृत दोष को हरना है, भवसागर हमको तरना है॥१६१॥

ॐ ह्रीं कायकृतदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन कारित दोष को निरवारो, निज आतम ज्ञान को सम्हारो।
ये दोष कर्म का बंध करें, ये कर्म आत्म के सौख्य हरे॥१६२॥

ॐ ह्रीं कायकारितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोषों से रहित आहार होय, मुक्ति पथ का वह पथिक होय।
एषणा समिति का हो पालन, जिन चर्या का ही हो लालन॥१६३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदूतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निमित्त दोष परिहार

चौपाई छंद

ज्योतिष के ज्ञानी है गुरुवर, और ज्ञान देते है वे मुनिवर।
पीछे वे आहार लेय, प्रभु कहते ये निमित्त दोष होय॥१६४॥

ॐ ह्रीं मनःकृतनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तिल मस्सा देख के फल बताय, श्रावक खुश हो चौका लगाय।
इस निमित्त दोष को परिहारो, हे भगवन मुझको भी तारो॥१६५॥

ॐ ह्रीं मनःकारितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जड़ चेतन के जो शब्द सुने, सुन उसका वे फल शीघ्र कहे।
फिर श्रावक ने आहार दिया, एषणासमिति में ही दोष लगा॥१६६॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रूखी चिकनी धरती को देख, फल कहते सच-सच है हरेक।
आहार पूर्व यदि बतलाया, निर्दोष आहार नहीं पाया॥१६७॥

ॐ ह्रीं वचनकृतनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

है छिद्र वस्त्र और शास्त्रासन, फल कहते गुरु रह पद्मासन।
हो ज्ञानप्रभाव से भोज लिया, अब दोष दूर का भाव किया॥१६८॥

ॐ ह्रीं वचनकारितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ग्रह नक्षत्र हों उदय अस्त, फल कहते गुरु होय जो शक।
आहार के कारण ज्ञानदेय, प्रभु नैया मेरी पार होय॥१६९॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्वस्तिक हो या हो शंखचक्र, फल कहते गुरु होय जो युक्त।
यह निमित्त दोष प्रभु बतलाये, प्रभु दूर करन को अब आये॥१७०॥

ॐ ह्रीं कायकृतनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शुभ अशुभ स्वप्न के फल कहते, पश्चात वे वही आहार लेते।
एषणा समिति के दोष हरो, प्रभु नैया मेरी पार करो ॥१७१॥
ॐ ह्रीं कायकारितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
एषणा समिति का पालन कर, सारे कर्मों के बंधन हर।
जिन देव जितेन्द्रिय आप बने, भक्तों के भगवन आप बने ॥१७२॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितनिमित्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आजीवन दोष विचार

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन...)

अपनी निज जाति बता के, जाति से जाति मिला के।
करते आहार व्यवस्था, आजीवन दोष अवस्था ॥१७३॥
ॐ ह्रीं मनःकृतआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
अपने कुल का परिचय दे, अपने कुल का अभिनय दे।
आहार उन्होंने पाया, आजीवन दोष बताया ॥१७४॥
ॐ ह्रीं मनःकारितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
अपने तप का खुद गुणगान, खुद का ही बढ़ा सम्मान।
आहार के लिये बताया, आजीवन दोष लगाया ॥१७५॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदित आजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
कर शिल्प कला व्याख्यान, श्रावक को दिया है ज्ञान।
आजीविका इससे पाई, जिन आज्ञा दोष लगाई ॥१७६॥
ॐ ह्रीं वचःकृतआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
हाथों की कला सिखाये, बदले में आहार पाये।
एषणा समिति का दोष, अब हुआ आत्म अवशोष ॥१७७॥
ॐ ह्रीं वचनकारितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
भिक्षा शुद्धि बतलाई, जिनवचन हृदय में समाई।
कर दोष दूर बने देवा, मैं करूँ चरण की सेवा ॥१७८॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
कर्मों का कल्मष धोऊँ, औ बीज मुक्ति का बोऊँ।
तन मन को शुद्ध बनाऊँ, प्रभु सेवा अवसर पाऊँ ॥१७९॥
ॐ ह्रीं कायकृतआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उत्तम समिति का पालन, उत्तम भावों से लालन।
उत्तम स्थान दिलाये, उत्तम भावों को लाये ॥१८०॥
ॐ ह्रीं कायकारितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
निर्दोष आहार बताया, दोषों को दूर कराया।
निर्दोष प्रभु जी ज्ञानी, यह कहती है जिनवाणी ॥१८१॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितआजीवनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वनीपक दोष विचार

चाल छंद

पाखंडी को दान जो देवे, यह पूछा प्रश्न किसी ने।
दाता के भाव को पढ़ के, वैसा ही उत्तर देते॥
दाता प्रसन्न दे दान करता गुरु का सम्मान।
यह दोष वनीपक पाया, जिनदेव ने है बतलाया ॥१८२॥
ॐ ह्रीं मनःकृतवनीपकदोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
कोढ़ी को यदि दे दान, मिले कोई जो वरदान।
उत्तर देते खुश करने, हो दोष वनीपक करने ॥१८३॥
ॐ ह्रीं मनःकारितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
बंदर चीटी औ कागा, दे दान तो फल क्या लागा।
नहीं सत्य उसे है बताया, आहार बीच में आया ॥१८४॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
उपदेश वचन से देते, वचनों से कर्म को लेते।
वचकृत दोषों को हटाऊँ, प्रभु पूजा तेरी गाऊँ ॥१८५॥
ॐ ह्रीं वचनकृतवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
दाता को प्रसन्न है करना, आहार है उससे लीना।
यदि ऐसा भाव बनाया, यह दोष वनीपक पाया ॥१८६॥
ॐ ह्रीं वचनकारितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
वचनों से किया अनुमोदन, भावों का किया न शोधन।
अनुमोदना दोष को टारो, प्रभु मेरी ओर निहारो ॥१८७॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितवनीपकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
जिनगुण संपत्ति पाना, दोषों को दूर भगाना।
कायाकृत दोष हटाये, सुखमयी शुभ मुक्ति पाये ॥१८८॥

ॐ ह्रीं कायकृतत्यागदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हो त्याग में भी तो परीक्षा, छूटी पापी इच्छा।

तप चारित्र हो निर्दोषा, संसार की छूटी आशा ॥१८९॥

ॐ ह्रीं कायकारितत्यागदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया में संयम रखना, तप त्याग का रस है चखना।

काया के दोष हटायें, अनुपम सुख मुक्ति पायें ॥१९०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितत्यागदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिकित्सा दोष विचार

चाल छंद

यदि दवा बतायें गुरुवर, दाता दे दान खुश होकर।

यह चिकित्सा दोष कहलाया, हो दोष दूर मन भाया ॥१९१॥

ॐ ह्रीं मनकृतचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिकित्सा आठ प्रकारा, रोगी पर करें प्रहारा।

आहार को निमित्त बनाया, प्रभुजी ने दोष बताया ॥१९२॥

ॐ ह्रीं मनकारितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से समिति पालें, एषणा समिति निहारें।

वचकृत दोषों को धोया, शुभ धर्म बीज को बोया ॥१९३॥

ॐ ह्रीं मनानुमोदितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आहार निर्दोष लेना, संयम में वृद्धि करना।

तप श्री व्रत के त्यागी, गुरुवर की आगम आगी ॥१९४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दृढ़ता से समिति पालें, हट करी के जाते।

निर्दोष आहार को पाये, चिकित्सा दोष हटायें ॥१९५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लज्जा से कोई न करते, और स्वार्थ भाव न भरते।

निर्दोष आहार है पाया, जिसने पावन बनाया ॥१९६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदित चिकित्सा दोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वैयावृत्ति ना करते, पर स्वार्थ भावना हरते।

कायाकृत दोष निवारी, मुक्ति की है तैयारी ॥१९७॥

ॐ ह्रीं कायकृतचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गुरु विनय से सेवा करते, अभिमान जरा न करते।

कायकारित अब धोया, जिनवाणी रथा को जोया ॥१९८॥

ॐ ह्रीं कायकारितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिकित्सा दोष अनुमोदन, पापों का किया है शोधन।

जिनदेव ने तप था कीना, सिद्धालय वास है कीना ॥१९९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितचिकित्सादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

क्रोध दोष विचार

कर क्रोध को, भय उपजाया, पश्चात आहार को पाया।

यह क्रोध दोष को तजना, निज आतमराम को भजना ॥२००॥

ॐ ह्रीं मनकृतक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अज्ञानता क्रोध बढ़ावे, क्रोधी अज्ञानता पावे।

अज्ञान क्रोध अब हरना, श्री ज्ञान ही इसको हरना ॥२०१॥

ॐ ह्रीं मनकारितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दूर कर आहार दिया है, मुनिवर ने दोष लिया है।

मन से इस क्रोध को नाशो, श्री क्षमा धर्म परकाशो ॥२०२॥

ॐ ह्रीं मनानुमोदितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अब क्रोध वचन है बोले, पापों के द्वार को खोले।

वचनों का क्रोध हटाओ, प्रभु अपनी शरण बिठाओ ॥२०३॥

ॐ ह्रीं वचनकृतक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

न किया किन्तु है कराया, इसमें भी पाप उपाया।

वच कारित दोष को हरना, दोषों को दूर है करना ॥२०४॥

ॐ ह्रीं वचनकारितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पीड़ी के क्रोध से डरते, भयभीत हो कार्य को करते।

जिनवर इस दोष बतायें, वे क्षमा राह दिखलायें ॥२०५॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रावक साधु की सेवा, मन से कर पाता मेवा।

यदि क्रोध के कारण करता, यह दोषकर्म से भरता ॥२०६॥

ॐ ह्रीं कायकृतक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया पर क्रोध झलकता, काया भी आहत करता।

काया का दोष हटायें, जिनदेव की भक्ति गायें ॥२०७॥

ॐ ह्रीं कायकारितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हो दोष दूर लें दीक्षा, दीक्षा में होय परीक्षा।
समता धर इसको सहते, नहिं क्रोध भाव में बहते ॥२०८॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितक्रोधदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मान दोष विचार

दोहा (तर्ज-राजा राणा...)

भाषा गर्व की बोल के, किये प्रभावित लोग।
फिर आहार को लेवते, मान दोष का रोग ॥२०९॥

ॐ ह्रीं मनःकृतमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्ञान गर्व दिखलावते, मान दोष बतलाय।
मनकारित यह दोष तज, उपजा शुद्ध स्वभाव ॥२१०॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूजा मद दिखलावते, अपना भाव प्रभाव।
मन अनुमोदन दोष तज, उपजा शुद्ध उपाव ॥२११॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कुल मद को दिखा वहाँ, बड़ा स्वयं को बनाये।
वचकृत दोष निवारके, आतम शुद्ध बनाये ॥२१२॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन शक्ति दिखलावते, बाकी है कमजोर।
वचकारित के दोष तज, लिया मुक्ति का छोर ॥२१३॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाति बड़ी बता वहाँ, बड़ा स्वयं को पाय।
वच अनुमोदन दोष तज, मुक्ति पुरी को जाये ॥२१४॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बड़ा तपस्वी मैं हुआ, तप प्रभाव बतलाय।
कायाकृत के दोष तज, कर्मों को विनशाय ॥२१५॥

ॐ ह्रीं कायकृतमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सुन्दर रूप तो है मेरा, फिर भी दीक्षा लेय।
काया कारित दोष तज, नाव आपनी खेय ॥२१६॥

ॐ ह्रीं कायकारितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मैं ऋद्धि का धारी हूँ, मैं हूँ अतिशय वान।
फिर लेते आहार को, मान दोष यह जान ॥२१७॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितमानदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

माया दोष विचार

दोहा

मन माया में है फँसा, फिर लेता आहार।
माया दोष प्रभु कहें, इसको निश्चित टार ॥२१८॥

ॐ ह्रीं मनःकृतमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मनकारित माया तजी, एषणा शुद्धि होय ।
आतम परमातम बनी, सर्व कर्म को खोय ॥२१९॥

ॐ ह्रीं मनःकारितमायादोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन अनुमोदन न करें, दोष रहित आहार।
माया की छाया तजी, करते आत्म विहार ॥२२०॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितमायादोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

माया वचन को बोल के लेते है आहार।
वचकृत दोष निवार के, पहुँचे मुक्ति मँझार ॥२२१॥

ॐ ह्रीं वचनकृतमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचकारित माया तजी, भिक्षा शुद्धि होय।
शुद्ध भाव अघ नाश के, मुक्ति मंजिल पाये ॥२२२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

माया की अनुमोदना, नहीं करें मुनिराज।
मुनिवर से जिनवर बने, पहना मुक्ति ताज ॥२२३॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमायादोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कायाकृत माया हरे, हरे ज्ञान का रोग ।
भावों की शुद्धि करें, धारा संयम योग ॥२२४॥

ॐ ह्रीं कायकृतमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया कारित माया तज, आर्जव धरम को धार।
धर्मवान बन आपने, लिया धरम का सार ॥२२५॥

ॐ ह्रीं कायकारितमायादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

माया कर आहार न लें, ले तो दोष लगाय।
दोष रहित जिन चरण में, दोष दूर हो जाये ॥२२६॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमायादोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

लोभ दोष विचार

दोहा

लोभ पाप का बाप है, सबको ही भरमाये।
लोभ दिखा आहार लिया, व्रत दूषण हो जाये ॥२२७॥
ॐ ह्रीं मनःकृतलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

लोभ तो मन से भी किया, या तो कहीं कराय।
मन कारित यह लोभ तज, प्रभु को शीश झुकाय ॥२२८॥
ॐ ह्रीं मनःकारितलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अनुमोदन जन लोभ का, किया कर्म का नाश।
मुक्तिरमा को प्राप्त कर, पाया सुख अविनाश ॥२२९॥
ॐ ह्रीं मनोनुमोदितलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचन लोभ के न कहे, करें तपस्या घोर।
एषणा समिति शुद्धि से भागे कर्म के चोर ॥२३०॥
ॐ ह्रीं वचनकृतलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

लोभ लाभ में आये जब, मन चंचल हो जाये।
चंचल मन को बांध प्रभु आतम ध्यान लगाये ॥२३१॥
ॐ ह्रीं वचनकारितलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वच अनुमोदन लोभ तज, वचन शुद्धि करवाये।
भिक्षा की शुद्धि करी, आतम शुद्ध बनाये ॥२३२॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तन का लोभ सताये जब, निश्चित दोष लगाये।
दोष रहित जिनदेव के, दर्श से दोष भगाये ॥२३३॥
ॐ ह्रीं कायकृतलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

दूजे के तन लोभ करा, दोष स्वयं ही पाये।
दोषों को तज के गुरु, भगवन आत्म बनाये ॥२३४॥
ॐ ह्रीं कायकारितलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्य[illegible] अर्घ्यं...।**

तन अनुमोद करें नहीं, लोभ से हुये हैं दूर।
जिसने लोभ को वश किया, सुख पाया भरपूर ॥२३५॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितलोभदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

एषणा समिति पूर्व संस्तुति दोष विचार

आहार लेने पूर्व ही, दाता का गुणगान।
पूर्व संस्तुति दोष है, तजो तो आये ज्ञान ॥२३६॥
ॐ ह्रीं मनःकृतपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रेष्ठ वंश के मनुज तुम, कीर्ति है चहुँ ओर।
फिर लेवे आहार को, संस्तुति दोष का जोर ॥२३७॥
ॐ ह्रीं मनःकारितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन अनुमोदन त्याग कर, तजो एषणा दोष।
संयम धर मन वश करे, आता है संतोष ॥२३८॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वाणी दोष रहित हुई, एषणा समिति पाल।
वचकृत दोष को दूर कर, जीता काल कराल ॥२३९॥
ॐ ह्रीं वचनकृतपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

ना बोले बुलवाते ना, ऐसा संयम पायें।
प्रभु पाल मुक्ति गये, चरणों शीश झुकाये ॥२४०॥
ॐ ह्रीं वचनकारितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

शुद्ध समिति व्रत नियम, साधा आतम योग।
भवदधि से नौका तरी, पाया निज संयोग ॥२४१॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय **श्रीजिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

कर्म शत्रु को नाशने, दोष रहित आहार।
दोश नाश प्रभु मुक्ति में, पायें आत्म का सार ॥२४२॥
ॐ ह्रीं कायकृतपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

अविनाशी पद पूजकर, भाव को शुद्ध बनाये।
दोष रहित मैं भी बनूँ, चरणों अर्घ्य चढ़ाये ॥२४३॥
ॐ ह्रीं कायकारितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

निजानंद पाने प्रभु, करें तपस्या घोर।
कर्म अरि को नाशकर, पावें मुक्ति छोर॥२४४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपूर्वसंस्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

एषणा समिति मध्य पश्चात् संस्तुति दोष विचार

चौपाई

दान लिया फिर संस्तुति कीनी, दातायश की प्रशंसा कीनी।
है पश्चात् संस्तुति दोष, प्रभु तजें पाये सुख कोष॥२४५॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

ले आहार सम्मान किया है, पश्चात संस्तुति दोष लिया है।
मन कारित अघ नाशा प्रभु ने, जिनगुण संपत पाई प्रभु ने॥२४६॥

ॐ ह्रीं मनः कारितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

शुद्ध एषणा पालन करते, दोष दूर कर कर्म को हरते।
निर्दोषी परमातम ध्याऊँ, प्रभु पूजन को मन्दिर आऊँ॥२४७॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

शुद्ध एषणा पालन कीना, वचकृत दोष तुरंत तज दीना।
श्री जिनेन्द्र बन निजसुख पाया, प्रभुचरणों में अर्घ्य चढ़ाया॥२४८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

हरें दोष वच शुद्धि कीनी, अमृत वचन से दया है कीनी।
आतम शुद्धि समिति करती, कल्मशकोष दुखों को हरती॥२४९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वच अनुमोदन त्यागी गुरुवर, दोष त्यागने बने है मुनिवर।
तप कर मुनिवर जिनवर बनते, कर्म शत्रु को वे ही हनते॥२५०॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

दोष दूर कर कर्म को नाशा, इससे ही हुआ मुक्ति वासा।
दोष दूर हो, गुण आते हैं, वे ही मुक्ति को पाते हैं॥२५१॥

ॐ ह्रीं कायकृतपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

स्वार्थ में वे ना करें, प्रशंसा, बजा रहे जिनधर्म का डंका।
काया कारित दोष निवारा, निज आतम में करें बिहारा॥२५२॥

ॐ ह्रीं कायकारितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तपसी ज्ञानी गुरु की पूजा, काम नहीं अब कोई दूजा।
सूक्ष्म दोष के है परिहारी, दो आशीष है मेरी बारी॥२५३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपश्चात्स्तुतिदोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

समिति मध्य विद्या दोष विचार

चौपाई

विद्या मैंने सिद्ध है कीनी, दे आहार तो तुझको दीनी।
ऐसा लोभ दिखाये मुनिवर, विद्या दोष कहा है जिनवर॥२५४॥

ॐ ह्रीं मनःकृतविद्यादोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

सिद्धि करने विद्या दूँगा, पहले मैं आहार ही लूँगा।
ऐसा कह आहार लिया है, विद्या दोष का भार लिया है॥२५५॥

ॐ ह्रीं मनःकारितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन से दोष लोभ परिहारी, उनने पाई सिद्धि प्यारी।
सिद्ध प्रभु की पूजा गाऊँ, दो वरदान मैं मुक्ति जाऊँ॥२५६॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वचन को वशकर दोष हटाया, ध्यान लगा कर्मों को भगाया।
तन तजकर सिद्धालयवासी, ज्ञान ध्यान वे आत्म प्रकाशी॥२५७॥

ॐ ह्रीं वचनकृतविद्यादोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

वच कारित अघ दूर किये हैं, कर्म नाश सुख ज्ञान लिये हैं।
जिनने कर्मों को है नाशा, हम उनके चरणों के दासा॥२५८॥

ॐ ह्रीं वचनकारितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्या से आहार न पाये, विद्या आत्म विकास कराये।
विद्या दानी विद्या देते, विद्या से मुक्ति पा लेते॥२५९॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

तपसी चरण में विद्या आये, उनको अपना स्वामी बनाये।
स्वामी आतम ध्यान लगाये, ध्यान में दुष्ट करम नशवाये॥२६०॥

ॐ ह्रीं कायकृतानुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

एषण समिति से आत्म शुद्धि, आत्म शुद्धि से आई विशुद्धि।
आत्म विशुद्धि कर्म नशाये, प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाये॥२६१॥

ॐ ह्रीं कायकारितविद्यादोषविमुक्ताय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

ले सिंहवृत्ति आहार को जाते, एषणा शुद्धि से आहार पाते।
होय कितनी उनकी परीक्षा, परीक्षा देने ली है दीक्षा ॥२६२॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितविद्यादोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा समिति मध्य मंत्र दोष विचार

चौपाई

सिद्ध मंत्र को देने का वादा, प्रथम आहार करूँ मर्यादा।
मंत्र दोष हुआ प्रभु बताये, दोष दूर करने तुम्हें ध्याये ॥२६३॥
ॐ ह्रीं मनःकृतमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मंत्र देने की आश दिलाये, इस कारण आहार को पाये।
मनकृत दोष तजा आपने, आतम शोध भी किया आपने ॥२६४॥
ॐ ह्रीं मनःकारितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मंत्र अनुमोदना भी नहीं करते, सारे दोषों को है हरते।
शिव रमणी पाई तब तुमने, शीश झुकाया आकर हमने ॥२६५॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचकृत दोष भी नहीं लगाये, प्रभु जिनेन्द्र तो विजयी कहाये।
आत्मविजय का ध्वज लहराया, चरणों भक्त ने अर्घ्य चढ़ाया ॥२६६॥
ॐ ह्रीं वचनकृतमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आत्म हेतु की मंत्र साधना, मंत्र में है जिनवर आराधना।
वचकारित के दोष हटाये, मुक्ति पति को अर्घ्य चढ़ाये ॥२६७॥
ॐ ह्रीं वचनकारितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समिति एषणा भरे विशुद्धि, आत्म विशुद्धि देती सिद्धि।
वच अनुमोदना दोष को धोया, अर्घ्य चढ़ा शुभ बीज को बोया ॥२६८॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

स्थिरता काया में आये, आसन आत्म ध्यान को पाये।
वपुकृत दोष को दूर किया है, भक्तों ने जयकार किया है ॥२६९॥
ॐ ह्रीं कायकृतमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मंत्र दोष को दूर है करना, तभी मोक्ष की सीढ़ी चढ़ना।
वपुकृत अघ को दूर किया है, भक्तो ने जयकार किया है ॥२७०॥
ॐ ह्रीं कायकारितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शुद्ध एषणा समिति पालन, करके बने है मुक्ति लालन।
वपु अनुमोद दोष को धोकर, बने विभु कर्मों को खोकर ॥२७१॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमन्त्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा समिति मध्य चूर्ण दोष विचार

चौपाई

नेत्रों के अंजन को बांटे, फिर उस घर में भिक्षा लेते।
चूर्ण दोष यह दोष लगाया, दोष दूर हो शरण में आया ॥२७२॥
ॐ ह्रीं मनःकृतचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन उबटन का चूर्ण हैं देते, बदले में आहार हैं लेते।
मनकारित दोषों को हरने, अब आया प्रभु पूजा करने ॥२७३॥
ॐ ह्रीं मनःकारितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन सुन्दरता कैसे बढ़ती, चर्चा बस इस बात पे रहती।
मन अनुमोदना दोष भी लगता, प्रभु भक्ति से ये भी भगता ॥२७४॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम का उपदेश दिया है, सम्यग्दर्शन ज्ञान लिया है।
एषणा समिति पालन कीना, सिद्धालय जा वास है कीना ॥२७५॥
ॐ ह्रीं वचकृतचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयम वचनों पर है लगाया, तन शृंगार में नहीं लगाया।
शुद्ध भाव आहार है पाया, मुक्ति रमा ने उन्हें बुलाया ॥२७६॥
ॐ ह्रीं वचकारितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सूक्ष्म अनुमोद भी नहीं किया है, सर्व दोष परिहार किया है।
तभी बने मुक्ति के वासी, भाव से पूजूँ मुक्ति प्रवासी ॥२७७॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया जप में ऐसी लगाये, तज भिक्षा उपवास को पाये।
कायाकृत दोषों को हारी, करें वंदना प्रभु तिहारी ॥२७८॥
ॐ ह्रीं कायकृतचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयम काया स्वर्ण बनाये, तज भिक्षा उपवास को पाये।
एषणा समिति शुद्धि पाई, तभी करम की करी सफाई ॥२७९॥
ॐ ह्रीं कायकारितचूर्णदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया अनुमोदना न करती, समिति धर के ही यह विनती।
दोषों को प्रभु दूर है करना, सर्व कर्म को प्रभु जी हरना॥२८०॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा समिति षष्ठ मूलकर्म दोष निवारक

श्रीछन्द छंद (तर्ज-धीरे धीरे बोल...)

अपने वश में नहीं, उसे भी वश करें।
मायाचारी भाव अशुभ, मन से भरें॥
फिर लेवें आहार, दोष लगाय के।
मूलकर्म यह दोष, प्रभुजी छुड़ावते॥२८१॥
ॐ ह्रीं मनःकृतमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दान भावना नहीं, रहता वो दूर है।
दान को करें तैयार, दोष भरपूर है॥
फिर लेते आहार, समिति दूषण लगे।
मूलकर्म यह दोष, प्रभुजी छुड़ावते॥२८२॥
ॐ ह्रीं मनःकारितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन को वश कर, अनुमोदन भी न करें।
मुक्ति पथ का राही, दोषों को है हरे॥
शुद्ध समिति को पाल, मुनि भगवन बने।
भक्त गाते है गीत, दोष को है हने॥२८३॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन की महिमा है अगाध, वच वश किया।
भिक्षा पाने माया तज, अघ हर लिया॥
वचकृत दोष को दूर करि, मुनिराज जी।
तब ही सिद्धी पाये, बने सरताज जी॥२८४॥
ॐ ह्रीं वचनकृतमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन शक्ति को जान, अशुभ वच छोड़ा है।
बोलें वचन प्रमाण, नाता को जोड़ा है॥
वचकारित जो दोष, उसे भी हरना है।
किरपा होवे नाथ, भव से तरना है॥२८५॥
ॐ ह्रीं वचनकारितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मौन साधना, वचनों की शुद्धि करें।
निज से नाता जोड़, ज्ञान वृद्धि करें॥
वच अनुमोदन दोष, कोई जो लगता है।
प्रभु की भक्ति से दोष, दूर हो भगता है॥२८६॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया देती ज्ञान, अशुभ न करते हैं।
आगम ज्ञान से मुक्ति, पथ पे चलते हैं॥
वपुकृत का यह दोष, दूर करना प्रभु।
भक्ति श्रद्धा अपार, हृदय रहना विभु॥२८७॥
ॐ ह्रीं कायकृतमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की माया तो, माया न करें।
माया रहती दूर, आत्म को ही वरें॥
कायाकारित दोष तजे, आहार लें।
तभी बने भगवान, लीन निज में रहे॥२८८॥
ॐ ह्रीं कायकारितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया जब तक रहे, तो वेतन देते हैं।
एषणा समिति की शुद्धि, भिक्षा को लेते हैं॥
दोष दूर करने को, प्रभु जी आये हैं।
सर्व सुखी भगवान, चरण को ध्याये हैं॥२८९॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमूलदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा समिति के १० अशन दोष

शंकित दोष

पद्धरि छंद

है खाद्य स्वाद्य और लेय पेय, मुनि को श्रावक आहार देय।
वह अधःकर्म से बना हुआ, शंका है औ आहार लिया॥२९०॥
ॐ ह्रीं मनःकृतशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शंका रख के आहार करें, शंकित यह दोष लगा रहे।
मनकृत दोषों के परिहारी, पूजा भक्ति की तैयारी॥२९१॥
ॐ ह्रीं मनःकारितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन शंका है आहार तजे, आगम से आगम मार्ग चले।
निर्दोष समिति पालन करते, वे कर्मों को ही है हरते ॥२९२॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शंका वचनों से कहें यदि, पर मौन धार आहार लहीं।
वचकृत दोषों को दूर करें, मुक्ति पथ की बाधायें हरें ॥२९३॥
ॐ ह्रीं वचनकृतशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों से शुभ-शुभ बोले हैं, वचनों को अंदर तौले हैं।
वचकारित दोष के परिहारी, वे एषणा समिति के धारी ॥२९४॥
ॐ ह्रीं वचनकारितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वच अनुमोदन भी नाहीं करें, धीरज समता उर माँहि धरे।
शुद्धातम के वे ध्यानी है, उनकी वाणी कल्याणी है ॥२९५॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तप से काया की शुद्धि करें, तप से काया में तेज भरे।
कायाकृत दोष को छोड़ दिया, जिनदेव शरण को आज लिया ॥२९६॥
ॐ ह्रीं कायकृतशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा शुद्धि का ध्यान रखें, शंकित इस दोष को शीघ्र तजे।
कायाकारित अघ धोना है, मुक्ति के बीज को बोना है ॥२९७॥
ॐ ह्रीं कायकारितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया वश हो तब धर्म होय, काया वश हो तब कर्म खोय।
काया अनुमोद से दोष लगे, प्रभु भक्ति से ये दूर भगे ॥२९८॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितशंकितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मृषित दोष

पद्धरि छंद

चिकने बर्तन आहार देय, समूर्हन उसमें पूर्व होय।
सहमृषित दोष है कहलाया, दोषों को तजने मैं आया ॥२९९॥
ॐ ह्रीं मनःकृतमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिकनी चम्मच आहार दिया, उस चम्मच से आहार लिया।
मनकारित दोष को दूर करे, प्रभु जी मेरी बाधायें हरें ॥३००॥
ॐ ह्रीं मनःकारितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चिकने हाथों आहार दिया, मुनिवर ने वह आहार लिया।
यह मृषित दोष समिति में लगा, प्रभु दोष दूर का भाव जगा ॥३०१॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों का दोष निवारा है, प्रभु जी बस तेरा सहारा है।
तज दोष आप भगवान बने, पाया है सौख्य जो कर्म हने ॥३०२॥
ॐ ह्रीं वचनकृतमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों की शक्ति जगाई है, दोषों की करी बिदाई है।
वचकारित दोष को छोड़ा है, आतम से नाता जोड़ा है ॥३०३॥
ॐ ह्रीं वचनकारितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयम धर वचनों को बोले, संयम से मुखड़े को खोले।
वच अनुमोदना त्यागी है, मुनिवर आतम बड़भागी है ॥३०४॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

एषणा समिति पालन करते, दोषों के लिये भिक्षा तजते।
कायाकृत दोष हटाया है, प्रभु चरणों शीश झुकाया है ॥३०५॥
ॐ ह्रीं कायकृतमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शुद्धातम आत्म बनाना है, समिति पालन करवाना है।
समिति से कर्म तो भागेगे, मुक्ति पथ निश्चित पायेंगे ॥३०६॥
ॐ ह्रीं कायकारितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया को आज्ञा में रखते, वे आतम स्वाद को हैं चखते।
काया अनुमोद भी नहीं करें, कर्मों के पर्वत शीघ्र हरे ॥३०७॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितमृषितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निक्षिप्त दोष

पद्धरि छंद

पृथ्वी सचित्त भोजन रखते, ऐसी भिक्षा मुनिवर तजते।
है शुद्ध भोज निक्षिप्त दोष, तज करते मुनि मन में संतोष ॥३०८॥
ॐ ह्रीं मनःकृतनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पानी सचित्त भोजन धरते, ऐसी भिक्षा मुनि न लेते।
निक्षिप्त दोष को दूर किया, तब ही तो मुक्ति पाय जिया ॥३०९॥
ॐ ह्रीं मनःकारितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अग्नि सचित है शुद्ध भोज, तज कर पाते मुनि आत्म ओज।
मन अनुमोदन यदि दोष लगा, प्रभु दूर करन का भाव जगा ॥३१०॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हरियाली पत्ते हैं सचित, रखें भोज यदि इसके ऊपर।
निक्षिप्त दोष को दूर करूँ, जिनदेव जगत की व्याधि हरूँ ॥३११॥

ॐ ह्रीं वचनकृतनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यदि बीज अंकुरित होते हैं, उस पर यदि भोजन रखते हैं।
यदि दोष प्रभु ने बतलाया, इसे दूर करन को मैं आया ॥३१२॥

ॐ ह्रीं वचनकारितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वच अनुमोदन तज क्रिया करें, एषणा समिति के दोष हरें।
तज दोष प्रभु मुक्ति पहुँचे, औ दुष्ट करम हमको खींचे ॥३१३॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वैराग्य आत्म में आया है, काया को सुख ना भाया है।
कायाकृत दोष को छोड़ा है, मुक्ति से नाता जोड़ा है ॥३१४॥

ॐ ह्रीं कायकृतनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निज आतम भाव मन शुद्धि भरे, आतम से तप में वृद्धि करें।
है दोष रहित जिनवर स्वामी, मन से पूजूँ अंतर्यामी ॥३१५॥

ॐ ह्रीं कायकारितनिक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया की शक्ति बढ़ाई है, अघ अनुमोदन न भायी है।
ऐसे प्रभु की हम पूजा करें, जो दोष हमारे शीघ्र हरे ॥३१६॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदित निक्षिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पिहित दोष

पद्धरि छंद

भोजन शुद्धि तो पूर्ण करी, पर सचित्त वस्तु से सट के धरी।
यह पिहित दोष है बतलाया, तजने को प्रभु चरणों आया ॥३१७॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भारी वस्तु से ढँक के रखा, इसको भी प्रभु ने दोष कहा।
न करते न करवाते हैं, दोषों से दूर ही रहते हैं ॥३१८॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुमोदना भी ना कीनी है, आतम में दृष्टि दीनी है।
पहुँचे मुक्ति आतम निहार, आतम आतम में कर विहार ॥३१९॥

ॐ ह्रीं मनोनुमोदितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों को संयम से साधा, फिर आत्म धर्म में ना बाधा।
अघ तज के मुक्ति पाई है, हमें तेरी पूजा भायी है ॥३२०॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उत्तम आहार को लेते हैं, उत्तम भावों को धरते हैं।
ज्ञानामृत भोजन पानी है, दोषों की कर दी हानि है ॥३२१॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समिति से संयम आया है, संयम ने कर्म भगाया है।
अनुमोदना वचना करते हैं, वचनों पर संयम धरते हैं ॥३२२॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

इन्द्रिय पर विजय जो पाई है, तब ही तो समिति आई है।
समिति मन को सीमित करती, पापों को अपने वो हरती ॥३२३॥

ॐ ह्रीं कायकृतपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया संयम स्नान करें, मन शुद्धि इससे ज्ञान भरे।
उत्तम व्रत उत्तम भावों से, पालन करते हैं काया से ॥३२४॥

ॐ ह्रीं कायकारितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बिन काया संयम नहि आवे, संयम से तन सोना पावे।
अनुमोदन दोष नहीं करते, दोषों को चरण में हैं हरते ॥३२५॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितपिहितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्यवहार दोष

चाल छंद (ऐ मेरे वतन...)

बेचे बर्तन को झटपट, आहार बनाया अटपट।
व्यवहार दोष है आया, जिनवर ने दोष हटाय ॥३२६॥

ॐ ह्रीं मनःकृतव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वस्त्रों को बेचें जाकर, उससे आहार बनाकर।
मुनिवर को दिया अहारा, मनकारित दोष निवारा ॥३२७॥

ॐ ह्रीं मनःकारितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बर्तन की अदला बदली, दोषों की छाई बदली।
व्यवहार दोष को टारो, भव्यों की ओर निहारो ॥३२८॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्यवहार दोष हो दूरा, निर्दोष आहार हो पूरा।
वचकृत यह दोष हटाये, तब ही भगवान कहाये ॥३२९॥

ॐ ह्रीं वचनकृतव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समता से ले आहारा, तज दोष दूर व्यवहारा।
वचकारित दोष को तजना, निज आतम राम को भजना ॥३३०॥

ॐ ह्रीं वचनकारितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिन चरणा पूज रचाऊँ, क्लेशों को दूर हटाऊँ।
अनुमोदना भी ना कीनी, आतम में दृष्टि दीनी ॥३३१॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समिति एषणा को धरके, उत्तम भिक्षा को वर के।
जिन आतम शुद्ध बनाया, चरणों में अर्घ्य चढ़ाया ॥३३२॥

ॐ ह्रीं कायकृतव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लेते है निज की परीक्षा, तज देते सारी इच्छा।
तब ही समिति उर आती, जिनदेव की बात सुहाती ॥३३३॥

ॐ ह्रीं कायकारितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन से तन को वश कीना, संयम काया पर लीना।
समिति ने शुद्ध बनाया, समिति ने सिद्ध बनाया ॥३३४॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितव्यवहारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

दोहा

आहार दोष को दूर कर लिया है शुद्ध आहार।
आतम शुद्धि से किया, मुक्ति नगरी विहार॥

ॐ ह्रीं एषणा समिति दोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दायक दोष स्वरूप

भुजंगप्रयात छंद (नरेन्द्रं फणीन्द्रं....)

मुनिवर को आहार, जो देता है प्राणी।
तन मन की शुद्धि हो शुद्ध भी वाणी॥

बालक का शृंगार, या दूध पिलावे।
पीवे शराब औ, या वेश्या को जावे ॥१॥

श्मशान जा आये, घर में मरा हो।
तन पर नहीं वस्त्र, मूर्छित हुआ हो॥
मल मूत्र त्याग, वमन करके आया।
व्याधि हो कोई, पतित दीन आया ॥२॥

अत्यन्त वृद्धा, नपुंसक है होई ।
छोटा हो बालक या कुछ खाके आई ॥
तन पर लगा खून, वेश्या या दासी।
पहिने हो लाल वस्त्र, मुख पे उदासी ॥३॥

स्नान उबटन, लगा के जो आई।
आँखों से अंधी, या प्रेत सताई ॥
माह पंच से ज्यादा, गर्भ की धारी।
ऊँची नीची बैठी हो, बिखरे केश नारी ॥४॥

इन सबसे मुनिवर, ना आहार लेते।
समिति है एषणा, ये पालन है करते ॥
इन सबको दान के, अयोग्य बताया।
लेते शुद्ध भोजन, पथ पे चलाया ॥५॥

दायक है दोष, मुनिवर हटावें।
मुनि बनते जिनवर, हम अर्घ्य चढ़ावे ॥
अग्नि जला के, या फूँक के आया।
या डाली लकड़ी, दबा के है आया ॥६॥

अग्नि से लकड़ी, अलग करके आया।
अग्नि से मिट्टी, रगड़ करके आया ॥
अग्नि के कार्य, जो करके है आया।
ना दे वो आहार, अयोग्य बताया ॥७॥

भूमि को लीप, आहार में आई।
झाड़ी दीवाल, करी है सफाई ॥

घर में किसी को या, नहला के आई।
बालक पिये दूध, छोड़ के आई॥८॥
स्त्री पुरुष ऐसे, दोष से आये।
मुनि उनको तज के, आहार को पाये॥
श्रावक दोषों को, तज करके आये।
शुद्धि से आहार, देके हर्षाये॥९॥

ॐ ह्रीं दायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोहा

सूक्ष्म दोष भी तज दिया, तजा असंयम भाव।
चर्या शुद्ध बनाय के, पाते शुद्ध स्वभाव॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

दायक दोष निवारक

चाल छंद

साधारण ना आहार, आहार में करें सुधार।
मनकृत दोषों को नाशा, पाया है पद अविनाशा॥३३५॥

ॐ ह्रीं मनःकृतदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोषी है दोष के दायक, यह तजनें के है लायक।
मनकारित दोष निवारा, करते हैं शुद्ध विहारा॥३३६॥

ॐ ह्रीं मनःकारितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे स्वाद को ना हैं लेते, तन को वेतन हैं देते।
अनुमोदना मन से त्यागी, वे तो है परम वैरागी॥३३७॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयम वचनों पर धरते, मुक्ति के पथ पर चलते।
वचकृत सब दोष नशायक, प्रभु आपहि ध्याने लायक॥३३८॥

ॐ ह्रीं वचनकृतदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्यंजन का अंजन छोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।
उत्तम व्रत करते पालन, बनना है मुक्ति लालन॥३३९॥

ॐ ह्रीं वचनकारितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम का बाग खिलाया, तन से है मोह हटाया।
इसलिये वैराग्य बढ़ाते, प्रभु पावन पथ पर जाते॥३४०॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना तो रस न माँगे, निज आतम में तो जागे।
संयम समिति धर जीते, जिन ज्ञानामृत को पीते॥३४१॥

ॐ ह्रीं कायकृतदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आहार का हार बनाया, प्रभु चरणों उसे चढ़ाया।
उत्तम भावों के द्वारा, बस निज का रूप निहारा॥३४२॥

ॐ ह्रीं कायकारितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जब मौन साधना कीनी, अंतर में दृष्टि दीनी।
बाहर के नियम निभाये, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाये॥३४३॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितदायकदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उन्मिश्रित दोष

चाल छंद

आहार में सचित्त मिलावे, पृथ्वी जल बीज कहावे।
उन्मिश्र दोष कहलाया, तजने को प्रभु जी आया॥३४४॥

ॐ ह्रीं मनःकृतउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सचित्त हरी को मिलावे, उसमें भी दोष को पावे।
मन कारित दोष निवारा, आतम का रूप सँवारा॥३४५॥

ॐ ह्रीं मनःकारितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

त्रस जीव मिले आहारा, वह तो है अशुद्ध अहारा।
मन अनुमोदना ना करते, दोषों से दूर ही रहते॥३४६॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचनों को शुद्ध बनाने, समिति रखते है स्याने।
वचकृत दोषों को तज के, भगवान बने निज भज के॥३४७॥

ॐ ह्रीं वचनकृतउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सब दोष रोष परिहारी, प्रभु पूजा करें तिहारी।
वचकारित दोष विनाशो, निज आतम रूप प्रकाशो॥३४८॥

ॐ ह्रीं वचनकारितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

प्रभु पूजा दोष नशावे, सब क्लेश द्वेष विनशावे।
वच अनुमोदन के त्यागी, मुनिवर हैं परम वैरागी ॥३४९॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

साधन काया को बनाया, आतम को साध्य बनाया।
फिर आत्म साधना कीनी, सम्यक आतम पा लीनी ॥३५०॥

ॐ ह्रीं कायकृतउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया को नाहीं सजाते, काया से आत्म तपाते।
सोने सा शुद्ध बनाया, सच्चा आतम सुख पाया ॥३५१॥

ॐ ह्रीं कायकारितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तजते काया से माया, आतम को सरल बनाया।
समिति एषणा को पाले, टूटे कर्मों के जाले ॥३५२॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितउन्मिश्रितदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अपरिणत दोष

रोला छंद

तिल चावल या चने धोने का है जो पानी।
बहुत देर पहले का गरम हो, ठंडा पानी॥
हर्ड बहेड़ा चूर्ण से है रस वर्ण न बदला।
देख देख कर लेय मुनि, जल गर्म हो सारा॥
रूप गंध रस बदले वह प्रासुक पानी है।
या फिर गर्म किया शुद्ध, कहे जिनवाणी है॥
यदि ऐसा न करें, अपरिणत दोष लगे हैं।
दोष दूर कर लेय मुनि, सबकर्म भगे हैं॥

ॐ ह्रीं परिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पृथक् - पृथक् अर्घ्य

चाल छंद

जल को है जीव बताया, मुनि प्रासुक जल को पाया।
अपरिणत दोष को तजते, समिति एषणा को भजते ॥३५३॥

ॐ ह्रीं मनःकृतअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जल में त्रस जीव है रहते, जल छान के जल को वरते।
मनकारित दोष भगाया, पालन कर आतम पाया ॥३५४॥

ॐ ह्रीं मनःकारितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कम से कम जल को वरतें, शुभ धर्म अहिंसा धरते।
मनअनुमोदन भी न करते, तजदोष प्रभुजी बनते ॥३५५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जल के बिन ना रह सकते, पर कम से कम हैं बरते।
समिति एषणा सिखलाये, इससे भगवान बनाये ॥३५६॥

ॐ ह्रीं वचनकृतअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन आतम में हो परिणत, तजते है दोष अपरिणत।
वचनों में संयम आया, इसने भगवान बनाया ॥३५७॥

ॐ ह्रीं वचनकारित अपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जीवों की करते रक्षा, होती है आत्म सुरक्षा।
समिति सीमित है करती, औ दोषों को है हरती ॥३५८॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

गंगा जल सम मन को बनाया, उस मन से धरम कराया।
समिति को मीत बनाया, जिसने मुक्ति पहुँचाया ॥३५९॥

ॐ ह्रीं कायकृत अपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

निर्मल जल मल परिहारी, निर्मल आतम सुखकारी।
निर्मल हो भाव हमारे, प्रभु शरणा आये तिहारे ॥३६०॥

ॐ ह्रीं कायकारित अपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया के दोष हटाने, आया प्रभु पूजा गाने।
भक्ति से दोष को धोये, सब पाप कर्म को खोयें ॥३६१॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितअपरिणतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लिप्त दोष स्वरूप

दोहा

गीला आटा या कच्चा हो, या हो गीले हाथ।
गेरू खड़िया से कर लिपटे, या हो कच्ची शाक॥
अप्रासुक जल लगा हाथ में, देता है आहार।
लिप्त दोष कहते प्रभो, सूक्ष्म ज्ञान की धार॥

ॐ ह्रीं लिप्त दोष विमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पृथक्-पृथक् अर्घ्य

परम शुद्ध मन से करें, समिति एषणा ज्ञान।
मनकृत दोष निवार के, करते आतम ध्यान॥३६२॥

ॐ ह्रीं मनःकृतलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लिप्त दोष में लिपटें ना, कर देते हैं दूर।
दोष रहित मन प्राप्त कर, सुख पाये भरपूर॥३६३॥

ॐ ह्रीं मनःकारितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मन शुद्धि कर शुद्धि से, लेते हैं आहार।
धर्म अहिंसा पालने, रखते शुद्ध विचार॥३६४॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वचन बोलें मर्यादा में, वच हिंसा न होय।
वचकृत अघ को नाश के, बीज मुक्ति का बोय॥३६५॥

ॐ ह्रीं वचनकृतलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

हितमित वाणी प्रिय लगे, दें मंगल उपदेश।
दोष रहित वच त्याग के, धर्म का दें संदेश॥३६६॥

ॐ ह्रीं वचनकारितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

लिप्त दोष अनुमोदना, नाहीं करें गुरुदेव।
भाव विशुद्धि मय किये, करें आत्म की सेव॥३६७॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन से तप चर्या करें, मोक्ष सिद्धि के काज।
काया दोष नहीं करें, पायें मुक्ति ताज॥३६८॥

ॐ ह्रीं कायकृतलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दोष रहित व्रत पाल के, बने आप भगवान।
तेरी भक्ति कर मिलें, मुझको सम्यग्ज्ञान॥३६९॥

ॐ ह्रीं कायकारितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आत्म साधना के लिये, काया को लिया साध।
काय अनुमोदन न करे, मिट गये सकल विवाद॥३७०॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितलिप्तदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परित्यजन दोष

दोहा

छाछ घी औ दूध जल, का देता आहार।
हाथ से टपकावे यदि, परित्यजन दोष विचार॥
दोष त्याग आहार ले, मुनिवर श्रेष्ठ महान।
चरण कमल को पूजते, करते नित्य प्रणाम॥

ॐ ह्रीं परित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अर्घ्यं...।

पृथक् - पृथक् अर्घ्य

दोहा

शुद्ध आहार से होत हैं, निश्चित शुद्ध विचार।
मन के दोष निवार के, लेते शुद्ध आहार॥३७१॥

ॐ ह्रीं मनःकृतपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समिति एषणा पालते, आतम भाव को लाये।
मन तब ही अघ को तजें, चरणों अर्घ्य चढ़ाये॥३७२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम तो सुन्दर बने, ऐसा किया विचार।
मन अनुमोदना छोड़ दी, फिर लेते आहार॥३७३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परित्यजन तज दोष को, नाशे पाप हजार।
वचकृत दोष को छोड़ते, प्रणमूँ बारंबार॥३७४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय उर धारकर, समिति एषणा पाल।
उत्तम भाव से अघ नशे, टूटे जग जंजाल॥३७५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बीन-बीन कर दोष को, कर देते हैं दूर।
निर्मोही तन के हुये, मिला आत्म का नूर॥३७६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

समकित सावन बरसे जब, मिथ्या मल धुल जाये।
तन शुद्धि की बात क्या, आत्म शुद्धि हो जायें॥३७७॥

ॐ ह्रीं कायकृतपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वैरागी जग से बने, वीतरागता धाम।
झर-झर कर्म तो झर रहें, करे आत्म विश्राम ॥३७८॥
ॐ ह्रीं कायकारितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तन से ममता छोड़ के, समता रस का पान।
दोष दूर कर भाव से, भजते आतम राम ॥३७९॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितपरित्यजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संयोजन दोष

दोहा

ठंडे भोजन में यदि, पानी गरम मिलाय।
गर्म पानी औ ठंडा भोज, दोष संयोजन पाय॥
ऐसा भोजन त्याग कर, लेते है आहार।
भक्ति भाव से हम करें, चरणों में नमस्कार॥
ॐ ह्रीं संयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पृथक् - पृथक् अर्घ्य

आत्म संबोधन खुद करें, स्वयं गुरु बन जाये।
मनकृत दोष को दूर कर, संयोजन दोष हटाय ॥३८०॥
ॐ ह्रीं मनःकृतसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम में संतोष धर, लेते है है आहार।
मन षट्रस न माँगता, करते आत्म विचार ॥३८१॥
ॐ ह्रीं मनःकारितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अमृत ज्ञान का पीवते, आया मन संतोष।
दोषों की अनुमोदना, करें ना आवे रोष ॥३८२॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोजन का सुख त्याग कर लें आतम सुख स्वाद।
वचकृत दोष को नाश के, देते आशीर्वाद ॥३८३॥
ॐ ह्रीं वचनकृतसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ज्ञान में इतना रस मिला, भोजन रस तज देय।
उत्तम मुनि निज ज्ञान से, हमें ज्ञान पथ देय ॥३८४॥
ॐ ह्रीं वचनकारितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अनुरागी निज आत्म के, समिति एषणा धार।
वच अनुमोदन दोष तज, करते आत्म बिहार ॥३८५॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया का सुख त्याग कर, करें साधना रोज।
काया की शक्ति बढ़ी, बढ़ा है आतम ओज ॥३८६॥
ॐ ह्रीं कायकृतसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उत्तम मुनिवर भाव से, संयम लेते धार।
कायाकारित दोष तज, करते कर्म प्रहार ॥३८७॥
ॐ ह्रीं कायकारितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अष्टम पृथ्वी पाने को, लिया दिगम्बर वेश।
मंगल गीता हम पढ़ें, मिले मुक्ति का देश ॥३८८॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितसंयोजनदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अप्रमाण (अतिमात्र) दोष

चौपाई

आधा पेट अन्न से भरते, एक भाग में पानी रखते।
शेष पेट को रखना खाली, सो प्रमाण व्रत का माली॥
इससे निद्रा विजय है होती, ज्ञान सिद्धि भी इससे होती।
यदि मुनिवर ऐसा न करते, अप्रमाण दोषों को वरते॥
ॐ ह्रीं अप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पृथक् - पृथक् अर्घ्य

चौपाई

धर प्रमाण आहार को लेता, अति कठिन इस दोष को जीता।
मनकृत दोष को दूर किया है, संयम पालन नित्य किया है ॥३८९॥
ॐ ह्रीं मनःकृतअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अप्रमाण दोषों को तजते, समिति एषणा पालन करते।
मुक्तिपुरी की है तैयारी, दुष्टकर्म के नाशनहारी ॥३९०॥
ॐ ह्रीं मनःकारितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आलस तजने प्रमाण बनाया, आलस दोष उन्हें ना भाया।
इसीलिये दोषों को तजते, मुक्ति पथ की सीढ़ी चढ़ते ॥३९१॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अतिमात्रा आहार न लेते, असंयम के कारण तजते।
वचकृत दोष को तजने आये, प्रभु चरणों की पूजा को आये॥३९२॥
ॐ ह्रीं वचनकृत अप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
अतिमात्रा से समिति में दोष, करें तपस्या धर संतोष।
भोजन इच्छा दूर करी है, ज्ञान से मन की गगरी भरी है॥३९३॥
ॐ ह्रीं वचनकारितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
वचनों से ना दोष लगाते, शुद्ध वचन कर्मों को काटे।
कर्म काट सच्चा सुख पायें, प्रभुचरणों में अर्घ्य चढ़ायें॥३९४॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
तन को वेतन समझ के देते, तन सुख वांछा को तज देते।
भोजन राग तजा है तुमने, तभी तपस्या करी है मन में॥३९५॥
ॐ ह्रीं कायकृत अप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
मन वश कर काया वंश कीनी, इन्द्रिय सुख में दृष्टि दीनी।
काया कारित दोष मिटाये, तप से निज भगवान को पाये॥३९६॥
ॐ ह्रीं कायकारितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
नव कोटि से धरी विशुद्धि, ज्ञान ध्यान में करी थी वृद्धि।
वपु अनुमोदन नहीं किया है, आतम को परमात्म किया है॥३९७॥
ॐ ह्रीं कायानुमोदितअप्रमाणदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

अंगार दोष

दोहा

समिति ज्ञान रहित हो, भोजन स्वाद को लेय।
श्रेष्ठ मिष्ठ अच्छा बना, हमको फिर से देय॥
मूर्च्छा आहार में रखी, आत्म ज्ञान विसराय।
रूच-रूच कर आहार लें, धूम्र दोष लग जाय॥
पापों का सागर कहा, भोजन रस को लेय।
तजने को आये प्रभो, अंगार दोष है हेय॥
ॐ ह्रीं अंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भुजंग प्रयात (तर्ज-नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

भोजन के रस में, ना स्वाद को लेते।
अच्छा बना है ना ऐसा है कहते॥

मन को करें वश और, दोष निवारा।
पूजूँ चरण उनके, संयम को धारा॥३९८॥
ॐ ह्रीं मनःकृतअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
भोजन में मुनि ने, तजी लालसा है।
आतम रूचि की, बढ़ी ध्यान सा है॥
तजा धूम्र दोष, औ दोष निवारा।
संयम रखे मन में, लेते अहारा॥३९९॥
ॐ ह्रीं मनःकारितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
सारे जगत को, ये जिह्वा भ्रमायें।
जिह्वा के स्वादी को, जग में भटकाये॥
अनुमोदना भी, नहीं आप करते।
मन शुद्धि करके ही, निज में विचरते॥४००॥
ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
व्यंजन के स्वादों ने, अंजन लगाया।
शुद्धि अशुद्धि का, भाव मिटाया॥
वचनों की शुद्धि करें, करें, दोष हरते।
वचनों में व्यंजन, वे नाहीं बनाते॥४०१॥
ॐ ह्रीं वचनकृतदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
जिह्वा को वश करने, करते तपस्या।
जिह्वा है वश जिसकी, मिटती समस्या॥
जिह्वा पे जिनवाणी, माँ को बिठाया।
हुई आत्म शुद्धि, सुखों को है पाया॥४०२॥
ॐ ह्रीं वचनकारितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
चखने और बकने पे, पहरा लगाया।
आतम का संगीत, गहरा समाया॥
आतम कथा से ही, फुर्सत न मिलती।
तभी ज्ञान कलियाँ, हृदय में हैं खिलती॥४०३॥
ॐ ह्रीं वचनानुमोदितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।
हितमित औ प्रिय वच, सदा बोलते हो।
भव्यों को मुक्ति का, पथ खोलते हो॥

उपकार काया का, हम पर सही है।
करी साधना तो, ये रहती सही है॥४०४॥

ॐ ह्रीं कायकृतअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

संसारी काया की, सेवा हैं करते।
प्रभो आप काया से, सेवा कराते॥
काया कहे जो नहीं, आप करते।
तभी दोष तजते, औ पापों को हरते॥४०५॥

ॐ ह्रीं कायकारित अंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया से जितनी, तपस्या हैं करते।
बढ़ी उतनी शक्ति, निजातम संवरते॥
काया इशारा ना, सुख का है करती।
काया जो तप करती, कर्मों को हरती॥४०६॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितअंगारदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

धूम्र दोष

शंभू छंद

भोजन स्वादिष्ट मिले न यदि तो, अधम साधु निन्दा करता।
दाता से कहे कटु वचन, निन्दा करनें में नहिं डरता॥
जिह्वा के स्वाद में लोभी होकर, दोष धूम को लगाता है।
श्रेष्ठ तपस्वी त्याग दोष को, आत्म भावना भाता है॥

ॐ ह्रीं धूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

शेर चाल (तर्ज-दे दी हमें आजादी...)

तन को चलाने के लिये, भोजन सभी करते।
पर जिह्वा स्वाद लेने में, सब लोग है फँसते॥
उत्तम ऋषि मुनि, मुनि, आत्म स्वाद लेते हैं।
इस धूम्र दोष तज के वे, पापों से बचते हैं॥४०७॥

ॐ ह्रीं मनःकृतधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिह्वा है जिसके वश में, वो है सर्व विजेता।
जिह्वा न वश में कर सका, है व्यर्थ का नेता॥
उत्तम मुनि इन्द्रिय के, सुख को छोड़ देते हैं।
मन से न करें भाव, मन को मोड़ लेते हैं॥४०८॥

ॐ ह्रीं मनःकारितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

भोजन के लिये दूसरों की, निन्दा न करते।
दोषों की करें निन्दा, दोष स्वयं के हरते॥
अनुमोदना भी न करें, संयम को धारा है।
बुद्धि की करी शुद्धि, रूप निज निहारा है॥४०५॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रसना के लोलुपी तो, रस के स्वाद में रहें।
चर्चा करें भोजन की भोज भाव में रहें॥
उत्तम मुनि आतम के रस का, स्वाद लेते हैं।
पढ़ते हैं वे जिनवाणी, सच्चा ज्ञान लेते हैं॥४०६॥

ॐ ह्रीं वचनकृतधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

घाटी के नीचे माटी, जिह्वा स्वाद क्षण का है।
आतम का रस स्थायी, जो मिलता प्रतिक्षण है॥
चेतन के लिये, तन को वे तो खूब तपाते।
इन्द्रिय सुखों को त्याग, वे कुन्दन सा बनाते॥४०७॥

ॐ ह्रीं वचनकारितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आतम में सुख का स्वाद उन्हें इतना है आया।
भोजन के सुख को त्याग, बस आतम को है ध्याया॥
स्वादिष्ट व्यंजनों की प्रशंसा, वे नहीं करते ।
करते ना अनुमोदना, वे दोष को हरते ॥४०८॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

काया को इतना साधा, काया दोष भगाये।
उत्तम मुनि तो त्याग धर्म, पालने आये॥
वे धूम्र दोष दूर कर, आहार लेते हैं।
श्रावक करेंगे वंदना, आशीष देते हैं॥४०९॥

ॐ ह्रीं कायकृतधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

साधन से रहें दूर, तन से साधना करें।
वे श्रद्धा भक्ति से, ही निज आराधना करें॥
ऐसे मुनि प्रभु बने, हम पूजने आये।
संकट के कलेश दूर हो, हम प्रार्थना गाये॥४१०॥

ॐ ह्रीं कायकारितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वे आत्मा की सेवा तो, काया से कराये।
वे तन की बात मानते ना, आत्म को ध्याये॥
सम्यक्त्व धार समिति पाल, व्रत को निभाते।
पाना हमको मोक्ष प्रभो, तुमको हैं ध्याते॥४११॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितधूम्रदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ्य

शंभू छंद

इस तरह एषणा समिति के, दोषों को हरने आये हैं।
गलती होती अपराध हुये, हम क्षमा मांगने आये हैं॥
हे नाथ मुझे शक्ति दे दो, निर्दोष व्रतों का पालन हो।
निर्दोष आत्मा को करने, चारित शुद्धि का लालन हो॥
छ्यालीस दोष रहित भोज, आहार में निशदिन पाऊँ।
भक्ति श्रद्धा आस्था के साथ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाऊँ॥

ॐ ह्रीं एषणासमितिमध्यचारशतक चतुर्दशदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र :

ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः।

(१०८ बार)

जयमाला

दोहा

छ्यालीस दोषों से रहित, लेते है आहार।
रत्नत्रय धारी गुरु, नमन है बारंबार॥
चारित्र शुद्धि के लिये, तप करते अति धीर।
जयमाला वर्णन करें, चढ़ा भक्ति का नीर॥

तर्ज चाल (दे दी हमें आजादी...)

हे धीर वीर ज्ञानी गुरु, नमस्कार है।
चारित्र की शुद्धि करी जो, नमस्कार है॥

है परम महाव्रत के धारी, नमस्कार है।
निर्दोष लें आहार तुम्हें, नमस्कार है॥१॥

तन का वेतन मान के, आहार लेते हैं।
वे जिह्वा स्वाद नाहीं लें, वे शुद्ध लेते हैं॥
लेते हैं एक बार, श्रावक के घर जाकर।
दोषों से रहित मिले, तो लें शांति से पाकर॥२॥

आहार की वस्तु की, मर्यादा होती है।
श्रावक रखता ध्यान, शुद्ध ज्ञान मोती है॥
छ्यालीस दोषों में से कुछ, श्रावक के हैं कहें।
श्रावक करें दोषों को दूर, भाव शुभ रहे ॥३॥

बाकी में मुनिराज, अंतराय करते हैं।
या लौटते चौके से, दोष दूर करते हैं॥
जैसा खाओं अन्न वैसा, मन भी होवेगा।
इससे वे लेते शुद्ध, ध्यान शुद्ध होवेगा॥४॥

लेते वे परीक्षा स्वयं की, दोष दूर हों।
संकल्प है औ धैर्य है, बस कर्म दूर हो॥
आहार लेते हैं यदि, तो दोष टालते।
दोषों को दूर करने, अंतराय पालते॥५॥

उपवास साधना भी साथ चलती रहती है।
पीते हैं अमृत ज्ञान, मन में तृप्ति रहती है॥
स्वाध्याय करके आत्म ज्ञान, खूब पाया है।
बस ज्ञान ने तप मार्ग में, आगे बढ़ाया है॥६॥

नव कोटि से समिति, एषणा को पालते।
चुन - चुन के दुष्ट कर्म को, बाहर निकालते॥
तप साधना से आत्म बाग को, खिलाया है।
तन सूख गया किन्तु मोह, नाही आया है॥७॥

पाया है सच्चा ज्ञान, साधना को बढ़ायें।
आतम की साधना को करके, मुक्ति को पाये॥

हे नाथ मुझे शक्ति दो, मैं साधना करूँ।
तन से तजूँ मैं मोह, औ आराधना करूँ॥८॥

बिन त्याग तपस्या के कर्म, नाही भागते।
इससे ही मिले सच्चा सुख, ये भाव भावते॥
दोषों से रहित आत्मा, मुक्ति को पाती है।
जो साधना करें तो, मुक्ति बुलाती है॥९॥

दोहा

एषणा समिति पालके, बने आप भगवान।
'स्वस्ति' प्रभु गुण गावती, बारंबार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं एषणा समितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला अर्घ्यं...।

दोहा

परम शांति मन को मिले, मिले मुक्ति की राह।
भक्तों की विनती सुनों, चरणन शीश झुकाये॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आदान निक्षेपण समिति पूजा

शंभू छंद (भला किसी का...)

पिच्छी कमंडलु शास्त्र को, उपकरण संयम का कहा।
संयम धरम का मूल है, संयम बिना ना कुछ रहा॥
निज नेत्र से स्थान लख, रखते उठाते वस्तु को।
आदान निक्षेपण समिति, कहते प्रभुजी भक्त को॥

दोहा

बादर सूक्ष्म की रक्षा को, मन वच काय से पाल।
आतम रक्षा के लिये, तोड़े जग जंजाल॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्राननम्।
ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिन! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

तर्ज-चौबीसी व पूजा (जल फल...)

मैं जन्म जरा मृतु नाश करने को आया।
आतम सुख हो अविनाश, भाव ये ले आया॥
जीवों की रक्षा हेत, समिति पाले हैं।
आदान निक्षेपण नाम, तोड़ें ताले हैं॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

कर्मों की धूप सताय, आतम तपता है।
आतम शीतल हो जाये, नाम को जपता है॥
सीमित समिति कर देय, व्यर्थ न कार्य करें।
हर कार्य देख के होय, इससे कर्म हरें॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

क्षण भंगुर सुख संसार, पीछे हम भागे।
अक्षय सुख पाने हेतु, अब आतम जागे॥
है धर्म अहिंसा मूल, पालन करते हैं।
समिति न कराये भूल, कर्म को हरते हैं॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय श्री जिनाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

ये भोग रोग दुख देय, फिर भी ना छोड़े।
प्रभु तुम्हें देख हुआ ज्ञान, मन को अब मोड़ें॥
तुम दया के हो भंडार, रक्षा करते हो।
मैं भी दुखिया हूँ नाथ, दूर क्यों करते हो॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय कामबाणाविनाशनाय पुष्पं...।**

सीमित भोजन यदि होय, आतम स्वस्थ रहे।
संग त्याग तपस्या होय, मुक्ति पास रहे॥
जीवों की रक्षा का भाव, मन में रहता है।
करुणा सागर हैं नाथ, झरना बहता है॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।**

जो मोह दिखाये नाथ, वही तो दिखता है।
सच्चाई दिखे न नाथ, कर्म ही बिकता है॥
दीपक जले सम्यक्ज्ञान, सत्पथ मिल जाये।
शुभ धर्म अहिंसा पाल, हिंसा गल जायें ॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।**

कर्मों की धार बहे, उसमें बहता हूँ।
संकट परेशानी नाथ, हरपल सहता हूँ ॥
कर्मों की धूप बना, तपाग्नि में डालूँ।
कर्मों का नाश करूँ, मुक्ति को पालूँ॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अष्टकर्मविनाशनाय धूपं...।**

फल पाने को तैयार, सुख की चाहत है।
मुक्ति फल मिले जो नाथ, आतम राहत है॥
समिति संयम को देय, आतम सुख पाये।
औ जीवजंतु बच जायें, चरणों फल लाये॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।**

तन मन वश जिससे होय, वह तो समिति है।
वाणी भी सुंदर होय, भाषा समिति है॥
जीवों की रक्षा होय, समिति सिखलाती।
चरणों की पूजा नाथ, मन को है भाती॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिप्रतिपालकाय **श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।**

आदान निक्षेपण समिति अर्घ्यावली

चाल छंद (तर्ज-ऐ मेरे वतन के...)

आदान निक्षेपण समिति है, देखभाल की प्रमिति है।
मन भाव शुद्ध कर पाले, टूटे कर्मों के जाले॥१॥

ॐ ह्रीं मनःकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आलस तज मार्जन करते, पिच्छी से रक्षा करते।
मनकारित अघ को तजते, तब ही तो भगवन बनते॥२॥

ॐ ह्रीं मनःकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जीवों को नाहिं विराधे, हर कार्य में रक्षा साधे।
मन अनुमोदन नाही कीना, चरणों में अर्घ्य है दीना ॥३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रखे पिच्छी और कमंडल, जो है जग का भूमंडल।
वे देखभाल के बैठे, यह शिक्षा प्रभु जी देते॥४॥

ॐ ह्रीं वचनकृत आदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जब शास्त्र भी रखें उठाते, मार्जन करके ही पढ़ते।
वचकारित दोष को धोया, प्रभु भक्ति का भाव सँजोया॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

ना एकदम वस्तु उठाते, नाहीं एकदम से रखते।
पिच्छी से जीव हटाये, तब आसन को बिछाये॥६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

दिन में हो कहीं अँधेरा, वहाँ करते ना पग फेरा।
काया पर संयम आया, जिसने पापों से बचाया॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृतआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सोते में तन न हिलावें, वे सब जीवों को बचायें।
काया से धर्म कराया, प्रभु चरणों अर्घ्य चढ़ाया॥८॥

ॐ ह्रीं कायकारितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

यह धर्म अहिंसा सुन्दर, पहुँचावे आतम अन्दर।
यह कार्य करावे पिच्छी, जो की है सबसे अच्छी॥९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितआदाननिक्षेपणसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

व्युत्सर्ग समिति प्रतिपालक मुनि पूजा

शंभू छन्द

आराधना आतम की करने, काया पर संयम धरते हैं।
निज पर की रक्षा के हेतु, व्युत्सर्ग समिति को वरते हैं॥
भावों के बल पर श्रेष्ठ बने, औ श्रेष्ठ साधना करते हैं।
ऋषिवर मुनिवर के चरणों में, हम नमन भाव से करते हैं॥

दोहा

समिति पाल भगवन बने, उनकी पूजा गाये।
हृदय में मेरे आ बसों, गुरु को शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालक श्री जिन ! अत्र अवतर संवौषट् इत्याह्वाननं।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालक श्री जिन! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालक श्री जिन ! अत्र मम सन्निहतो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।
परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभू छंद

कर्मों से मैला है आतम, तप से शुद्धि हो जाती है।
जब करें तपस्या हटे समस्या, सुख शांति आ जाती है॥
कर्मों के मैल को धोने प्रभु, सम्यग्दर्शन जल होता है।
हो जन्म जरा मृत्यु नाश तभी, मुक्ति के बीज को बोता है॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

ए. सी. कूलर में रहके भी, मन बार-बार गरमाता है।
तप त्याग में जो ठंडक पाये, वह क्रोध से छुट्टी पाता है॥
शुभ धर्म की शीतल छाया में, कर्मों का ताप मिटाना है।
चंदन सी शीतलता पाऊँ, चरणों में अर्घ्य चढ़ाना है॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय संसारतापविनाशनाय चन्दनं...।

क्षणभंगुर जीवन की कलियाँ, किस पल मुरझाये पता नहीं।
संयम से अक्षय पद मिलता, है वीर प्रभु की बात सही॥
अक्षय नगरी के वासी प्रभो, मुझे अक्षय पद का भान हुआ।
ले आया अक्षत की थाली, चरणों को तेरे आन छुआ॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं...।

पाँचों इन्द्रिय के सुख भोगूँ, आनंद बहुत ही आता है।
पापों का फल जब दुख पाऊँ, बस ध्यान तेरा ही आता है॥
हे निर्विकारी, चैतन्य प्रभो, जग सुख तजने की शक्ति दो।
वैराग्य जगत से आये मुझे, मुक्ति जाने की युक्ति दो॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय कामबाणविनाशनाय पुष्पं...।

हम काल अनादि से खाते, पर पेट न अब तक भर पाया।
प्रभु तुमने तन को तपा - तपा, इस क्षुधा रोग पर जय पाया॥
चारित शुद्धि के व्रत करके, आनंद बहुत ही आया है।
शक्ति दो प्रभुवर और करूँ, चरणों नैवेद्य चढ़ाया है॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

खुली आँख न सच्चाई देखे, अरे मोह अँधेरा छाया है।
तुम बंद आँख से सच देखो, क्योंकि यह मोह हटाया है॥
हे ज्ञान दीपधारी भगवन, मम हृदय में उजियारा कर दो।
सच्ची प्रीति हुई आतम से, बस ज्ञान का रंग मुझमें भर दो॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

जिसने आतम को आराधा, न आई उसे कोई बाधा।
आतम से आतम ध्यान किया, आतम ने आतम को साधा॥
आतम की शक्ति जाग्रत कर, कर्मों को ढीला करना है।
जिनदेव प्रभु उपकारी हैं, चरणों में धूप चढ़ाना है॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

तप में तन को जो होय कष्ट, चिर सुखी यही तब करता है।
इन्द्रिय सुख क्षण को सुख देते, पर अनंत दुखों को भरता है।
संयम का फल है औषध सम, आतम निरोग हो जाता है।
फल से प्रभु तुमको पूज रहे, यह फल न निष्फल होता है॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम समझ सम्हलकर चलते हैं, फिर भी जग ठोकर देता है।
पर समझ हमारी छोटी है, हमें सच्चा ज्ञान न होता है॥
पुरुषार्थ दीप सम जगा प्रभू, अब मुक्ति पथ पर चलना है।
अर्घ्यों के संग पूजा करते, तेरी छाया में पलना है॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिधारकाय परमनिर्ग्रन्थाय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

व्युत्सर्ग समिति अर्घ्यावली

भुजंगप्रयात (नरेन्द्रं फणीन्द्रं...)

निर्जन्तु भूमि में, मल को विसारे।
समिति प्रतिष्ठापन, दोष निवारे ॥
दोषों के हारी की, पूजा रचाऊँ।
पापों को नाशूँ औ, व्रत को निभाऊँ॥१॥

ॐ ह्रीं मनःकृतव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

कफ है गले का, औ नाक का मैल।
यतन पूर्वक डालें, भूमि या हो शैल॥
दया इतनी आई, है मिट्टी से ढाँका।
कहीं कोई जन्तु, ना आके है झाँका ॥२॥

ॐ ह्रीं मनः कारितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

उच्चार खेल औ सिंहाण डाला।
लखें भूमि पहले व्युत्सर्ग माला॥
मन में भरे भाव, जीवों की रक्षा।
जिनवर की भक्ति ही, करती सुरक्षा॥३॥

ॐ ह्रीं मनोऽनुमोदितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जल पृथ्वी अग्नि या जीव है वायु।
लगा दोष समिति में, छीनी हो आयु॥
प्रभो दोष शुद्धि के, भावों से आया।
हरो दोष मेरे, ये अर्घ्य चढ़ाया॥४॥

ॐ ह्रीं वचनकृतव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

परिताप से घात जीवों का किया हो।
उत्तापन आदि जो कष्ट दिया हो॥
मिथ्या हों दोष, करूँ, जीव रक्षा।
चरण तेरे, बैठूँ है भक्ति की कक्षा॥५॥

ॐ ह्रीं वचनकारितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

वृक्ष औ पुष्प फल हरी भूमि तजते।
व्युत्सर्ग शुद्धि से, आतम को भजते॥

समिति का पालन, वे वचनों से करते।
निर्दोषी भगवन की पूजा हम करते॥६॥

ॐ ह्रीं वचनानुमोदितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रहे सावधानी, करें जब भी चर्या।
समिति ने काया, सुधारी है क्रिया॥
करके तपस्या, करम नाश दीना।
तेरी भक्ति में पाया, सौख्य नवीना॥७॥

ॐ ह्रीं कायकृतव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

करे भोग काया तो, दुर्गति में जावें।
समिति पाल आतम, सुगति ही सुहावें॥
चलें मुक्ति पंथ, हुआ आत्मज्ञान।
करी प्रभु की पूजा, है आतम सम्मान॥८॥

ॐ ह्रीं कायकारितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सुख सच्चा पाने, हैं राह दिखाते।
पालन करें जो भी, भगवन बनाते॥
सफल दोष तज के, है कर्मों को नाशा।
करूँ भक्ति तेरी, है मुक्ति की आशा॥९॥

ॐ ह्रीं कायानुमोदितव्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय श्री जिनाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

(शंभू छंद)

यह चेतन सम्राट जगत में, अपनी शक्ति भूल रहा।
जागो चेतन जागो आतम, क्यों व्यर्थ जगत में झूल रहा॥
चारित्र नायक, चारित दायक, की पूजा हम आ करते हैं।
चारित्र शुद्धि विधान को करके, अर्घ्य समर्पित करते है ॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिदोषविमुक्ताय परमनिर्ग्रंथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं...।

दोहा

आत्म आराधना के लिये, समिति रहे हैं पाल।
पूर्ण अर्घ्य चरणों धरूँ, हमको करो निहाल॥

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठापनसमितिप्रतिपालकाय नीहारदोषविमुक्ताय परमनिर्ग्रंथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं अर्हं असिआउसा चारित्रशुद्धिव्रतेभ्यो नमः। (१०८ बार)

जयमाला

दोहा

सम्यक् चारित्र रत्न को पाने करो प्रयत्न।
जयमाला वर्णन करूँ, आतम हित का यत्न॥१॥

पद्धरि छंद

जय वीतरागी गुरुवर महान, चरणों में करते नित प्रणाम।
आतम शक्ति चारित्र धार, हर पल करते आतम सुधार॥२॥

सम्यग्दर्शन सम्यक् विधान है शुद्ध ज्ञान चारित्र वान।
मन से भावों से करते हैं, वचनों के दोष भी हरते हैं॥३॥

हर पल-पल रहते सावधान, उनको है बस चारित्र प्रधान।
जाग्रत होकर हर कार्य करें, आलस ना करते कर्म झरें॥४॥

एकान्त में जा मल करें त्याग, निर्जन्तु भूमि हो या रहे बाग।
कफथूक को थूके ध्यान सहित, जीवों का करते नाही अहित॥५॥

वे समिति प्रतिष्ठापन धारी, मुक्ति की करते तैयारी।
संयमव्रत दृढ़ता से पालें, फिर मोह कर्म टूटे जालें॥६॥

दोहा

भवन छोड़ वन में गये, करी साधना घोर।
व्युत्सर्ग समिति धारी को, मिले मुक्ति का छोर॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिप्रतिपालकाय परमनिर्ग्रंथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

करें साधना साध्य मिले, यही चारित्र का सार।
'स्वस्ति' शीश झुकावती, हो जावें भव पार॥

समुच्चय जयमाला

दोहा

चारित शुद्धि विधान कर, हुआ है ज्ञान अपार।
चारित शुद्ध व्रत को कर, जीवन का मिला सार॥

शेर चाल

चारित्र की है पूर्णता, जिनदेव को नमन।
शुद्धि करी चरित्र की, भगवान को नमन॥
चारित्र की शुद्धि से, कर्म शीघ्र भागते।
चारित्र की शुद्धि से, धर्म शीघ्र ही आवते॥१॥

चारित्र बिना जीवन की, शोभा नहीं है।
चारित्र बिना मुक्ति ने भी, मोहा नहीं है॥
चारित्र रत्न पालते वे, रत्न से चमके।
चारित्रवान धरती पे, सूरज से हैं दमके॥२॥

मुनिराज जो चर्या करें, चारित्र कहाये।
तप साधना चारित्र को, वे मित्र कहाये॥
निर्दोष रूप से व्रतों को, पालते हैं वे।
चर्या की शुद्धि पाई, कर्म टालते हैं वे॥३॥

वे धर, अहिंसा सत्याचौर्य ब्रह्मचर्य को।
वे पूर्ण संग त्यागी बने, व्रत में वर्य वो॥
मन वचन काय गुप्त करके, कर्मों को रोका।
सीमित हुये समिति से, ना कर्मों को मौका॥४॥

वे सूक्ष्मरूप से व्रतों को, धार लिया है।
आतम विशुद्धि हेतु, आत्म ध्यान किया है॥
वे क्रोध, मान, माया, लोभ दूर किये हैं।
कर्मों को रोकने को ध्यान, खड्ग लिये हैं॥५॥

श्रद्धा के साथ ज्ञान और चारित्र चाहिये।
तीनों की शुद्धि आये, तो फिर मोक्ष जाइये॥

करके अनंत सुख को प्राप्त, सुख में लीन हो।
ना बाधा है न रोग है, निज में प्रवीन हो ॥६॥

इस व्रत से बने तीर्थंकर, जो भाव से करे।
तिरते स्वयं तिराके, सबके कर्म को हरे ॥
बारह सौ चौंतीस व्रत इसके, होती तपस्या।
निर्दोष व्रत को पालने से, मिटती समस्या ॥७॥

भावों से त्याग व्रत की, अनुमोदना करो।
और भावना को भाके, कुछ तो कर्म को हरो ॥
व्रत करने से आतम की शक्ति, बढ़ती जाती है।
आतम को पाने सुख की सीढ़ी, चढ़ती जाती है ॥८॥

दोहा

चारित्र शुद्धि करके ही, बने आप भगवान।
भक्ति पूजा तेरी करें, करते तुम्हें प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित षट् चत्वारिंशत गुण सहित अर्हत् परमेष्ठिन् अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित्र शुद्धि बाग में, की मेहनत घनघोर।
व्रत समिति के फूल खिला, महकें चारों ओर ॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्

धर्म अहिंसा मुख्य है, बाकी है सब साथ।
'स्वस्ति' नमन करे सदा, जोड़ के दोनों हाथ ॥
लिखने में गलती हुई, अभी है हम अज्ञान।
सुधी सुधार करके पढ़ो, मिलेगा शुद्धिज्ञान ॥

चारित्र शुद्धि महिमा

श्री चारित्र शुद्धि विधान, बड़ा गुणवान, करो सब भाई,
मुक्ति जाने में सहाई ॥

राजा श्रेणिक ने प्रश्न किया, चारित शुद्धि व्रत फल क्या हुआ।
किसने कीना कुछ कथा, हमें भी सुनाई, मुक्ति जाने में सहाई ॥१॥

उत्तर दे वीरा बतलाये, नृप हेमवर्ण वन को जाये।
द्वय ऋद्धिधारी मुनिवर, दिये दिखाई मुक्ति जाने में सहाई ॥२॥

नृप नमन करे चरणों बैठे, उत्तम मुनि के श्रीमुख को लखे।
तीर्थंकर पद कैसे मिले हमें बताई, मुक्ति जाने में सहाई ॥३॥

चारित्र शुद्धि व्रत बतलाये, बारह सौ चौंतीस है गाये।
उत्तम भावों से जो करता मन लाई, मुक्ति जाने में सहाई ॥४॥

श्रद्धा से राजा व्रत करता, तीर्थंकर प्रकृति को धरता।
फिर कर समाधि सुर देव की पदवी पाई, मुक्ति जाने में सहाई ॥५॥

आयु पूरी कर विदेह क्षेत्र, लिया जन्म खुले थे ज्ञान नेत्र।
तीर्थंकर पद धार ज्ञान की ज्योति जगाई, मुक्ति जाने में सहाई ॥६॥

श्री चन्द्रभान शुभ नाम मिला, आतम में आनंद फूल खिला।
श्रद्धा से व्रत करो हो उद्धार यों भाई, मुक्ति जाने में सहाई ॥७॥

चारित शुद्धि व्रत की महिमा, ऋषि मुनि गाते इसकी महिमा।
व्रत धरने से हो, मुक्ति वधू सगाई, मुक्ति जाने में सहाई ॥८॥

'स्वस्ति' ने विधान रचाया है, भक्ति में आनंद आया है।
भक्ती की शक्ति अद्‌भुत दी है दिखाई, मुक्ति जाने में सहाई ॥९॥

चारित्र शुद्धि चालीसा

अरहंत सिद्धाचार्य की, भक्ति शक्ति वान।
उपाध्याय और साधु को भक्ति से प्रणाम ॥
चारित्र शुद्धि व्रत करे, बन जाते भगवान।
अनंत सुख के हो धनी, बारंबार प्रणाम ॥

१. चौबीसों तीर्थंकर जय-जय, भक्त जनों को कर दो निर्भय।
२. महान व्रत है चारित्र शुद्धि, करता आतम की है शुद्धि ।
३. जिनने भी इस व्रत को कीना, तीर्थंकर पदवी को लीना।
४. सब सुख का भंडार दिलाता, मुक्ति भवन में वास कराता।
५. जितनी-जितनी बढ़े तपस्या, दूर होती है कर्म समस्या।
६. तप के बिन ये कर्म न भागे, तप बिन ये आतम जागे।
७. तप से करें खुद की ही परीक्षा, नष्ट होती है जग की इच्छा।
८. मन वच काया शुद्ध बनाना, व्रत संयम आतम से कराना।
९. गुणजय वरजय ऋद्धिधारी, मुनिवर थे आकाश विहारी।
१०. हेमवर्ण राजा करे भक्ति, चारित्र शुद्धि व्रत की युक्ति।
११. करके तीर्थंकर पद पाया, आगम में प्रभु ने बतलाया।
१२. कुल उपवास है बारह सौ चौबीस, कर्म नाश की है ये कोशिश।
१३. पाँच महाव्रत पाँच समिति, तीन गुप्ति धर आई प्रमिति।
१४. धर्म अहिंसा दया के धारी, सूक्ष्म जीव पर भी बलिहारी।
१५. सत्य धर्म सूरज बतलाया, नहीं असत्य जरा भी भाया।
१६. धर्म अचौर्य की महिमा न्यारी, तन तज हो गये आत्म विहारी।
१७. ब्रह्मचर्य से ब्रह्म को पाया, ब्रह्म ने निज ब्रह्मा प्रगटाया।
१८. जब निज आतम को पहचाना, पहन लिया अपरिग्रह बाना।
१९. चार हाथ भू निरख के चलते, जीव आपकी शरण में पलते।
२०. हित मित प्रिय वाणी बोले, मुक्ति का रास्ता वे खोले।

२२. शुद्ध आहार ले संयम हेत, इससे मिलता मुक्ति खेत।
२३. पिच्छी से मार्जन जब करते, तब वस्तु उठाते धरते।
२४. प्रासुक चर्या प्रतिष्ठापन शुद्धि, नहि आलस, करे धर्म में वृद्धि।
२५. पाप कषाय न जरा मन आवे, समता-समता समता भावे।
२६. आत्म मनन आतम का चिंतन, मन गुप्तिधारी रहे वन-वन।
२७. ईर्ष्या क्रोध लोभ मद नाही, रहते हैं आतम के मांहि।
२८. आगम वचन ही मुख से निकले, वचन गुप्ति का पालन करले।
२९. पुण्य योग से नरतन पाया, मिल गई जैनधर्म की छाया।
३०. काया है मुक्ति का साधन, इससे करते आत्म आराधन।
३१. सब विकार छूटे काया के, काय गुप्ति छूटे माया से।
३२. विशद व्याख्या शास्त्रों में गाई, शास्त्र पढ़ो होगा सुखदाई।
३३. सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र करे महान।
३४. साक्षात् मुक्ति का कारण, दुष्ट कर्म का करे निवारण।
३५. जिन जिनने है मुक्ति पाई, चारित्र शुद्धि व्रत है सहाई।
३६. पूर्ण भाव से इसको करना, मुक्तिपुर की सीढ़ी चढ़ना।
३७. हृदय में करुणा कमल खिलेगा, धर्म अहिंसा तभी मिलेगा।
३८. करुणा प्रथम स्वयं पर करना, क्रोध मान माया से बचना।
३९. चारित्रधारी गुरु की सेवा, फल इसका है मेवा मेवा।
४०. चारित्रधारी गुरु का वंदन, 'स्वस्ति' करे उनका अभिनंदन।

दोहा

श्रद्धा से व्रत को धरो, ले संकल्प महान।
इन्द्रिय पर अंकुश लगा, बनना है भगवान ॥
व्रत अनुभूति मूर्ति गुरु, दे दो आशीर्वाद।
कोटि - कोटि चरणों नमन, मिले ज्ञान प्रसाद ॥

चारित्र शुद्धि आरती

ॐ जय अरिहंत प्रभु, स्वामी जय अरिहंत प्रभो।
छ्यालीस गुण के धारी-२, हो परमात्म विभो।
ॐ जय अरिहंत प्रभु,

समवसरण में बैठे, केवलज्ञानी हो-२,
ज्ञान में सब कुछ झलके, पर निज ध्यानी हो॥
ॐ जय अरिहंत प्रभु,

चारित्र शुद्धि व्रत कर, आत्म शुद्धि कीनी,
चारित्र साबुन लेकर, आतम धो दीनी॥
ॐ जय अरिहंत प्रभु,

चारित की शक्ति से, आते कर्म रुके -२,
कर्म पुराने भागे, जग चरणों में झुके॥
ॐ जय अरिहंत प्रभु,

चारित भक्ति गाओ चारित धारण कर-२,
'स्वस्ति' आरती करके, चलो मुक्ति दर पर॥
ॐ जय अरिहंत प्रभु,

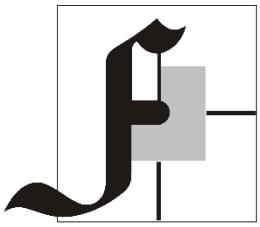

Front desk

Jainism Forum

https://frontdesk.co.in/jainism/jain-dharm-aur-darshan/

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from an online repository and is presented here as part of the **Front Desk Jainism Forum (FDJF)** collection. It is shared under commonly accepted Fair Use guidelines, intended for individual educational or research purposes.

To the best of our knowledge, this book resides in the public domain, and we believe the original repository intended for its public dissemination. We wholeheartedly applaud and support their efforts, and our intent in providing this version is solely to make the book accessible to a broader audience. The **FDJF** group values the importance of cataloging in making valuable works discoverable and strives to support these efforts through our initiatives.

In some cases, original sources may no longer be accessible, are difficult to locate, or are provided in Indian languages instead of English, limiting their reach. The **FDJF** aims to address these challenges by expanding access while supporting repositories and digitization projects. Our intent is to complement—not undermine—these efforts.

For more information about our mission and fair use guidelines, please visit our website. While we make these works available with the understanding that they are in the public domain within our jurisdiction, we advise users to confirm their legal rights to access and use this material in their own jurisdiction before downloading.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection and have concerns about its presentation or availability, please email us. We are committed to addressing any objections promptly and respectfully. This notice serves both to inform readers and to clarify our intent and responsibility regarding these works.

The FDJF team

https://frontdesk.co.in/jainism/jain-dharm-aur-darshan/

फेयर यूज़ घोषणा

यह पुस्तक एक ऑनलाइन भंडार (repository) से प्राप्त की गई है और यहाँ *फ्रंट डेस्क जैनिज़्म फोरम (FDJF)* संग्रह के अंतर्गत प्रस्तुत की जा रही है। इसे सामान्यतः स्वीकृत *फेयर यूज़* दिशानिर्देशों के अनुसार साझा किया गया है, जिसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत शैक्षिक एवं शोध उपयोग है।

हमारी जानकारी के अनुसार, यह पुस्तक सार्वजनिक डोमेन में है और हमें विश्वास है कि मूल भंडार का उद्देश्य इसे सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराना था। हम उनके प्रयासों की सराहना और समर्थन करते हैं। इस संस्करण को उपलब्ध कराने का हमारा एकमात्र उद्देश्य पुस्तक को व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाना है। FDJF समूह मूल्यवान कृतियों को खोजने योग्य बनाने में सूचीकरण (cataloging) के महत्व को समझता है और अपनी पहलों के माध्यम से इन प्रयासों का समर्थन करता है।

कुछ मामलों में, मूल स्रोत अब उपलब्ध नहीं होते, उन्हें ढूँढना कठिन होता है, या वे भारतीय भाषाओं में होते हैं, जिसके कारण उनकी पहुँच सीमित रह जाती है। FDJF का उद्देश्य इन चुनौतियों का समाधान करते हुए पहुँच का विस्तार करना है, साथ ही भंडारों और डिजिटलीकरण परियोजनाओं का समर्थन करना है। हमारा उद्देश्य इन प्रयासों को कमजोर करना नहीं, बल्कि उनका पूरक बनना है।

हमारे उद्देश्य और *फेयर यूज़* दिशानिर्देशों के बारे में अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट देखें। यद्यपि हम इन कृतियों को इस समझ के साथ उपलब्ध कराते हैं कि वे हमारे अधिकार क्षेत्र में सार्वजनिक डोमेन में हैं, फिर भी हम उपयोगकर्ताओं को सलाह देते हैं कि डाउनलोड करने से पहले अपने अधिकार क्षेत्र में इस सामग्री तक पहुँच और उपयोग से संबंधित अपने कानूनी अधिकारों की स्वयं पुष्टि करें।

यदि आप इस या हमारे संग्रह की किसी अन्य पुस्तक के बौद्धिक संपदा स्वामी हैं और इसकी प्रस्तुति या उपलब्धता को लेकर कोई आपत्ति या चिंता है, तो कृपया हमें ईमेल करें। हम सभी आपत्तियों का त्वरित और सम्मानपूर्वक समाधान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह सूचना पाठकों को अवगत कराने के साथ-साथ इन कृतियों के संबंध में हमारे उद्देश्य और जिम्मेदारी को स्पष्ट करने के लिए दी गई है।

FDJF टीम